नीलाम्बरा
NEELAMBARA
2022-2023

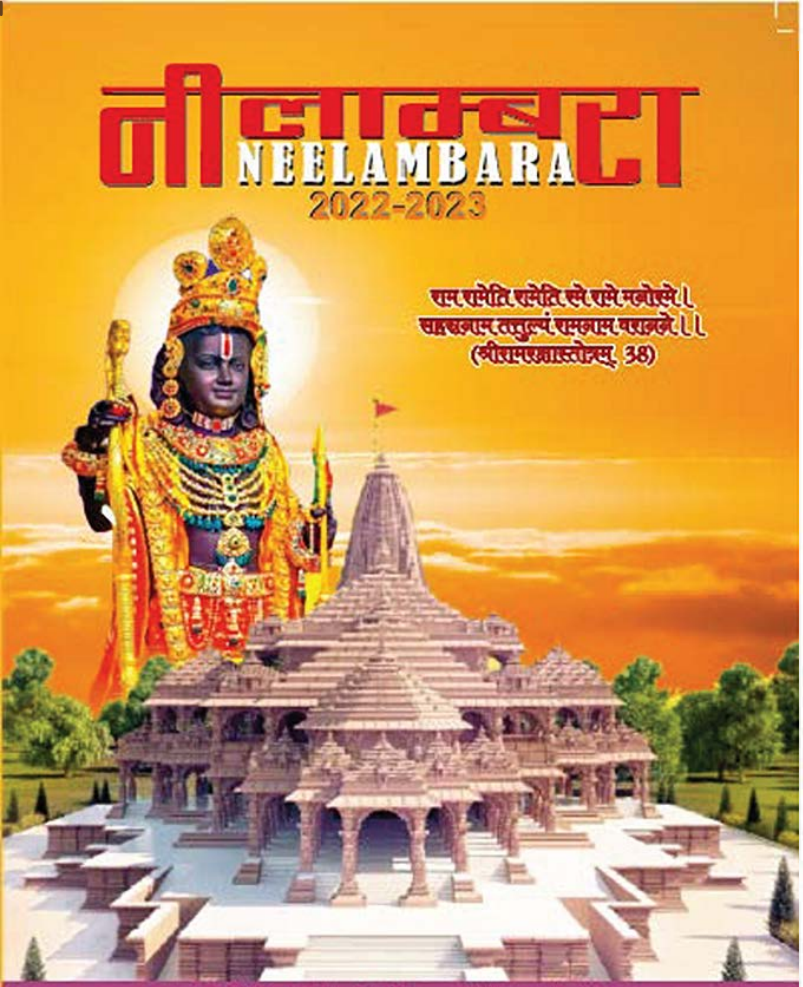

P.G.D.A.V. College (Evening)
University of Delhi

EDITORIAL BOARD

(Left to Right)
Sitting :- ***Dr. Yogesh Sharma, Dr. Rajkumari Pandey, Prof. R.K. Gupta (Principal), Ms. Priyanka Chatterjee***
Standing :- **Mahesh Tiwari, Argati Vijay, Saadat Ali**

नीलाम्बरा
NEELAMBARA

2022-2023

पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय (सांध्य)
दिल्ली विश्वविद्यालय
नेहरू नगर, दिल्ली-110065
दूरभाष : 011-29845214
ईमेल : principalpgdaveve@gmail.com

मुख्य सम्पादक

डॉ. योगेश शर्मा (संस्कृत विभाग)

सम्पादक मण्डल

डॉ. योगेश शर्मा (संस्कृत विभाग)

डॉ. राजकुमारी पाण्डेय (हिंदी विभाग)

श्रीमती प्रियंका चटर्जी (अंग्रेजी विभाग)

छात्र सम्पादक

महेश तिवारी (संस्कृत विभाग)

अर्गति विजय (हिंदी विभाग)

सादत अली (अंग्रेजी विभाग)

(नीलाम्बरा की रचनाओं में लेखकों की निजी अभिव्यक्ति है - उससे सम्पादकीय सहमति आवश्यक नहीं। रचनाकार अपनी रचनाओं की मौलिकता के लिए स्वयं उत्तरदायी हैं।)

मुद्रण : अजित स्क्रीन ग्राफिक्स, बी-144ए (बैक साइड) नारायणा इंडस्ट्रियल एरिया, नई दल्ली-110028
दूरभाष : 9891073535, 9891317772 ईमेल : ajitprint2007@gmail.com

पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज (सांध्य), दिल्ली विश्वविद्यालय,
नेहरू नगर, दिल्ली-110065 की ओर से प्राचार्य, प्रो. आर. के. गुप्ता द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
दूरभाष : 011-29845214 ईमेल : principalpgdaveve@gmail.com

विषय सूची

शीर्षक	लेखक	पृष्ठ संख्या
प्राचार्य की कलम से	प्रो. आर. के. गुप्ता	9
मुख्य सम्पादकीय	डॉ. योगेश शर्मा	11
संस्कृत खण्ड:		13-45
युवानां पथप्रदर्शक: भगवान् श्रीराम:	महेश तिवारी	15
राष्ट्रनिर्माणे युवानां योगदानम्	जिया खान	18
सफलताया: आधार: युवा	आरती द्विवेदी	20
संस्कृतभाषाया: प्रचारे-प्रसारे युवानां योगदानम्	यश कुमार शुक्ला	22
स्वामिविवेकानन्दस्य युववर्गेषु प्रभाव:	अंशु गुप्ता	24
राष्ट्रनिर्माणे मम योगदानम्	रुद्र भारद्वाज	26
युवान: स्वामिविवेकानन्दसदृशा: भवेयु:	सुमन ठाकुर	28
स्वामिविवेकानन्द: अद्यतन युवाश्च	दिनकर कुमार	29
युवानां प्रेरणाश्रोत: - स्वामी दयानन्द सरस्वती	राज कुमार	31
कर्मसिद्धान्त: श्रीमद्भगवद्गीताया: आलोके	डॉ. तरुण कुमार दीप	34
गुणत्रयस्य स्वरूप: प्रभावश्च (गीताया: आलोके)	डॉ. कुलदीप सिंह	38
राष्ट्रनिर्माणे युववर्गेषु गुणानामाधानमावश्यकम्	डॉ. योगेश शर्मा	41
हिंदी खण्ड		47-84
सम्पादकीय	डॉ. राजकुमारी पाण्डेय	48
सिनेमाई बाजार में विकलांगता की नुमाईश: करुणा का बिकाउ फार्मूला	डॉ. अनिरुद्ध कुमार	49
उत्साहित मन	उमेश शर्मा	59
अंतिम युद्ध	आयुष कुमार सिंह	62
अंतर्मन	आयुष कुमार सिंह	62
बेटियाँ	आयुष कुमार सिंह	62
सुनो मां	जितेन्द्र कुमार सिंह	63

उदास	आदेश यादव	64
संविधान सभा में राजभाषा हिंदी पर हुई बहस की समीक्षात्मक व्याख्या।	शिवम् सिंह	65
रिश्तों की महक कहां खो गई है?	अदिति गुप्ता	72
फिर क्यों न कहें हम, हम हिन्दी के सम्राट हैं	सर्वेश कुमारी	73
युवा नेतृत्व	अर्गति विजय	74
क्या यहीं तक का था सफर तुम्हारा	अनुज शुक्ल	75
हर रोज उठता है धुआँ	अनुज शुक्ल	76
कौन जानता है उन्हें ?	अनुज शुक्ल	77
संस्कारयुक्त शिक्षा आज की आवश्यकता	दुर्गेश	78
उत्साह से उत्थान तक	दुर्गेश	82
युवा : जिंदगी एक कला है।	गिरिशा सिंह तोमर	84

विभिन्न समितियों द्वारा आयोजित कार्यक्रमों के छाया चित्र 85-188

विभिन्न समितियों द्वारा आयोजित कार्यक्रमों के छाया चित्र 86

English Section 189-217

From The Editor's Desk	Ms. Priyanka Chatterjee	190
Student Editorial	Saadat Ali	191
Champions of Change: The Essential Role of Youth in Driving Sustainability and Nation Development	Ms. Tanishka Gupta	192
The Eternal Wealth: Celebrating the Indian Knowledge System	Ms. Tanishka Gupta	196
I Admit It: A Confession to the Bravehearts of this Nation	Sharanyam Singh	197
Autumn	Sharanyam Singh	199
Youth: An Engine of Growth	Ritik Raj Kushwaha	200
Our Shining Light	Aaditya Pandey	202

Role of Youth in Nation Building	Aaditya Pandey	203
Beginnings	Tanya Shree	205
She is a Changemaker	Tanya Shree	206
Sounds like Static (a depressed daydream)	Saadat Ali	207
India's Presidency at G-20	Mohit Singhal	208
Open Ended Waiting	Shivani Suri	211
Psychology of Gender	Shivani Suri	212
Life's Ebb and Flow	Anuj Shukla	214
College Days End, But Memories Last Forever	Rishabh Katyal	215

COLLEGE COLLAGE: 2022-23 219-263

COLLEGE COLLAGE: 2022-23	***Compiled by:-*** Dr. Asha Rani, Professor, Dept. of Hindi & Ms. Priyanka Chatterjee, Associate Professor, Dept. of English	220

मीडिया में महाविद्यालय 265-280

मीडिया में महाविद्यालय		266

Lord Macaulay's address to the British Parliament of Education on Feb 2, 1835

" I have travelled across the length and breadth of India and I have not seen one person which is a beggar, who is a thief. Such wealth 1 have seen in this country, such high moral values, people of such caliber that I do not think we would ever conquer this country unless we break the very backbone of this nation, which is her spiritual and cultural heritage, and therefore, I propose that we replace her old and ancient education system, her culture, for if the Indians think that all that is foreign and English is good and greater than their own, they will lose their self esteem, their native culture and they will become what we want them, a truly dominated nation."

शिक्षा पर महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचार

"आपके पूर्वज जंगलों में बसे अशिक्षित नहीं थे अपितु संसार को जागृत करने वाले महापुरुष थे। आपका इतिहास पराजय की गठड़ी नहीं है। वह विश्व विजेताओं की गौरवगाथा है। आपकी वैदिक ऋचाएँ ग्वालों के गीत नहीं हैं। ये श्रीराम तथा श्री कृष्ण जैसी महान आत्माओं को साकार करने वाले महासत्य हैं। जागो, उठो। उत्तिष्ठत, जाग्रत। अपने उज्ज्वल इतिहास पर गर्व करो। वर्तमान को सँवारने हेतु अपने गौरवमयी इतिहास से प्रेरणा लो। अपने पूर्व के प्रति तिरस्कार की भावना जगाने वाली आधुनिक शिक्षा को धिक्कार है। "

"वैदिक ज्ञान का प्रसार पहले मैं अपने देशवासियों में करना चाहता हूँ। एक बार ज्ञानदीप यहां प्रज्वलित हो गया तो फिर उसका प्रकाश पाश्चात्य राष्ट्रों में भी फैलेगा।"

पी.जी.डी.ए.वी. (सांध्य) गान

पी.जी.डी.ए.वी. (सांध्य) को आओ नमन करें।
आओ नमन करें।।

संगम है यह परंपरा और अधुनातन शिक्षा का
परिसर है यह वेद और विज्ञान की सम-दीक्षा का।
ज्ञान की पावन गंगा से दोषों का दमन करें।
आओ नमन करें।
आओ नमन करें।।

यह अनुपम विचार भूमि है दयानंद स्वामी की
आर्य समाज के उन्नत मस्तक के प्रण अनुगामी की
त्याग, समर्पण और मूल्य शुचिता का गमन करें।
आओ नमन करें।
आओ नमन करें।।

गूंजें वेद ऋचाएं नित-नित इस सुरम्य उपवन में
यज्ञ निरंतर हों, पवित्र वाणी हो इस आँगन में
पावन समिधा से अधर्म का मिलकर दमन करें।
आओ नमन करें।
आओ नमन करें।।

देता शुभ आशीष सभी को यह महाविद्यालय
प्रेम भरे संस्पर्श देव के यह पावन देवालय
ऐसा है संकल्प सभी के दु:खों का शमन करें।
आओ नमन करें।
आओ नमन करें।।

स्वामी विवेकानन्द का स्वप्न

युवा ऐसा हो !

चेहरे पर तेज हो
देह में शक्ति हो
मन में उत्साह हो
बुद्धि में विवेक हो
हृदय में करुणाभाव हो
मातृभूमि के लिए प्रेम हो
चेतना में संयम हो
मन में स्थिरता हो
आत्मविश्वास दृढ़ हो
इच्छाशक्ति प्रबल हो
सिंह जैसा निडर हो
ऊँचे स्वप्न हो जिसके
सत्य जिसके लिए भगवान हो
व्यसनों से मुक्त हो
जीवन में अनुशासन हो
प्रेममयी स्वभाव हो
मानवता धर्म हो जिसका
गुरु के लिए आदर हो
माता-पिता के प्रति श्रद्धा हो
गरीबों का मित्र हो
सेवा के लिए तत्पर हो
भगवान में आस्था हो
जीवन में नियम एंव मूल्य हो
चरित्र शुद्ध हो

प्राचार्य की कलम से

नीलाम्बरा के पाठकों का हार्दिक अभिनंदन और वंदन। पिछले अंकों की भांति यह अंक भी एक विशेष theme - राष्ट्र विकास में युवाओं की भूमिका - पर आधारित है। मुख्य संपादक डॉ. योगेश व संपूर्ण संपादक मंडल को अत्यंत साधुवाद व बधाई देता हूं, इस सामायिक और महत्वपूर्ण शीर्षक का चुनाव करने के लिए।

नीलाम्बरा एक सशक्त माध्यम है अपने विचारों को लेखन के द्वारा व्यक्त करने का। विचारों की उत्पत्ति मस्तिष्क में होती है। अतः विचारों की गुणवत्ता व प्रकृति इस बात पर निर्भर करती है कि मस्तिष्क का पोषण, परिष्कार और प्रशिक्षण किस प्रकार हुआ है। यह भी सत्य है कि सद्विचारों से मस्तिष्क की सकारात्मक क्षमता बढ़ती है।

इस दृष्टि से विवेचन करने पर लेखन के लिए एक उपयुक्त शीर्षक का चयन एक स्वस्थ मस्तिष्क और सद् विचारों की उत्पत्ति के लिए उत्प्रेरक का काम करता है। मुझे लगता है कि नीलाम्बरा के वर्तमान अंक के लिए चयनित विषय इस पैमाने पर पूरा खरा उतरता है। संपादक मंडल को पुनः बधाई।

राष्ट्र है तो हम हैं। किसी भी युवा की युवावस्था तक की सफल यात्रा भी एक सुरक्षित व उन्नत राष्ट्र के कारण ही संभव है। अतः उसके विकास में हर युवा को अपने योगदान की भूमिका निश्चित करनी होगी। 'राष्ट्राय स्वाहा:।' 'इदं राष्ट्राय इदं न मम।' इन मंत्रों को अंगीकार करना होगा। 'Ask not what country can do for you. Ask what you can do for your country' को समझ कर व्यवहार में लाना होगा। भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए यह एक अनिवार्य स्थिति है।

विषय आधारित व अन्य सभी लेख और रचनाएं इस अंक में अत्यंत प्रभावी हैं। विद्यार्थियों को उनकी मौलिकता व सुंदर लेखन शैली के लिए भी बधाई। उन्होंने अपनी रचना नीलाम्बरा में प्रकाशित होने के लिए सफल प्रयत्न किया, इसके लिए भी उन्हें बधाई। भविष्य में अपनी इस कला साधना को परिमार्जित करते हुए इसमें वे निरंतरता बनाए रखें, ऐसी मेरी इच्छा व कामना है।

Cover Page श्रीराम मंदिर के छायाचित्र व साथ में मंदिर में विराजमान प्रभु श्रीराम लला के अप्रतिम स्वरूप के चित्र के कारण बहुत अनूठा व अनुपम बन पड़ा है। श्रीराम मंदिर का निर्माण गुलामी के प्रतीकों से मुक्ति का व भारतीय अस्मिता की पुनर्स्थापना का प्रतीक है। यह संदेश cover page के माध्यम से सभी पाठकों के बीच जाएगा, ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है।

Photograph Section अत्यंत सुंदर, आकर्षक व कॉलेज की अधिकांश गतिविधियों को समाहित करने वाला है। प्रत्येक अंक की भांति इस अंक में भी college collage एक distinct feature है।

इस अंक का वर्तमान प्रकाशित रूप डॉ योगेश शर्मा व संपादक मंडल के अन्य सदस्यों - डॉ राजकुमारी पांडेय, डॉ प्रियंका चटर्जी व विद्यार्थी संपादकों - के अनथक परिश्रम, लगन और संपादन कला की कौशलता का परिणाम है। उन सभी का मैं हृदय से धन्यवाद व आभार व्यक्त करता हूं। कॉलेज की गरिमा, प्रतिष्ठा, यश हम सभी के संयुक्त प्रयास से नील अंबर में सदा बढ़ती रहे, ऐसी प्रभु के श्रीचरणों में प्रार्थना करते हुए संपूर्ण कॉलेज को हार्दिक शुभकामनाएं।

प्रो. रवीन्द्र कुमार गुप्ता
(प्राचार्य)

मुख्य सम्पादकीय

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः।। (श्रीरामरक्षास्तोत्रम् 27)

डॉ. योगेश शर्मा

श्री राम भगवान की मनमोहक दिव्य आभा अयोध्या के राम मंदिर में विराजमान होते ही विश्व भर के सभी हिंदुओं और मानवतावादी प्राणियों का जीवन मानो धन्य हो गया। एक ऐसा रोमांचक व गर्व से भर देने वाला क्षण हम सभी ने देखा व आत्मसात् भी किया। यह एक नये युग का प्रारंभ है जिसमें सभी को सुख व शांतिमय वातावरण बनाने में बढ़-चढ़कर अपना योगदान देना चाहिये। इस लक्ष्य सिद्धि हेतु युगों से सैंकड़ों राम भक्तों ने अपना बलिदान दिया है जिसका सुखद परिणाम हमारे सामने अयोध्या में राम मंदिर के रूप में प्रत्यक्ष है। हमने कोई पुण्यकर्म ही किए हैं जिसके कारण हम इस गौरवशाली, ऐतिहासिक, अविस्मरणीय पल के साक्षी बने हैं। अब हम सबका दायित्व और बढ़ गया है। अभी तो यह प्रारंभ है इसे और आगे लेकर जाना होगा। यह हम सभी का कर्त्तव्य है।

वस्तुतः किसी भी संस्था की पहचान उसमें कार्यरत मनुष्यों के शक्ति समूह के कारण होती है। कितना भी अच्छा भवन या अच्छे नाम वाली संस्था ही क्यों ना हो, यदि उसमें रहने वाले व कार्य करने वाले मनुष्य अच्छे नहीं हैं तो वह भवन सुंदर होते हुए भी कुछ समय में अपनी पहचान खो देता है और यदि वह शक्ति समूह अच्छा है तो उसकी कीर्ति पताका सूर्य के प्रकाश की भांति सर्वत्र फैल जाती है। यही विशेषता हमारे पी.जी.डी.ए.वी. (सांध्य) महाविद्यालय की है जिसमें कार्य करने वाले सभी जन सामूहिक रूप से मिलकर इतनी तन्मयता व समर्पण से अपना योगदान देते हैं जिससे महाविद्यालय नित्य - निरन्तर सभी क्षेत्रों में ऊंचाइयों को छू रहा है। इसका सम्पूर्ण श्रेय यदि किसी एक व्यक्ति को दिया जाए तो वह हैं हमारे प्राचार्य प्रोफेसर रवीन्द्र कुमार गुप्ता महोदय। आपके मार्गदर्शन व सहयोग से महाविद्यालय में एक निरंतर गतिशीलता सी आ गई है। इससे चारों दिशाओं में इसकी ख्याति फैल रही है। कोरोना के बाद सभी जगह नूतनता के साथ फिर से क्रियाशीलता आई। धीरे-धीरे समाज में भी हमें सकारात्मकता के दर्शन हुए। अनेक मन - मस्तिष्कों में ऊर्जा व आशा की नई किरणें जगने लगीं। समाज दुगनी गति से कार्य करने लगा। दीर्घकाल से रुकी हुई योजनाओं को क्रियान्वित करने का समय आया और प्राचार्य महोदय ने सभी का ध्यान रखते हुए एक कुशल व सामर्थ्यवान् प्रशासक की भूमिका निभाते हुए उनके मुख पर प्रसन्नता का भाव व खुशी लाने में सभी का हित साधने का भागीरथ प्रयास किया। ऐसे प्रेरणास्रोत व सर्वहितसाधक प्राचार्य महोदय का जितना भी धन्यवाद किया जाये कम ही है। फिर भी महाविद्यालय परिवार व मेरी ओर से हृदय

की गहराइयों से आपका कोटिशः धन्यवाद करना अपना सौभाग्य व धर्म समझता हूँ। साथ ही ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वो आपकी शक्ति व कार्यों में और ज्यादा वृद्धि करें जिससे आप और अधिक माँ भारती की सेवा कर सकें।

वस्तुतः इस बार की नीलाम्बरा पत्रिका को अति विशिष्ट बनाने हेतु आदरणीय प्राचार्य प्रोफेसर रवीन्द्र कुमार गुप्ता महोदय ने राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका नामक थीम पर लेख व कविताएं आमंत्रित करने का उत्तम सुझाव दिया था। इसे नीलाम्बरा पत्रिका समिति के सभी सदस्यों ने एक मत से स्वीकार किया व भूरिशः प्रशंसा भी की। मुझे ऐसा लगता है कि वे प्रतिक्षण महाविद्यालय की उन्नति हेतु विचार करके उसे क्रियान्वित करने में लगे रहते हैं और हम सभी को भी प्रेरित करते रहते हैं। इस हेतु मैं प्राचार्य महोदय का मेरी ओर से कोटिशः हार्दिक धन्यवाद व कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

आदरणीय बर्सर डॉ. अमित सर का भी हृदय से धन्यवाद करना चाहता हूं उन्होंने समय-समय पर प्रकाशक से व सुमित सर से बात करके इसे आगे बढ़ाने में अपना पूर्ण सहयोग दिया। नीलाम्बरा समिति के अन्य सदस्यों जिनमें हिंदी खंड की संपादिका डॉ. राजकुमारी पाण्डे जी व अंग्रेजी खंड की संपादिका डॉ. प्रियंका चटर्जी महोदया का हृदय से धन्यवाद करना चाहता हूँ। वस्तुतः जब समिति के संयोजक का चुनाव होना था तो आप दोनों ने ही मुझे यह दायित्व सौंपा और कहा कि हम आपका पूरा सहयोग करेंगे। आप दोनों ही मुझसे वरिष्ठ हैं फिर भी आप दोनों ने मेरा पूर्ण सहयोग किया। संस्कृत विभाग के मेरे पूर्व सहयोगी बंधुओं डॉ. अंकुर त्यागी, डॉ. रक्षिता व डॉ. श्रुति शर्मा का विशेष आभार प्रकट करना चाहता हूं जिन्होंने अपना योगदान दिया। साथ ही नूतन व चिरस्थाई साथी डॉ. तरुण कुमार दीप व डॉ. कुलदीप सिंह जी का भी हृदय से धन्यवाद करना चाहता हूं आप दोनों का भी सर्वदा पूर्ण सहयोग बना रहता है।

पुस्तकालयाध्यक्ष पवन मैथानी सर, सुमित सर, रवि वधवा सर और अन्य सभी सहयोगियों का भी धन्यवाद करना चाहता हूं आप सभी का सहयोग समय - समय पर प्राप्त होता रहता है। इस पत्रिका को प्रकाशन करवाने में प्रकाशक श्री आनंद कुट्टन जी का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ इनके साथ उनके टंकणकर्ता व सभी सहयोगियों का भी धन्यवाद करना चाहता हूं। इस पत्रिका में प्रकाशन हेतु आए लेखों, कविता संग्रहों के कारण ही यह पत्रिका प्रकाशन योग्य बनी। इस निमित्त जिन प्राध्यापकों व छात्रों ने अपने लेख भेजे उनके प्रति भी मैं आभार प्रकट करना चाहता हूँ। यदि कहीं कोई त्रुटि रह गई हो तो उसके लिए क्षमा याचना करता हूँ। अन्ततः मां सरस्वती व प्रभु के आशीर्वाद से नीलाम्बरा का यह साठवां अंक आप सभी सुधीजनों को आदरपूर्वक समर्पित है।

डॉ. योगेश शर्मा
(मुख्य सम्पादक)

संस्कृत खण्ड

युवानां पथप्रदर्शकः भगवान् श्रीरामः

महेश तिवारी
(बी. ए. संस्कृत विशेष, तृतीय वर्ष)
(छात्र सम्पादक)

राष्ट्रनिर्माणाय अस्माकङ्कृते सर्वप्रथमं स्वसंस्कृतेः ज्ञानमावश्यकमस्ति। संस्कृतेः ज्ञानार्थमस्माकङ्कृते वेद-पुराण-शास्त्र-महाकाव्यादिग्रन्थानामध्ययनमावश्यकमस्ति। यतो हि एतेषां ग्रन्थानामध्ययनेन वयं ज्ञानशीलाः भवामः। तेन राष्ट्रनिर्माणे वयमस्माकं योगदानं दातुं समर्थाः भविष्यामः।

एतेषु धर्मग्रन्थेषु यत् ज्ञाननिहितमस्ति तदमूल्यम-साधारणञ्चास्ति। अतः अस्माभिः एतत् धारणीयम्। अत्रमहं रामायणमहाकाव्यमाधारीकृत्य राष्ट्रनिर्माणस्य विषये चर्चां करोमि। एतस्मिन् महाकाव्ये चतुर्विंशतिसहस्रश्लोकाः, पञ्चशतसर्गाः, अथ च सप्तकाण्डानि सन्ति। अस्य रचनाकारः अस्ति महर्षिः वाल्मीकिः। अस्य ग्रन्थस्य नायकः मर्यादापुरुषोत्तमः भगवान् श्रीरामः तथा च नायिका माता सीता अस्ति। एतयोः चरित्रं गोरससदृशं श्वेतं पवित्रञ्चास्ति।

"धर्मज्ञस्सत्यसन्धश्च प्रजानां च हिते रतः ।
यशस्वी ज्ञानसंपन्नश्शुचिर्वश्यस्समाधिमान्॥"(श्रीवाल्मीकिरामायणम् 1/1/12)

अर्थात् भगवान श्रीराम अपनी प्रतिज्ञा में दृढ़ और हमेशा अपनी प्रजा का भला करने की "इच्छा रखने वाले हैं। वे महान्, बुद्धिमान और ह्रदय से शुद्ध हैं। वे बड़ों का सम्मान तथा उनकी आज्ञा का पालन करने वाले और जो शरण में आ जाए (चाहे वह शत्रु ही क्यों न हो) वे साक्षात धर्म की मूर्ति हैं। यदि आज का युवा उनके पद चिन्हों पर चले तो अपना भविष्य तो उज्ज्वल करेगा ही साथ ही साथ सम्पूर्ण संसार को सुख, शान्ति, वैभव, धर्म तथा सद्गुणादि उपकरणों से भर देगा। जिससे हमारे भाग्य के साथ-2 सम्पूर्ण जगत भी चमचमा उठेगा इसलिए आईए समुद्र रूपी इस महाकाव्य का मंथन करके अमृत निकालकर ग्रहण करते हैं ।

हमारे अनुसार मनुष्य के अन्दर अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु उत्साह, सत्य और धर्म का होना अत्यावश्यक है। महर्षि ने भी कहा है कि-

"उत्साहो बलवानार्य नास्त्युत्साहात्परं बलम् ।
सोत्साहस्य हि लोकेषु न किञ्चिदपि दुर्लभम् ॥
सत्यमेवेश्वरो लोके सत्ये धर्मः सदाश्रितः ।
सत्यमूलानि सर्वाणि सत्यान्नास्ति परं पदम् ॥
धर्मादर्थः प्रभवति धर्मात्प्रभवते सुखम् ।
धर्मेण लभते सर्वं धर्मप्रसारमिदं जगत् ॥" (किष्किन्धा/1/121-123)

अर्थात् उत्साह बड़ा बलवान होता है, इससे बढ़कर कोई अन्य बल नहीं होता है, जो पुरुष उत्साही होता है, उसके लिए संसार में कुछ भी, दुर्लभ नहीं है। सत्य ही संसार में परब्रह्म परमेश्वर है, धर्म भी इसी पर ही आश्रित है, अर्थात धर्म तथा समस्त भव-विभव का मूल है। सत्य से बढ़कर दूसरा और कुछ नहीं है। धर्म से ही धन, सुख तथा सब कुछ प्राप्त होता है, इस संसार में धर्म ही सार वस्तु है ।

जो भी है, यही है इसके अन्यत्र कुछ भी नहीं है, जो इसको धारण करेगा उसके लिए अपने जीवन में कुछ भी असम्भव नहीं है। इन तीनों को वही धारण कर सकता है, जो शान्त तथा विनम्र होता है । हमें अपने अन्दर अहं तथा क्रोध को प्रवेश नहीं करने देना चाहिए, क्योंकि यह हमारे धर्म तथा बुद्धि का नाश कर देते हैं।

"वाच्यावाच्यं प्रकुपितो न विजानाति कर्हिचित् ।
नाकार्यमस्ति क्रुद्धस्य नवाच्यंविद्यते क्वचित् ॥"

अर्थात् क्रोध की दशा में मनुष्य अपने विवेक को खो देता है, उसे कुछ कहने और न कहने योग्य बातों का भान नहीं रहता। वह कुछ भी कह सकता है और कुछ भी बोल सकता है।

उसके लिए कुछ भी उचित या अनुचित नहीं रह जाता है । ऐसे ही महर्षि वाल्मीकि ने और न जाने कितने ज्ञान को सामान्य जन के लिए इस महाकाव्य में निबद्ध कर रखा है। इसके बाद प्रभु श्रीराम की महानता तथा गुणों की भी चर्चा कर लेते हैं । जैसे मैंने शुरुआत में ही बताया है कि जो इनका अनुसरण करेगा वह खुद का निर्माण भी सर्वश्रेष्ठ करेगा । जब महर्षि वाल्मीकि महर्षि नारद से श्रीराम के बारे में पूँछते हैं, तो फिर वे उनका परिचय करवाते हैं ।

"सर्वशास्त्रार्थशास्त्रज्ञस्मृतिमान्प्रतिभानवान् ।
सर्वलोकप्रियस्साधुरदीनात्मा विचक्षणः ॥

सर्वदाभिगतस्सद्भिस्समुद्रइव सिन्धुभिः ।
आर्यस्सर्वसमश्चैव सदैक प्रियदर्शनः ॥
विष्णुना सदृशोवीर: सोमवत्प्रियदर्शनः ।
कालाग्निसदृशः क्रोधे क्षमया पृथिवीसमः ॥"

अर्थात् भगवान श्रीराम ज्ञान के समुद्र हैं, वे समस्त शास्त्रों का सही अर्थ जानते हैं और उनकी एक प्रतिगामी स्मृति हैं। वह प्रतिभाशाली हैं। वह सभी के प्रति प्रेम भाव रखने वाले सुपुत्र हैं, उनका मन सदैव अविचल रहता हैं , चाहे अत्यधिक सुख हो या दुःख हो तथा सही समय पर सही कार्य करने में सक्षम हैं।

श्रीराम नदियों के लिए समुद्र की तरह, गुणी पुरुषों के लिए सुलभ है और सभी के प्रति समान भाव रखते हैं। उनका हमेशा आकर्षक स्वभाव रहा हैं। श्रीराम विष्णु के समान पराक्रम में, चन्द्रमा के समान रूप में, क्रोध में सर्व- भस्म कर देने वाली अग्नि के समान, धैर्य में पृथ्वी, दान में कुबेर और दृढ़ता में सूर्य के समान हैं।

इसी प्रकार अनगिनत गुण प्रभु श्रीराम में महर्षि नारद ने बताये हैं, जिसका यहाँ वर्णन कर पाना संभव नहीं हैं । उनके गुणों के प्रमाण उनके अद्भुत कार्य हैं, जिससे आप सभी भलीभाँति परिचित होंगे ही। वे पितृ भक्ति तथा देश भक्ति के प्रतीक हैं, वे आदर्श हैं, जो अपने पिता के आज्ञानुसार अपने राज्य का त्याग कर 14 वर्ष के लिए बनवास धारण कर लिए, हजारों संकटों तथा कष्टों का सामना किया और अपने कर्तव्यपथ पर अडिग रहे। वे अपने वचन के पालन हेतु अपने प्राण भी दाँव पर लगा देते थे, परन्तु मिथ्या नहीं जाने देते थे। – "रघकुल रीति सदा चलि आयी , प्राण जाय पर वचन न जाई ।"

अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु हिमालय की तरह अडिग रहते थे। रावण विश्व विजेता था, जिसने देवों, दानवों, गन्धर्वों, किन्नरों सब को बन्दी बना रखा था। उसके पास एक-से-एक महाभट योद्धा थे और श्रीराम के पास बस उनके भाई लक्ष्मण तथा कुछ वानर सेना थी, फिर भी भयभीत नहीं हुए समुद्र पर सेतु बान्ध दिया तथा रावण को पराजित कर दिया।

इस प्रकार श्रीराम का चरित्र बहुत ही उदार है और लोक कल्याण के लिए सौ प्रतिशत कल्याणकारी है। अतः आज के युवाओं को इन सत्यनिष्ठ, कर्मनिष्ठ और धर्मनिष्ठ श्रीराम का अनुशरण करना बहुत आवश्यक है, इनके द्वारा बताये गये मार्ग पर चलकर हम अपने भविष्य के साथ -साथ राष्ट्र के भविष्य को भी उज्ज्वल कर सकते हैं।

राष्ट्रनिर्माणे युवानां योगदानम्

जिया खान
बी ए संस्कृत विशेष, प्रथम वर्ष

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः ।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥ (गीता, अध्याय 3, श्लोक 22)

युवजनाः यथा आचरिष्यन्ति तथैव अस्माकं राष्ट्रस्य निर्धारणं भविष्यति। तेषु नेतृत्वशक्ति अतुलनीया भवति। तेषां श्रेष्ठाचरणं सदैवानुकरणीयं भवति। युवकाः कस्यापि समाजस्य कृते मूलभूताः भवन्ति। अस्माकं देशस्य समग्रविकासाय तेषां योगदानं महत्त्वपूर्णमस्ति। अस्माकं राष्ट्रं प्रति युवकानां बृहत् संख्यायां समर्थनं प्राप्तमस्ति। तेन राष्ट्रं वृद्धिं प्रति गच्छति। अतः तेषां दायित्त्वमस्ति यत् ते उज्ज्वलभविष्यं प्रति अग्रेसराः भवन्तु।

अद्यतन युवकाः स्वस्तन नेतारः सन्ति। एते ते एव सन्ति येन अस्माकं राष्ट्रस्य भविष्यनिर्धारणं भविष्यति। एतदावश्यकमस्ति यत् वयं अस्माकं युवकानां सशक्तं कुर्मः। तेषां विकासाय येषां संसाधनानामावश्यकता अस्ति ते वयं उपलब्धं कुर्मः।

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास के प्रमुख कारकों में से एक है। यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि हमारे युवाओं की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रमों तक पहुंच हो जो उन्हें आगे आने वाली चुनौतियों के लिए तैयार करेगा।

इसके अलावा, युवाओं में बदलाव लाने की ताकत है। वे हमारे समाज के सबसे भावुक और ऊर्जावान सदस्य होते हैं। वे यथास्थिति को चुनौती देने और मानदंडों पर सवाल उठाने से डरते नहीं हैं। उनके पास नवाचार करने और नए विचारों के साथ आने की क्षमता है जो हमारे देश को बदल सकते हैं। उन्हें अपने विचार व्यक्त करने और सुनने के लिए एक मंच प्रदान करना महत्वपूर्ण है।

"पर्यावरणनाशेन नश्यन्ति सर्वजन्तवः ।
पवनः दुष्टतां याति प्रकृतिविकृतायते ॥

एक स्थायी भविष्य के निर्माण में युवाओं की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जलवायु परिवर्तन उन सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है जिसका आज हमारा विश्व सामना कर रहा है। यह

आवश्यक है कि हम इसके प्रभावों को कम करने के लिए कार्रवाई करें और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्थायी भविष्य सुनिश्चित करें। स्थायी प्रथाओं को बढ़ावा देकर और पर्यावरण को प्राथमिकता देने वाली नीतियों की वकालत करके युवा इस आंदोलन में सबसे आगे हो सकते हैं।

हमारे राष्ट्र की प्रगति में युवाओं की भूमिका के बारे में बहुत अधिक बताया जा सकता है। वे हमारे देश का भविष्य हैं, और यह सुनिश्चित करना हमारी जिम्मेदारी है कि वे हमें एक उज्जवल भविष्य की ओर ले जाने के लिए सुसज्जित हों। हम अपने युवाओं को सशक्त बनाने के लिए मिलकर काम करें और उन्हें वे संसाधन उपलब्ध कराएं जिनकी उन्हें फलने-फूलने के लिए जरूरत है। ऐसा करके हम अपने और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक बेहतर कल का निर्माण कर सकते हैं।

सफलतायाः आधार : युवा

आरती द्विवेदी
बी ए संस्कृत विशेष,
(प्रथम वर्ष)

वयं सम्यक्तया जानीमः यत् मृत्युः शाश्वतं सत्यमस्ति। अतः यदि मृत्युः निश्चितः अस्ति तर्हि आत्मानं श्रेष्ठकार्यार्थं समर्पितं कुर्यात्, इत्येव सर्वोत्तमः।

प्रत्येकं राष्ट्रस्य सफलतायाः आधारः तस्य युवकाः अथ च तेषामुपलब्धयः भवन्ति। राष्ट्रस्य भविष्यं युवकानां सर्वाङ्गीण-विकासे निहितमस्ति। युववर्गः शारीरिकमानसिकरूपेण प्रत्येककार्यसाधने सक्षमः भवति। प्रत्येकं मनुष्यः जीवनस्य अस्य मार्गात् अग्रे गच्छति स्वयोगदानं च ददाति। अतः राष्ट्रनिर्माणे युववर्गः स्वमहत्त्वपूर्णभूमिकां निर्वहति।

यदि युवा धर्म के रास्ते पर चलें तो युवा का तो विकास होता ही है साथ ही राष्ट्र भी उन्नति को प्राप्त होता है,क्योंकि किसी भी राष्ट्र में आधिकतर जनसंख्या में युवा होते हैं। किसी भी राष्ट्र को विकसित राष्ट्र बनाने में युवा वर्ग का सर्वाधिक योगदान रहा है। राष्ट्र की प्रगति विज्ञान, प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य प्रबंधन और अन्य क्षेत्रों में विकास पर निर्भर होती है। इन सभी मानदंडों को पूरा करने के लिए सामाजिक, शैक्षणिक और आर्थिक आधार पर युवा का सशक्तिकरण आवश्यक है। इन सभी क्षेत्रों में सफलता पाने के लिए युवाओं को एक सकारात्मक दिशा में निर्देशित किया जाना चाहिए। युवाओं के विकास और प्रशिक्षण पर ध्यान दिया जाना चाहिए। युवाओं को उचित शिक्षा और कौशल विकास की आवश्यकता है, ताकि वे सही दिशा में समृद्ध हो सकें। युवाओं में अत्यधिक काम करने की क्षमता होती है और वह उत्साह से भरा हुआ होता है। सफलता की ओर अग्रसर होने की क्षमता भी बहुत होती है।

"उद्धरेत् आत्मना आत्मानम्" अर्थात् वयं स्वात्मना स्वात्मानम् उद्धारं कर्तुं शक्नुमः। जिस प्रकार इंजन को चालू करने के लिए ईंधन आवश्यक होता है, उसी प्रकार युवा राष्ट्र के लिए ईंधन की तरह है तथा एक बडी सम्पत्ति की तरह होता है। यह राष्ट्र में प्रेरक शक्ति के रूप में कार्य करता है। राष्ट्र निर्माण के लिए विकासशील युवाओं की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण है। दूसरे शब्दों में युवाओं की सूझबूझ और व्यक्तिगत उन्नति ही देश को सफलता के पथ पर ले जाएगी।

"न सा परा विद्या यया न दीयते ज्ञानम् ।
न तद् भवेद् ज्ञानं न येन दीप्यते चित्तम्" ॥ *- वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य*

अतः ज्ञानार्थं विद्या भवेत्, तथा च चित्त प्रकाशनार्थं ज्ञानं भवेत् । युवा नागरिकाः आत्मानं विकासार्थं राष्ट्रसमृद्ध्यर्थं ज्ञानं प्राप्नुयुः ।

संस्कृतभाषायाः प्रचारे-प्रसारे युवानां योगदानम्

यश कुमार शुक्ला
बी ए संस्कृत विशेष
(प्रथम वर्ष)

वाणी रसवती यस्य,यस्य श्रमवती क्रिया।
लक्ष्मी दानवती यस्य, सफलं तस्य जीवितम्॥

यस्य वाणी रसवती, क्रिया श्रमवती, लक्ष्मी दानवती चास्ति तस्य मानवस्य जीवनं सफलमस्ति। एतादृशानां संस्कृतसूक्तीनां वर्तमानसमयेऽपि महती आवश्यकता वर्तते। संस्कृतस्य प्रत्येकस्मिन् श्लोके मानवीयजीवनमूल्यानां जीवने तेषां मूल्यानां लाभः नीतिनाञ्च विषये वयं ज्ञानं प्राप्नुमः।

अतः आधुनिके युगे न केवलं विद्यार्थिनां कृते अपितु मानव-जीवनस्यविकासार्थं संस्कृतभाषायाः प्राङ्गिकता वर्तते। अतः एतस्याः भाषायाः प्रचारः-प्रसारश्च अस्माकं नवयुवकानां माध्यमेन भवतु। संस्कृतभाषा अस्माकं देशस्य प्राचीनतमा भाषा अस्ति। इयं भाषा अतीव रमणीया मधुरा चास्ति। एषा कठिना न अपितु सरला-सरसा अस्ति। पुरा इयं भाषा व्यावहारिकी भाषा आसीत्। इदानीमपि अस्माकं प्रयासेन व्यावहारिकी भाषा भवितुं शक्यते।

संस्कृत भाषा के प्रचार प्रसार मे युवाओं का योगदान आवश्यक है । युवा से तात्पर्य यह है कि एक ऐसा व्यक्ति जो अपनी समग्र आंतरिक और बाह्य शक्तियों को संगठनात्मक रूप से प्रयोग करता है ।

संस्कृत के विषय में विचार करते हुए कहा गया है कि युवाओं को स्वयं की योग्यता को पहचानकर संस्कृतमय जीवन बनाना चाहिए । संस्कारवान्, सफल एवं योग्य युवाओं को समाज और देश में सम्मान मिलता है । एक भाषा के रूप में संस्कृत अधिकतर लोगों के मध्य प्रचलित नहीं है । परन्तु कुछ युवाओं के तथा समाज में अनेकों लोगों के प्रयासों से फिर से संस्कृत को व्यावहारिक रुप में बोलना, विषय के रूप में पढना और इससे प्राप्त नैतिक मूल्यों को जीवन में आत्मसात् किया जा रहा है ।

आधुनिकीकरण के इस दौर में इस देवभाषा की अत्यन्त प्रासंगिकता है । इसी भाषा में वेद लिखे गए, अनेकों साहित्यग्रन्थ लिखे गये, जिसमें कई आयामों से जुड़े तथ्यों का वर्णन है । अनेकों युवा ऐसे हैं जो संस्कृतभाषा को पूरी तन्मयता से पढते हैं और साहित्य रचना में भी संलग्न हैं ।

संस्कृत भाषा के अनेक विद्वान हुए, जिन्होंने संस्कृत ग्रन्थों के आधार पर समाज को एक नयी दिशा दिलाई है । स्वामी विवेकानंद जी ने हमारी संस्कृत भाषा के आधार पर भारतीय संस्कृति को देश-विदेश तक फैलाया है तथा कहा है "उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत ।" अर्थात् उठो, जागो, और ध्येय की प्राप्ति तक रूको मत ।

संस्कृत भाषा के प्रचार प्रसार में आधुनिक काल में भी कई कवियों ने अनेक रचनाएँ लिखी हैं । पंडिता क्षमाराव संस्कृत की महान कवयित्री थी । इनके अलावा रेवाप्रसाद द्विवेदी, अभिराज राजेन्द्र मिश्र, पुष्पा दीक्षित, वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य, हर्षदेव माधव आदि अनेक संस्कृत साहित्यकार, दार्शनिक एवं वैयाकरण हैं जिन्होंने संस्कृत साहित्य में नूतन विधाओं तथा नवीन विषयवस्तु का अवतरण किया ।

संस्कृत युवा कवि ऋषिराज पाठक ने भी अनेक रचनाएँ की हैं । संस्कृत में युवाओं का योगदान रहा । कालिदास,भारवि जैसे महान कवियों का अध्ययन करते हुए युवा पीढ़ी को सामर्थ्यानुसार संस्कृत ग्रन्थों का प्रचार -प्रसार करने का प्रयास करना चाहिए ।

उद्यमेन हि सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ॥

अतः अस्या: भाषायाः संवर्धनाय वयं सर्वदा प्रयत्नशीला: भवेम ।

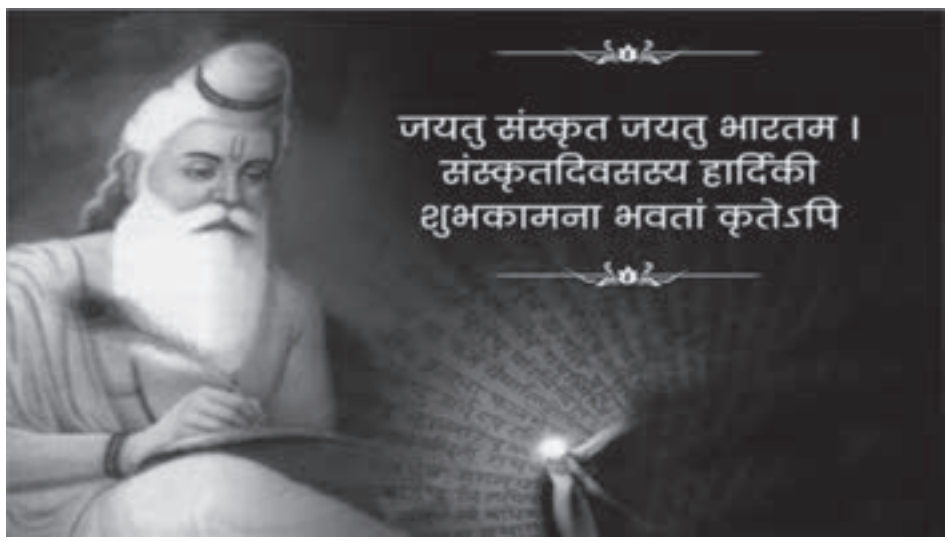

स्वामिविवेकानन्दस्य युववर्गेषु प्रभावः

अंशु गुप्ता
बी ए संस्कृत विशेष
(प्रथम वर्ष)

"यस्य वाङ्मनसी शुद्धे सम्यग्गुप्ते च सर्वदा ।
स वै सर्वमवाप्नोति वेदान्तोपगतं फलम्" ॥

यस्य मनुष्यस्य वाणी मनश्च निर्मलत्वेन नियन्त्रितत्वेन च सर्वदा कार्यं करोति। स एव परमं फलं प्राप्नोति। अतः निर्मलमनसा सदा आचरणं कुर्यात्। भारतस्य महानाध्यात्मिकनेता- दार्शनिकश्च स्वामिवि-वेकानन्दस्य जीवनमेतादृशेमेवासीत् । अतः विवेकानन्दस्य विचाराणां प्रभावः अद्यापि दृश्यते।

स्वामिविवेकानन्दः युवकानां हृदये अत्यधिकप्रभावः वर्धयति। तेषां शिक्षा-आदर्शाश्च अधुनापि युवकान् प्रेरयन्ति। तैः स्वभाषणे लेखने च समृद्धराष्ट्रनिर्माणाय युवकानां योगदानविषये बलं प्रदत्तम्। तेषां मतः आसीत् यत् युवजनाः कस्यापि देशस्य भविष्यरूपाः भवन्ति। तेषु राष्ट्रस्य स्वरूपपरिवर्तनस्य सामर्थ्यं शक्तिश्च भवति।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, युवा समाज का सबसे गतिशील और रचनात्मक समूह है। उनके पास असीम ऊर्जा और उत्साह है और वे अतीत के बोझ से दबे नहीं हैं। उनके पास दायरे से बाहर सोचने की क्षमता है और हमारे देश के सामने आने वाली चुनौतियों के लिए अभिनव समाधान पेश करने की क्षमता है।

हालाँकि स्वामी विवेकानन्द ने यह भी माना कि युवाओं को आसानी से विचलित किया जा सकता है और भटकाया जा सकता है। लंबी अवधि के लक्ष्यों और बड़े अच्छे पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय उन्हें अल्पकालिक सुख और तत्काल संतुष्टि से लुभाया जा सकता है। ऐसा होने से रोकने के लिए स्वामी विवेकानन्द ने मजबूत नैतिक मूल्यों के विकास के महत्व पर बल दिया।

स्वामी विवेकानन्द का मानना था कि युवाओं में उद्देश्य और दिशा की स्पष्ट समझ होनी चाहिए। उनके पास एक लक्ष्य होना चाहिए जिसके लिए वे काम कर रहे हैं, और उन्हें इसे प्राप्त करने के लिए आवश्यक कड़ी मेहनत और प्रयास करने के लिए तैयार रहना चाहिए। उनका मानना था कि युवाओं को जोखिम लेने और चुनौतियों को स्वीकार करने के लिए तैयार रहना चाहिए और उन्हें अपनी असफलताओं और गलतियों से सीखने के लिए तैयार रहना चाहिए।

स्वामी विवेकानन्द का भी मानना था कि युवाओं में देशभक्ति और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना प्रबल होनी चाहिए। उन्हें अपने देश पर गर्व होना चाहिए, और उन्हें इसकी प्रगति और विकास की दिशा में काम करने के लिए तैयार रहना चाहिए। उन्हें अपने साथी नागरिकों के लाभ के लिए और समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए अपनी प्रतिभा और कौशल का उपयोग करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

1893 में शिकागो में धर्म संसद में अपने प्रसिद्ध भाषण में स्वामी विवेकानन्द ने कहा था "मुझे एक ऐसे धर्म से संबंधित होने पर गर्व है, जिसने दुनिया को सहिष्णुता और सार्वभौमिक स्वीकृति दोनों सिखाया है। हम न केवल सार्वभौमिक सहनशीलता में विश्वास करते हैं, बल्कि हम सभी को स्वीकार करते हैं।" धर्म सत्य के रूप में मुझे ऐसे राष्ट्र से सम्बन्धित होने पर गर्व है जिसने सभी धर्मों और पृथ्वी के सभी देशों के सताए गए शरणार्थियों को आश्रय दिया है।

स्वामी विवेकानन्द की दृष्टि एक मजबूत और समृद्ध भारत की सहिष्णुता, एकता और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों पर आधारित थी। उनका मानना था कि भारत में दुनिया के लिए आशा और प्रेरणा की किरण बनने की क्षमता है और यह युवाओं का कर्तव्य है कि वे इस दृष्टि को वास्तविक बनाएँ।

इस दृष्टि को प्राप्त करने के लिए, स्वामी विवेकानन्द का मानना था कि युवाओं को भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करते हुए आधुनिकता और विज्ञान को अपनाना चाहिए। उनका मानना था कि आध्यात्मिक ज्ञान, वैज्ञानिक ज्ञान और सांस्कृतिक विविधता के मामले में भारत के पास दुनिया को देने के लिए बहुत कुछ है और शिक्षा युवाओं की क्षमता को अनलॉक करने की कुंजी है। उनके अनुसार शिक्षा केवल ज्ञान और कौशल प्राप्त करने के बारे में नहीं होनी चाहिए, बल्कि नैतिकता और नैतिकता की एक मजबूत भावना विकसित करने के बारे में भी होनी चाहिए। शिक्षा सभी के लिए सुलभ होनी चाहिए, भले ही उनकी सामाजिक स्थिति या आर्थिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो।

स्वामी विवेकानन्द की शिक्षाएँ और आदर्श पूरी दुनिया में युवाओं को प्रेरित करते रहते हैं। सहिष्णुता, एकता और सामाजिक न्याय का उनका संदेश आज पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है। एक ऐसी दुनिया में जो तेजी से विभाजित और ध्रुवीकृत होती जा रही है। इसलिए उनके विचारों और आदर्शों को युवाओं द्वारा आत्मसात किया जाए जिससे वो देश की समृद्धि में भागीदार बन सकें।

राष्ट्रनिर्माणे मम योगदानम्

रुद्र भारद्वाज
बी ए संस्कृत विशेष
(प्रथम वर्ष)

"यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा, शास्त्रं तस्य करोति किम्।
लोचनाभ्यासविहीनस्य, दर्पण किं करिष्यति" ॥

यथा नेत्रविहीनस्य जनस्य कृते दर्पणः व्यर्थः तथैव यस्य स्वयं प्रज्ञा न भवति शास्त्रं तस्य किं करिष्यति? अतः सर्वप्रथमं तु जीवने ज्ञानार्जनस्य शास्त्रज्ञानस्य च महती आवश्यकता वर्तते। राष्ट्रोन्नतिरपि अस्माकं मुख्यध्येयः भवतु। शिक्षा उन्नत्याः कुञ्जिका अस्ति।

छात्ररूपेण मम पार्श्वे पठनाय, ज्ञानप्राप्ताय पूर्णावसरः अस्ति। सः ममजीवने सफलभवितुं सहायतां करिष्यति। एतदावश्यकमस्ति यदहं स्वाध्ययनं सम्यक्रूपेण करोमि वा न। अकादमिकोत्कृष्टतायाः कृते मम प्रयासः एव महत्त्वपूर्णः अस्ति।

शिक्षा न केवल मुझे मेरे भविष्य के लिए तैयार करती है अपितु मुझे एक जिम्मेदार नागरिक बनने में भी मदद करती है,इससे मेरा समाज में योगदान रहेगा। अच्छी समझ से मैं एक प्रभावी नेता बन सकता हूँ जो समाज में एक सकारात्मक बदलाव की क्षमता विकसित करेगा।

इसके अलावा, एक युवा व्यक्ति के रूप में, सामाजिक न्याय के लिए लड़ना हो, पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देना हो या समान अधिकारों की वकालत करना हो, मुझमें बदलाव लाने की शक्ति है। यह महत्वपूर्ण है कि मैं अपनी आवाज का उपयोग बेहतर भविष्य की दिशा में करूँ। सकारात्मक बदलाव का पक्षधर बनकर, मैं दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित कर सकता हूँ और अपने समाज में एक लहर पैदा कर सकता हूँ।

मुझे एक जिम्मेदार नागरिक भी होना चाहिए। मैं अपना समय स्वेच्छा से देकर स्थानीय व्यवसायों का समर्थन करके राष्ट्रनिर्माण में योगदान कर सकता हूँ। ये कार्य छोटे लग सकते हैं, लेकिन इनका हमारे समाज पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है। अपने देश में मैं सहयोग की भावना को बढाकर लोगों में एकता की भावना पैदा कर सकता हूँ। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना हमारे शास्त्रों में पहले से ही निर्दिष्ट है-

"अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्" ॥

एक छात्र के रूप में, हमारे देश की प्रगति में मेरी भूमिका छोटी लग सकती है, लेकिन मेरा मानना है कि मेरे पास हमारे समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालने का एक अनूठा अवसर है। हमारे देश के भविष्य के रूप में, यह मुझ पर निर्भर है कि मैं उस दुनिया को आकार दूँ जिसमें मैं रहना चाहता हूं और एक प्रभावी भारतीय बनना चाहता हूँ जो बदलाव ला सके।

इसके अलावा, मेरा मानना है कि प्रौद्योगिकी हमारे देश की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। डिजिटल युग में एक छात्र के रूप में, मेरे पास सामाजिक समस्याओं के अभिनव समाधान बनाने के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने का अवसर है। नई तकनीकों का विकास करके और जलवायु परिवर्तन, गरीबी और असमानता जैसे मुद्दों को दूर करने के लिए उनका उपयोग करके, मैं हमारे समाज पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकता हूं। अन्य समान विचारधारा वाले व्यक्तियों के साथ काम करके, हम सहयोग कर सकते हैं और ऐसे समाधान तैयार कर सकते हैं जिनमें दुनिया को बदलने की क्षमता है।

प्रगति एक दीर्घकालिक लक्ष्य है, और इसके लिए निरंतर प्रयास और समर्पण की आवश्यकता होती है। यह जरूरी है कि मैं अपने मूल्यों के प्रति जागरूक रहकर अपने और दूसरों के लिए बेहतर भविष्य बनाने की दिशा में काम कर सकता हूँ। चुनौतियों को गले लगाकर, अपनी असफलताओं से सीखकर और कठिन समय में डटे रहकर, मैं अपने समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए दृढ़ संकल्प विकसित कर सकता हूँ। अपनी पढ़ाई को गंभीरता से लेकर, अपने विश्वास के लिए खड़े होकर प्रौद्योगिकी का प्रयोग करके, मैं दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित कर सकता हूँ और हम सभी के लिए एक उज्जवल भविष्य बना सकता हूँ।

युवानः स्वामिविवेकानन्दसदृशाः भवेयुः

सुमन ठाकुर
बी ए संस्कृत विशेष
(प्रथम वर्ष)

यदि पदानुसरणं कर्तुम् इच्छसि,
तर्हि विवेकानन्दम् अनुसरतु।
यदि कस्यचिद् इव भवितुम् इच्छसि,
तर्हि विवेकानन्दः इव भवतु ।।

देशभक्तिं निःस्वार्थसेवां च
शिक्षन्तु विवेकानन्दतः।
जीवनं जीवितुं इच्छन्ति यदि,
तर्हि जीवन्तु विवेकानन्दसदृशः ।।

'हे परमेश्वर ! सदा कुर्वन्तः,
निजराष्ट्रस्य सेवा।
युवा आदर्शं यदि पृच्छसि,
तर्हि विवेकानन्दं लेखिष्यामि ।।

न बहुलता वाक्यानां,
शब्दा: केवलं छन्दाः भवेयुः।
लेखनम् उन्मुक्तं भूत्वा
विवेकानन्दसदृशः भवेयुः ।।

जागरतु भारतस्य युवावर्गः,
भवन्तम् इतिहासं रचयितव्यम्।
प्राप्स्यसि अनन्तम् आनन्दम्,
केवलं सुप्तविवेकं युष्माभिः जागृतव्यम् ।।

(अनुवादित)

स्वामिविवेकानन्दः अद्यतन युवाश्च

दिनकर कुमार
संस्कृत विशेष
(तृतीय वर्ष)

अयं निजः परो वेति गणना लघु चेतसाम् ।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।

एषा उक्तिः कर्मयोगि स्वामिविवेकानन्दे चरितार्था भवति। स्वामिविवेकानन्दः महानाध्यात्मिकचिन्तकः आसीत्। तेषां सम्पूर्णजीवनं लोकहितार्थाय समर्पितमासीत्। सम्पूर्णविश्वेन तेषामुदारव्यक्तित्वस्य दर्शनं 1893 ईस्वीतमे वर्षे शिकागो-अमेरिकायां विश्वधर्मसभायां प्रदत्तभाषणेन ज्ञातवन्तः।

तेषामुद्बोधनमविस्मरणीयं भारतीयसंस्कृतेरुद्भावकः आसीत्। यदा स्वामिना धर्मसम्मेलने स्वोजस्विवक्तव्येन भाषणस्य प्रारम्भं एवं कृतम् - 'मेरे भाइयों और बहनों' तदैव सभागारः पञ्चनिमेषं यावत् करतलध्वनिना गुञ्जायमानः अभवत्।

स्वामी विवेकानंद जी का जन्म 12 जनवरी सन् 1863 ईस्वी को कोलकाता के एक सम्मानित कायस्थ परिवार में हुआ था। उनके बचपन के घर का नाम वीरेश्वर रखा गया किंतु उनका औपचारिक नाम नरेंद्रनाथ दत्त था। उनकी माता भुवनेश्वरी देवी ईश्वर भक्ति में पूर्ण विश्वास रखती थी, इसलिए बाल नरेंद्र नाथ की भी अध्यात्म को जानने और समझने की रुचि बढ़ती गई। शारीरिक दृष्टि से नरेंद्र हृष्ट-पुष्ट और शौर्यवान थे। वे कुश्ती,मुक्केबाजी, घुड़सवारी और तैराकी आदि कार्यों में निपुण थे। उनकी बुद्धि विलक्षण थी। स्वामी विवेकानंद बचपन से ही इस संसार को चलाने वाली सत्ता अर्थात् ईश्वर को जानने के जिज्ञासु थे, परंतु उनके मन के उलझनों को कोई भी सही ढंग से नहीं सुलझा पाया। अपने आध्यात्मिक खोज यात्रा पर निकले नरेंद्र नाथ का विचलन और तब तक दूर ना हुआ जब तक वे श्री रामकृष्ण परमहंस जी के सान्निध्य में नहीं आए। गुरु उपदेश पाकर के नरेंद्र का अज्ञान रूपी अंधकार मिट गया गुरु की कृपा से उनको आत्मसाक्षात्कार हुआ और वे अपने जीवन के उद्देश्य को जान पाए। परमहंस जी के उपदेश ने नरेंद्रनाथ के समस्त दोषों को उसी प्रकार दूर कर दिया जैसे चंद्रमा की शीतल ज्योति रात्रि के अंधकार को नष्ट कर देती है। हमारे शास्त्रों में भी गुरु वचन की महिमा का उल्लेख मिलता है। इस संबंध में महाकवि बाणभट्ट की पंक्ति उपयुक्त जान पड़ती है ।

'गुरूपदेशश्च नाम अखिलमलप्रक्षालनक्षमम् अजलं स्नानम्'

(शुकनाशोपदेश, कादंबरीकथा)

सन्यास लेने के बाद नरेंद्रनाथ, स्वामी विवेकानंद के रूप में जाने गए। गुरु के प्रति अन्य भक्ति और निष्ठा के प्रताप से स्वयं के अस्तित्व को गुरु के स्वरूप में विलीन कर सके। समग्र विश्व में भारत के अमूल्य आध्यात्मिक खजाने की सुगंध को फैला सके। उनके इस महान व्यक्तित्व की नींव में थी गुरु भक्ति,गुरु सेवा और गुरु के प्रति आदर।

स्वामी विवेकानंद केवल एक संन्यासी ही नहीं थे अपितु एक स्वतंत्रता सेनानी के रूप में भी उनका योगदान अमूल्य है। वह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरणा के स्रोत बने। उनका मानना था कि एक स्वाभिमानी, चरित्रवान और स्वावलंबी व्यक्ति ही अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ सकता है और एक श्रेष्ठ राष्ट्र का निर्माण कर सकता है। इसलिए सबको कर्म योगी बनने को कहते थे और तब तक अथक परिश्रम करने को कहते थे जब तक लक्ष्य की प्राप्ति ना हो जाए-

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत । (कठोपनिषद्)

स्वामी जी के जीवन का प्रत्येक अध्याय प्रेरणा पुंज के रूप में रहा। 31 वर्ष की अल्पायु में ही स्वामी जी जैसे युग पुरुष का प्रभु मिलन हो गया। वर्तमान समय स्वामी जी के जन्मदिवस को पूरे भारतवर्ष में युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

युवानां प्रेरणाश्रोतः - स्वामी दयानन्द सरस्वती

राज कुमार
तृतीय वर्ष (संस्कृत विशेष)

आधुनिके भारते समाजस्य शिक्षायाश्च महान् उद्धारकः स्वामी दयानन्दः । आर्यसमाजनामकसंस्थायाः संस्थापनेन एतस्य प्रभूतं योगदानं भारतीयसमाजे गृह्यते । भारतवर्षे राष्ट्रीयतायाः बोधोऽपि अस्य कार्यविशेषः अस्ति । समाजे अनेकाः दूषिताः प्रथा: खण्डयित्वा शुद्धतत्त्वज्ञानस्य प्रचार: दयानन्दः अकरोत् ।

एतेषां जन्म द्वादशदिनाङ्के फरवरीमासे 1824 तमे वर्षे मोरबीस्थाने गुजरातप्रदेशे ब्राह्मणपरिवारे अभवत्। एतेषां पितुः नाम श्री करसन तिवारी अथ च मातुः नाम अमृतबाई आसीत्।

मूलशंकर जब पाँच वर्ष का हुआ तब उसका अध्ययन प्रारंभ हुआ। आठ वर्ष की आयु में उसका उपनयन संस्कार सम्पन्न हुआ। 'सन्ध्यावन्दन' के समान धार्मिक कार्य वह बालक बड़ी लगन के साथ करता था। उसकी स्मरणशक्ति तीव्र थी। चौदह वर्ष की आयु में यजुर्वेद उपनिषद् एवम् अन्य ऋचाएँ उसे कण्ठस्थ हो गई थीं।

गृहत्याग

मूलशंकर के मन में 'जीवन क्या है? मृत्यु क्या है?'- ऐसे प्रश्न घूमने लगे। वह इन प्रश्नों के उत्तर जानना चाहता था। उसमें पारिवारिक बन्धन को त्यागने की लालसा जगी। इस लक्ष्यपूर्ति हेतु मूलशंकर ने गृहत्याग कर सद्गुरु की खोज में निकलने का निश्चय किया जो उसकी जिज्ञासा का समाधान कर सके। उसकी विरक्ति माता-पिता के ध्यान में आयी। उन्हें भय था कि कहीं मूलशंकर बैरागी बनने के लिये घर छोड़कर भाग न जाये। उन्होंने शीघ्र उसका विवाह करने का निर्णय लिया । वधु का चयन भी हो गया। विवाह की तैयारियाँ की जाने लगीं। मूलशंकर ने कोई विरोध नहीं किया। इससे माता-पिता ने समझा कि उनका बेटा विवाह के लिये उत्सुक है। परन्तु मूलशंकर के मन में गृहस्थ जीवन त्यागने का दृढ़ संकल्प हो चुका था।

एक दिन संध्या काल में मूलशंकर अपने घर से बाहर आकर अपने सुन्दर भवन की ओर कुछ क्षण देखता रहा। उसने विचार किया कि " मैं पुनः कभी भी इस घर में कदम न रखूंगा " , इसके पश्चात वह आगे बढ़ गया ।तब मूलशंकर की आयु केवल 21वर्ष थी।

गुरु की खोज

गृह त्याग के बाद, मूलशंकर ने गुरु की तलाश में अहमदाबाद, कानपुर और काशी की यात्रा जारी रखी। मूलशंकर ने कई स्थानों की यात्रा की और 14 नवंबर को मथुरा पहुंचे वहां उनकी मुलाकात बिरजानंद दंडिश से हुई। उन्होंने बिरजानन्द दंडिशा से ज्ञान प्राप्त किया।

अपने गुरु के आदेश पर, वे वैदिक ज्ञान के प्रसार के लिए यात्रा पर निकल पड़े।

स्वामी जी का कथन था - वेदों की ओर लौटो।

आर्यसमाज की स्थापना

स्वामी दयानन्द चाहते थे कि उनके सामाजिक सुधारों का कार्य उनकी मृत्यु के बाद भी चलता रहे। इसीलिए 10 अप्रैल 1875 को बम्बई में उन्होंने 'आर्यसमाज' की स्थापना की। इस संस्था के कार्यकलाप भारत में तथा विदेश में भी फलीभूत हुये। धीरे-धीरे यह संस्था बढ़ती गयी जिसका विस्तार भारत के बाहर भी हुआ। लाखों हिन्दू आर्यसमाज से प्रभावित हुए। अपने धार्मिक केंद्र, गुरुकुल, पाठशालाएँ. महाविद्यालय, महिला शिक्षण संस्थाएँ, अनाथालय एवम् महिलाश्रमों के सफल संचालन तथा समाजसेवा के विभिन्न क्षेत्रों में आर्यसमाज ने प्रशंसनीय भूमिका निभाई है।

सत्यार्थ प्रकाश

'सत्यार्थ प्रकाश' स्वामी दयानन्द की एक अनमोल देन है। इस महान ग्रंथ में १५ अध्याय हैं। इसमें वेदों का सत्यार्थ दिया है। इसीलिये उसे 'सत्यार्थ प्रकाश' कहा गया है जो पूर्णरूपेण वेदों पर आधारित है। इस ग्रंथ में स्वामी दयानन्द के सभी उपदेश सुस्पष्ट रीति से समझाये गये हैं। उन्होंने दर्शाया कि उनके उपदेशों का आधार वेद ही हैं।

स्वातंत्र्य -प्रेम

स्वामी दयानन्द का राष्ट्रप्रेम केवल शाब्दिक नहीं था। वह एक कर्मयोगी थे, साहसिक कार्य करने वाले व्यक्ति थे। 1857 का स्वातंत्र्य-समर असफल रहा। 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का जन्म हुआ। 1857 की असफलता से कांग्रेस की स्थापना तक भारतीयों के दिल में स्वातंत्र्य -प्रेम जीवित रखने वाले महापुरुषों में स्वामी दयानन्द निश्चित रूप से अग्रणी थे। उन्होंने भारत-भ्रमण करते हुये विभिन्न राजपुत्रों को एक जगह लाने का पूरा प्रयास किया। इसीलिये जोधपुर, उदयपुर और शाहपुर आदि स्थानों पर आर्यसमाज की शाखाएं स्थापित की। अनेक राजपुत्र उनके शिष्य बने। भारत से अंग्रेज़ो को खदेड़ने के लिये केवल सशस्त्र – क्रान्ति ही एक मार्ग है, यह स्वामी दयानन्द की

पक्की धारणा बन गई थी। इसीलिये उन्होंने सुपरिचित क्रान्तिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा को प्रेरणा तथा प्रशिक्षण पाने हेतु फ्रांस भेजा।

आर्यसमाज तथा गुरूकुलों में राष्ट्रभक्तों को सशस्त्र क्रांति के लिए मार्गदर्शन तथा प्रशिक्षण मिलता रहा। स्वामी श्रद्धानंद,भाई परमानन्द,लाला लाजपतराय और लाला हरदयाल जिन्होंने अंग्रेजों को देश से बाहर फौंकने के लिये जीवन -भर संघर्ष किया,वे सभी आर्यसमाजी थे। सुप्रसिद्ध युवा क्रान्तिकारी गेन्दालाल दीक्षित, रोशनलाल और रामप्रसाद बिस्मिल आदि सभी स्वयं को आर्यसमाजी कहने में गौरव का अनुभव करते थे।

महिला सशक्तिकरण

स्वामी दयानन्द सदैव एक ऐसे समाज के निर्माण के पक्षधर रहे जिसमें महिलाओं की पुरुषों के समान अधिकार व भूमिका का समावेश रहे। दयानन्द मानते थे कि अस्पृश्यता हमारे समाज के लिए भीषण अभिशाप है। प्रत्येक व्यक्ति को सम्मान व स्नेह मिलना चाहिये, चाहे उसकी जाति, समुदाय कुछ भी हो।

शिक्षा के अभाव के कारण कोई राष्ट्र प्रगति नहीं कर सकता. यह दयानन्द भली-भाँति समझते थे। वह पाश्चात्य शिक्षा पद्धति के अन्धाधुंध अनुकरण के विरुद्ध थे। उनकी दृष्टि में भारतीय मूल्यों व वैदिक सिद्धान्तों के आधार पर शिक्षा नीति का निर्माण करना ही श्रेयस्कर है जिसमें व्यक्ति का सर्वागीण विकास हो। आठ वर्ष की आयु वाले प्रत्येक बालक-बालिका को बिना सामाजिक भेदभाव के अनिवार्य रूप गुरुकुल से में भेजना चाहिये, जहाँ वे गुरू के साथ रहें। बालकों तथा बालिकाओं के लिए अलग-अलग गुरुकुल हों।

कर्मसिद्धान्तः श्रीमद्भगवद्गीतायाः आलोके

डॉ. तरुण कुमार दीप
(संस्कृत -विभाग)

मानवेन क्रियमाणं कार्यं एव कर्म इति कथ्यते । कर्म त्रिविधा भवति। शारीरिकं, मानसिकं वाचिकं च । शरीरमाध्यमेन क्रियमाणं कार्यं शारीरिककर्म, मनसा क्रियमाणं कार्यं मानसिकं कर्म, वाचा क्रियमाणं कार्यं वाचिककर्म इति कथ्यते। श्रीमद्भगवद्गीतां कर्मण: विस्तृतरूपेण वर्णनं अस्ति। कर्मण:सिद्धान्तं नियमं वा कर्मसिद्धान्त: इति कथ्यते। राष्ट्रस्य निर्माणे यूनां महती भूमिका वर्तते अस्मात् करणात् तै:विचिन्त्य एव स्वधर्मस्य पालनं करणीयम् ।

कर्म सिद्धान्त का वर्णन निम्नलिखित बिन्दुओं में किया जा सकता है -

1. कर्म की अनिवार्यता

मनुष्य को सदैव कर्म करना पड़ता है क्योंकि प्रकृति के तीनों गुण मनुष्य को कर्म करने के लिए सदैव बाध्य करते रहते हैं। कर्म न करना यह मनुष्य का अधिकार नहीं है। कर्म करना ही है इसलिए मनुष्य को सदैव सात्विक कर्मों को ही करना चाहिए। गुणों के अनुसार ही व्यक्ति कर्म करता है।गीता में कहा गया है –

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।

कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ॥3.5

जीवन के निर्वाह के लिए कर्म की अनिवार्यता है क्योंकि बिना कर्म के जीवन का निर्वाह नहीं हो सकता है-

नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः।

शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्धयेदकर्मणः ॥3.8

यह व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह किस प्रकार के कर्मों को करता है। ज्ञानी व्यक्ति सदैव सात्त्विक कर्म को करते हैं।

2. कर्मानुसार फलप्राप्ति

व्यक्ति जीवन में जिस का प्रकार के कर्मों को करता है उसे उसी प्रकार फल की प्राप्ति भी होती है। शुभ कर्म करने पर शुभ फल की प्राप्ति, अशुभ कर्म करने पर अशुभ फल की प्राप्ति होती है। कहा भी गया है-

कर्मणः सुकृतस्याहुः सात्त्विकं निर्मलं फलम् ।
रजसस्तु फलं दुःखमज्ञानं तमसः फलम् ॥14.16
अवश्यमेव भोक्तव्यम कृतं कर्म शुभाशुभम्' ।

व्यक्ति कर्म करे उसका फल उसे प्राप्त न हो, ऐसा संभव नहीं है। कई बार व्यक्ति को किए गए कर्म का फल शीघ्र नहीं मिलता है इस कारण व्यक्ति यह मान लेता है कि उसे कर्म का फल नहीं मिला। यह उचित नहीं है जो भी कर्म मनुष्य करता है उसे उसका फल अवश्य भोगना पड़ता है। यह कर्म का सिद्धांत है । इस नियम को ध्यान में रखकर सदैव सात्विक कर्मों को करना चाहिए तभी मनुष्य अपने मानवीय जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हो सकता है ।

3. कर्मानुसार शरीरप्राप्ति

व्यक्ति को अगले जन्म में कौन सा शरीर प्राप्त होगा, यह भी व्यक्ति के कर्म निर्धारित करते हैं। सात्त्विक कर्म करने पर मनुष्य शरीर की प्राप्ति होगी। तामसिक कर्म को करने पर उसे पशु,पक्षी आदि शरीर की प्राप्ति होती है । व्यक्ति की कर्म में प्रवृत्ति गुणों के अनुसार होती है। जैसे गुण होंगे वैसे कर्म व्यक्ति करेगा और जैसे कर्म करेगा उसे वैसे ही शरीर की प्राप्ति भी होगी। गीता में उपदिष्ट है –

पुरुषःप्रकृतिस्थो हि भुङ्क्तेप्रकृतिजान्गुणान् ।
कारणं गुणसङ्गोऽस्य सदसद्योनिजन्मसु ॥13.21

व्यक्ति यदि यह चाहता है उसे अग्रिम जन्म में मनुष्य शरीर की प्राप्ति हो तो उसे सात्विक कर्मों को करना चाहिए।

4. कर्म से उन्नति व अवनति-

कर्म से ही व्यक्ति की उन्नति व अवनति होती है। यदि व्यक्ति अपने जीवन में उत्कृष्ट कर्मों को करेगा तो वह देवत्व का प्राप्त करता है, और इसके विपरीत यदि व्यक्ति तामसिक, अधार्मिक कर्मों को करेगा तो उसकी अवनति होती है –

ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्था मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः ।
जघन्यगुणवृत्तिस्था अधो गच्छन्तितामसाः ॥14.18

जीवन में व्यक्ति जिस प्रकार के कर्मों को करता है उसको वैसे ही फल की प्राप्ति होती है । अत: व्यक्ति को अपने जीवन में सदैव शास्त्रोक्त कर्मों को ही करना चाहिए । शास्त्रोक्त कर्मों को करने पर ही व्यक्ति जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। सात्त्विक , ज्ञानी व्यक्ति सात्विक कर्मों करते हुए देवत्व को प्राप्त करते हैं। मूर्ख अज्ञानी व्यक्ति पाप-कर्मों को करते हुए निरंतर अधोगति को प्राप्त करते हैं। कर्म वह मार्ग है जिससे व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

5. सकाम कर्म से बन्धन

फल की कामना करके जो कर्म किए जाते हैं उन कर्मों को सकाम कर्म कहा जाता है।सकाम कर्मों को करने से व्यक्ति को बंधन में बंधना पड़ता है-

युक्तःकर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम् ।
अयुक्तः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते ॥5.12

मनुष्य अच्छे कर्म को करता है फिर उसका फल को प्राप्त करने के लिए उसे जन्म लेना पड़ता है। फिर जन्म मिलता है, इस प्रकार वह मृत्यु और जन्म इस बंधन में बंधा रहता है, उसे कभी भी मुक्ति की प्राप्ति नहीं होती है इसिलिए गीता में कहा गया है व्यक्ति को निष्काम कर्म करना चाहिए। निष्काम कर्म को करते हुए ही व्यक्ति मुक्ति को प्राप्त कर सकता है। निष्काम कर्म करने से वह बंधन में नहीं बंधता है। जैसा कि गीता में कहा गया है –

ब्रह्मणि आधाय कर्माणि संगम् त्यक्त्वा करोति यः ।
लिप्यते न सः पापेन पद्मपत्रम् इव अम्भसा ॥5.10

6. गुणानुसार कर्म में प्रवृत्ति

जिस प्रकार के व्यक्ति के अन्दर गुण होते हैं व्यक्ति उसी प्रकार के कर्मों को करता है। तीनों गुणों का अपना भिन्न-भिन्न स्वभाव होता है। यदि व्यक्ति के अंदर सात्त्विक गुण होगा तो व्यक्ति सात्त्विक कर्मों को करेगा।धार्मिक कर्मों में व्यक्ति का मन लगेगा। व्यक्ति भौतिक उन्नति के साथ आध्यात्मिक उन्नति के लिए भी प्रयास करेगा। यदि व्यक्ति के अन्दर रजो गुण होगा तो व्यक्ति सांसारिक कर्मों को ही करेगा, वह हमेशा भौतिक उन्नति के लिए प्रयासरत रहेगा। यदि व्यक्ति के अन्दर तमो गुणों की अधिकता होगी तो व्यक्ति अधार्मिक कार्यों को करेगा। तमोगुणी व्यक्ति आलसी, प्रमादी होते हैं। गीता में कहा गया है -

सत्त्वं सुखे सञ्जयति रजः कर्मणि भारत ।
ज्ञानमावृत्य तु तमः प्रमादे सञ्जयत्युत ॥14.9

गुणों के सुधार के लिए व्यक्ति को खान- पान पर विशेष ध्यान रखना चाहिए क्योंकि खान-पान के अनुसार व्यक्ति में गुण होते हैं ।इसलिए युवाओं को भी सात्त्विक अन्न का ग्रहण करना चाहिए क्योंकि उत्तम गुण होंगे तभी हम अपने जीवन में उत्तम कर्मों को कर पायेंगे। उत्तम कर्मों को करने से ही मानव जीवन का कल्याण हो सकता है।

7. कर्मफल की अनिवार्यता

व्यक्ति जीवन में जो भी कर्म करता है उसका फल उसे अवश्य भोगना पड़ता है। व्यक्ति कर्म करे और उसे उसका फल प्राप्त न हो यह संभव नहीं है। कर्म फल के प्राप्ति में कर्म के पीछे की भावना भी निमित्त बनती है। उदाहरण के लिए जैसे किसी को रुलाना पाप है लेकिन जब कोई माता अपने शिशु को साबुन से नहलाती है तब शिशु बहुत रोता है। यहाँ पर माता की भावना गलत नहीं है वह बच्चे को स्वच्छ, स्वस्थ रखने के लिए नहलाती है। उसका उद्देश्य बच्चे को कष्ट देना नहीं है अतः उसको इस कर्म का अनुचित फल प्राप्त नहीं होगा ।कभी कर्म का फल शीघ्र मिल जाता है तो कभी कर्म का फल विलम्ब से मिलता है। किन्तु यह निश्चित है कर्म का फल अवश्य मिलता है ।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता हैं कर्म के सिद्धान्त को कर्मसिद्धान्त कहा जाता है। कर्म के अनेक सिद्धान्त हैं । कर्म सबको करना पड़ता है। कर्म का फल अवश्य प्राप्त होता है। कर्म का फल कभी शीघ्र मिलता है कभी कर्म का फल विलम्ब से मिलता है। कर्मानुसार व्यक्ति को शरीर की प्राप्त होती है। गुणों के अनुसार कर्म में व्यक्ति की प्रवृत्ति होती है। कर्म से ही व्यक्ति जीवन में उन्नति एवं अवनति को प्राप्त करता है। सकाम कर्म बन्धन का कारण बनता है। निष्काम कर्म को करने से व्यक्ति कर्मफल के बन्धन से लिप्त नहीं होता है।

गुणत्रयस्य स्वरूपः प्रभावश्च (गीतायाः आलोके)

डॉ. कुलदीप सिंह
(संस्कृत विभाग)

सृष्टिकाले जीवस्य संयोगः त्रिगुणैः सह भवति। अवसरेऽस्मिन् शुद्धचैतन्यम् आत्मतत्त्वं स्वरूपेण मुक्तोऽपि गुणत्रयाणां संसर्गात् जीवत्वभावमाप्नोति। ते च गुणाः - सत्त्व-रजस्-तमसिति। सत्त्वं लाघवधर्मयुक्तं प्रकाशकञ्च। रजः प्रवृतिप्रयोजकम्। तमः गुरुत्वधर्मयुतम्। एषां गुणत्रयाणां स्वरूपमेव स्वात्मरूपमिति मत्वा कोऽपि जीवः अज्ञानवशादेव सुख-दुःखमनुभवति। अतः एषां गुणत्रयाणां प्रभावः कस्यापि मानवस्य चित्ते भवत्येव। यस्य मानवस्य चित्ते यस्य गुणस्याधिक्यं वर्तते, तदनुसारमेव तस्य संज्ञा अर्थात् सत्त्वगुणस्योद्रेकात् सतोगुणी, रजोगुणबाहुल्यात् रजोगुणी, तमोगुणस्याधिक्यात् तमोगुणी इति। गीतायां सत्त्वगुणस्य विकासाय प्रभूतं बलं दत्तम्। सत्त्वगुणस्य रूपद्वयम्- मलिनं शुद्धञ्च। मलिनसत्त्वगुणाधिक्यस्य प्रभावात् देहधारी जीवः लौकिकान् विषयान् स्पष्टतया अवगच्छति, तेषु विषयेषु अहं-ममत्वापि प्रकटयति च। तदेव मलिनसत्त्वं अभ्यासवैराग्यभ्यां यदा स्वस्मिन् विशुद्धावस्थायामागच्छति तदैव कल्याणमार्गहेतुः।

प्रकृति सत्त्व, रजस् एवं तमस् को उत्पन्न करती है। प्रकृति के तीनों गुण विभु हैं अर्थात् प्रत्येक वस्तु में पाये जाते हैं । ये तीनों क्रमशः सुख , दुःख और मोहस्वरूप हैं। सत्त्व का स्वभाव प्रकाश है । रजस् प्रवृत्त करने में समर्थ है इसलिए इसका स्वभाव क्रिया है । तमस् रोकने वाला है इसलिए इसका स्वभाव स्थिति है। ये तीनों गुण परिणामशील हैं । परिणाम का अर्थ है- "अवस्थान्तरापत्ति" अर्थात् पहले धर्म को छोड़कर किसी दूसरे धर्म को ग्रहण करना। जब तक ये तीनों गुण समानरूप में विद्यमान रहते हैं तब तक प्रकृति परिणत नहीं होती अर्थात् प्रकृति साम्यावस्था में स्थित रहती है, परन्तु जैसे ही इन तीनों गुणों का संतुलन बिगड़ जाता है वैसे ही प्रकृति में परिणाम आरम्भ हो जाता है और विकृति प्रारम्भ हो जाती है । परिणमित होने पर यह प्रकृति विचित्रात्मक जगत् का रूप धारण कर लेती है।

सत्त्वगुण-

तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयम्।
सुखसङ्गेन बध्नाति ज्ञानसङ्गेन चानघ ॥14.6॥

अर्थात् सत्त्वगुण प्रकृति का सर्वश्रेष्ठ गुण है। सत्त्वगुण निर्मल होने के कारण प्रकाशक एवं आरोग्यकर होता है। यह ज्ञान को उत्पन्न करता है, मनुष्य को सुख एवं ज्ञान की आसक्ति से बांधता है। मन को शुभ कर्मों की ओर प्रवृत्त करता है। ज्ञान, प्रकाश, शांति, विवेक आदि इसके लक्षण हैं। यह आत्मतत्त्व का भी बोधक है। सत्त्वगुण की प्रधानता वाले व्यक्ति या पदार्थ को सात्त्विक कहा जाता है।

रजस् गुण-

रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णासङ्गसमुद्भवम्।
तन्निबध्नाति कौन्तेय कर्मसङ्गेन देहिनम् ॥14.7 ॥

अर्थात् रजोगुण तृष्णा के प्रति आसक्ति होने के कारण उत्पन्न होता है। इसके लक्षण चंचलता और भोग-विलासिता हैं। रजोगुण प्रकृति का वह गुण है जो मनुष्य को कर्मों और फल की आसक्ति से बांधता है। रजोगुण का प्राधान्य होने पर देहधारियों में लोभ, प्रवृत्ति, कर्मों का आरम्भ, स्पृहा एवं अशान्ति उत्पन्न होती है। रजोगुण की प्रधानता वाले व्यक्ति या पदार्थ को राजसिक कहते हैं।

तमस् गुण-

तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्वदेहिनाम्।
प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्निबध्नाति भारत ॥14.8 ॥

अर्थात् तमोगुण अज्ञान से उत्पन्न होता है। यह मनुष्य को प्रमाद , गर्व , मोह, आलस्य एवं निद्रा से बांधता है। तमोगुण का प्राधान्य होने से देहधारी जीव पापकर्मों की ओर प्रवृत्त होता है। तमोगुण की प्रधानता वाले व्यक्ति या पदार्थ को तामसिक कहते हैं।

प्रत्येक मनुष्य में उक्त तीनों गुणों की स्थिति रहती है। मनुष्य में रजोगुण और तमोगुण के दबने पर सत्त्वगुण बढ़ने लगता है और जब वह मनुष्य सत्त्वगुण और तमोगुण को दबाने में समर्थ होता है, तो उसमें रजोगुण बढ़ता है। इसी प्रकार सत्त्वगुण एवं रजोगुण के दबने पर तमोगुण में वृद्धि होती है। मनुष्य में जिस गुण का प्राचुर्य होता है उस गुणाधिक्य के आधार पर उसे सतोगुणी, रजोगुणी या तमोगुणी कहते हैं।

आत्मप्रबन्धन की प्रक्रिया में सत्त्वगुण की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। "आत्मनः प्रबन्धनम् इति आत्मप्रबन्धनम्" । "आत्म" शब्द के दो अर्थ हैं- प्रथम; अन्तःकरण तथा द्वितीय; आत्मतत्त्व। अन्तःकरण को सुनियोजित करने, सुव्यवस्थित करने, नियन्त्रित करने या निर्मल करने की प्रक्रिया "आत्मप्रबन्धन" है और निर्मल हुए अन्तःकरण द्वारा परमात्मतत्त्व में सायुज्य प्राप्त करना ही आत्मप्रबन्धन का फल है।

मनुष्य अपने चित्त में सत्त्वगुण का विकास करके अपने जीवन को सफल बना सकता है। सत्त्वगुण का उद्रेक मनुष्य में ज्ञान, प्रकाश, लघुत्व, सन्तोष, तितिक्षा, शुचिता, सुख, अहिंसा, क्षमा, दया, मैत्री, स्नेह, विवेक, धैर्य, प्रसन्नता, शान्ति, अहिंसा, अनुशासन, सत्यनिष्ठा, कर्तव्य-परायणता, संतोष, शुचिता, समता, सहिष्णुता आदि दिव्य गुणों की प्राप्ति करवाने में सहायक होता है। सत्त्व की प्रधानता के कारण मनुष्य की केवल सत्कर्मों में ही प्रवृत्ति होती है। सत्त्वगुणी व्यक्ति दुष्कर्मों एवं उनसे होने वाले दुष्परिणामों से स्वयं को सुरक्षित कर लेता है। वह अपने मन एवं शरीर में संतुलन बनाने में भी समर्थ होता है। शारीरिक एवं मानसिक रूप से संतुलित व्यक्ति आधि एवं व्याधि से स्वयं को सुरक्षित कर लेता है।

सत्त्वगुण मनुष्य को केवल सुखानुभव ही प्रदान नहीं करता अपितु इसका एक विशिष्ट लाभ यह है कि यह साधना आदि के द्वारा जब अपने विशुद्ध स्वरूप में आ जाता है तब यही आत्मसाक्षात्कार का हेतु भी बनता है। सत्त्वगुण की विशुद्ध अवस्था को प्राप्त हो जाने की परिस्थिति में मनुष्य विवेकज्ञान से युक्त हो जाता है। अतः सत्त्वगुण के द्वारा मनुष्य केवल अपना कल्याण ही नहीं करता अपितु लोककल्याण एवं परहित के भाव से भावित भी रहता है। अतः सत्त्वगुणी बनने का प्रयत्न करना चाहिए।

इसके विपरीत रजोगुण मनुष्य के अन्तःकरण को चंचलता, भोग-विलासिता, द्वेष, उत्तेजना, उत्साह, आशा, महत्त्वाकांक्षा, प्रचण्ड-कर्मठता, असन्तोष, अशान्ति, काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकारादि दोषों से दूषित कर देता है। जिसके परिणामस्वरूप उसका दैनिक जीवन दुःख एवं कलेश से परिपूर्ण हो जाता है। रजोगुण के अत्यधिक चंचल होने के कारण उसका चित्त भी अत्यधिक चंचल बना रहता है। उसके विचार प्रतिक्षण परिवर्तित होते रहते हैं। संकल्प-विकल्प के कुसंग में पड़कर वह द्वन्द्व से घिरा रहता है। परिणामस्वरूप उसका मन निरन्तर शान्त नहीं रह पाता।

तमोगुण का प्राधान्य होने पर मनुष्य का शरीर भारी हो जाता है। वह आलस्य, निद्रा, गुरुत्व, उदासी, अनवधान, अकर्मण्यता, अविवेक एवं प्रमाद आदि विभिन्न तामसिक दुर्गुणों को प्राप्त करता है। तमोगुण के बढ़ने पर अज्ञान भी बढ़ता है और अज्ञानवश व्यक्ति कुकर्म एवं पापाचरण में संलिप्त हो जाता है। अतः रजस् एवं तमस् की निवृत्तिपूर्वक सत्त्वगुणी बनने का प्रयत्न करना चाहिए।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि रजस् एवं तमस् मनुष्य को दुःख एवं क्लेश से बांधते हैं, जबकि सत्त्वगुण ही सर्वोत्कृष्ट गुण है जिसका विकास कर मनुष्य अपने जीवन को सार्थक एवं सफल बना सकता है। अतः मनुष्य को सदैव सत्त्वगुण के विकास हेतु प्रयत्नशील रहना चाहिए। अभ्यास, वैराग्य एवं सात्त्विक-आहार आदि के द्वारा सत्त्वगुण का विकास सम्भव है।

राष्ट्रनिर्माणे युववर्गेषु गुणानामाधानमावश्यकम्

डॉ. योगेश शर्मा
(संस्कृत विभाग)

राष्ट्रम् एकं निश्चितं स्थानमस्ति यत्र वयं निवसामः, स्वजीविकायापनञ्च कुर्मः। एतत् स्थानं यदि सुरक्षितं न भवेत् तर्हि वयं सर्वे अत्र निवासं कृत्वा स्वेच्छानुसारेण स्वावश्यकतायाः वस्तूनां पूर्तिः कथं कर्तुं शक्नुमः? अतः अस्य स्थानस्य रक्षणार्थं, निर्माणार्थं, समृद्ध्यर्थं च सम्पूर्णदायित्वं मुख्यरूपेण राष्ट्रस्य युवजनानां स्कन्धोपरि भवति। राष्ट्रनिर्माणे युवजनानां योगदानेनैव राष्ट्रः उन्नतिपथे अग्रेसरति। भारतराष्ट्रस्य महत्वमभिलक्ष्य विष्णुपुराणे कथितम् -

गायन्ति देवाः किलगीतकानि,
धन्यास्तुते भारतभूमिभागे।
स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते,
भवन्तिभूयः पुरुषाः सुरत्वात्॥ (विष्णु पुराण 2/3/24)

देवा अपि भारतभूम्यां मनुष्यरूपेण स्वेच्छया अवतरन्ति अथ च अस्य भारतभूमेः मुक्तकण्ठेन गुणगानमपि कुर्वन्ति। अतः अस्माकं देशः पुण्यशाली, पवित्रः, धन्यश्चास्ति। वयं सर्वे धन्याः स्मः यतो हि अत्र अस्माकं जन्म अभवत्। समुद्रस्य उत्तरे अथ च हिमालयस्य दक्षिणे यद्देशमस्ति तस्य नाम भारतमस्ति। तस्य नागरिकाणां नाम भारती अस्ति। एतत् विष्णुपुराणे कथितमस्ति -

उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।

वर्षं तद्भारतं नाम भारती यत्र संततिः॥ (विष्णु पुराण 2/3/1)

भारत में जन्म लेने वाला प्रत्येक मनुष्य श्रेष्ठ होना चाहिए और हो भी क्यों न? क्योंकि हम सभी आर्य संतान हैं। आर्य का अर्थ ही श्रेष्ठ होता है अतः यहां के प्रत्येक निवासी का कर्तव्य है कि वह श्रेष्ठ आचरण करे।

राष्ट्र एक निश्चित भूभाग है जिसमें हम रहते हैं। यह स्थान यदि सुरक्षित ना हो तो हम सभी अपनी इच्छानुसार इसमें निवास करके अपनी आवश्यकता की वस्तुओं की पूर्ति नहीं कर सकते हैं। अतः इस स्थान की रक्षा, निर्माण व समृद्धि का दायित्व मुख्य रूप से राष्ट्र के युवाओं के कंधों पर ही होता

है। राष्ट्र के निर्माण में युवाओं के योगदान के कारण ही राष्ट्र उन्नति के पथ पर आगे बढ़ता है। जिस राष्ट्र के युवा शिक्षित, जागरुक, सशक्त, बुद्धिमान, ताकतवर व सजग होते हैं वही राष्ट्र उन्नति करके संपूर्ण विश्व में अपनी एक अलग पहचान बनाता है। प्राचीन काल से ही हमारे भारत राष्ट्र के उत्थान में अनेक युवा विद्वानों, युवा ऋषि - मुनियों, युवा ऋषिकाओं, युवा कारीगरों, युवा वीरों व युवराजों का एक विशेष महत्व रहा है जिसमें उन्होंने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। जैसे - श्रीराम, लक्ष्मण, कृष्ण, अर्जुन, भरत, प्रहलाद, मार्कण्डेय, चाणक्य, विवेकानंद, विरजानन्द, स्वामी दयानन्द, रानी लक्ष्मी बाई, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, तांत्या टोपे, राजगुरु, सुखदेव, भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस इत्यादि अनेकों अनगिनत महापुरूषों, महान् विचारकों, महावीरों व समाजसुधारकों ने सामाजिक,राजनैतिक और धार्मिक रूप से समृद्ध व शक्तिशाली राष्ट्र के निर्माण में अपना पूर्ण योगदान दिया है। ये सभी महान पुरुष पहले युवा ही थे इन युवाओं ने अपने युवावस्था काल में अकल्पनीय एवं महत्वपूर्ण कार्य किये जिसके कारण इन सभी को आज भी हम सभी श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हैं।

इन सभी महापुरुषों से युवाओं को कुछ शिक्षा लेनी चाहिए और अवश्य ही अपने जीवन में, व्यवहार में उतारनी चाहिए। युवाओं में कुछ गुणों का होना आवश्यक है जैसे कि शिक्षा, स्वाध्याय, संतोष, सत्संगति, परिश्रम, समयपालन, तप, ईश्वरप्रणिधान, सेवा भाव व राष्ट्र प्रथम इस प्रकार के गुणों व भावों को यदि यहां के युवा अपने मन मस्तिष्क में रखकर जीवन में उतारेंगे तो भारत निश्चय ही पूरे विश्व में अपनी एक अलग पहचान बनाएगा। यहां हम इसी प्रकार के कुछ गुणों की चर्चा करने जा रहे हैं जिससे युवाओं में मजबूती और दृढ़ इच्छा शक्ति पैदा होगी।

श्रेष्ठ आचरण हेतु युवाओं को शिक्षित होना आवश्यक है क्योंकि एक शिक्षित युवक को ही उसके अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों का भी ज्ञान होता है। तभी वह सही व गलत में अंतर करके सत्य का साथ देकर उसे स्थापित करने में अपना योगदान दे सकता है। यदि वह शिक्षित ही नहीं होगा तो उसे कोई भी मुर्ख बनाकर अपना स्वार्थ सिद्ध कर सकता है। हमारे यहां विद्या अध्ययन को बहुत महत्व दिया गया है विद्या ही है जिससे विनम्रता व योग्यता आती है। विनम्रता से पात्रता, पात्रता से धन, धन से धर्म व अंततः धर्म से सुख की प्राप्ति होती है। अतः यदि युवा अलौकिक व पारलौकिक सुख की इच्छा रखते हैं तो विद्या की प्राप्ति को महत्त्व देकर, सुखों का त्याग करके, उसे प्रयत्न पूर्वक प्राप्त करने का पूर्ण प्रयास करना चाहिए। कहा गया है-

विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम् ।
पात्रत्वाद्धनमाप्नोति धनाद्धर्मः ततः सुखम् ॥ (हितोपदेश 1.22)

सभी युवाओं को स्वाध्याय पर अधिक बल देना चाहिए क्योंकि स्वाध्याय से ही ज्ञान में वृद्धि होती है व ज्ञान दृढ़ भी होता है। इससे शिक्षा भी आती है और उसकी योग्यता भी बढ़ती है। इससे सभी प्रकार के कार्यों की सिद्धि होती है। वह ठीक प्रकार से सुख शांतिमय अपना जीवन यापन कर सकता है। इसमें ध्यान रखने वाली बात यह है कि स्वाध्याय से प्रमाद नहीं करना चाहिए। यदि उसने आलस्य किया तो वह अपने लक्ष्य की प्राप्ति से भटक जायेगा। अतः युवाओं के लिए स्वाध्याय नियमपूर्वक होना चाहिए। तैत्तिरीय उपनिषद् में कहा गया है -

स्वाध्यायान्मा प्रमदः । (तैत्तिरीयोपनिषद्, शिक्षावल्ली, अनुवाक् 11/1)

शुकनासोपदेश में विद्वान् राजगुरु शुकनास अपने राजा तारापीड़ के बेटे युवराज चन्द्रापीड़ के राज्याभिषेक के समय दिए गए उपदेश में कहते हैं -

गर्भेश्वरत्वमभिनवयौवनत्वमप्रतिमरूपत्वमानुषशक्तित्वञ्चेति महतीयं खल्व-नर्थपरम्परा। सर्वाविनयमानामेकैकमप्येषामायतनं किमुत समवायः । (शुकनासोपदेश, कादंबरीकथामुख)

शुकनास चन्द्रापीड़ को राज्याभिषेक से पहले युवराज के पद पर बिठाने के लिए सबसे पहले उसे उपदेश देते हुए कहते हैं कि तुम पहले से ही सभी शास्त्रों के ज्ञाता हो फिर भी तुम उपदेश देने योग्य हो। क्योंकि ज्ञानी व समझदार युवक के भी युवावस्था में भटकने व पतित होने के अनेक कारण होते हैं पर तुम तो राजकुमार बनने वाले हो अतः तुम्हें तो और अधिक सावधानी रखने की आवश्यकता है।

वस्तुतः अच्छे व धनी परिवार में जन्म लेना, युवावस्था का प्रारम्भ, अद्वितीय सुन्दरता और अलौकिक शक्ति सम्पन्नता आदि सभी, गुणों की श्रेणी में आते हैं परन्तु इनमें से एक गुण का दुरुपयोग करने से भी युवा मनुष्य का पतन हो सकता है। फिर यदि इनमें से कोई भी दो गुण एक साथ एक युवक में आ जाएँ और यदि वह अहंकारी होकर उनका अनियमित आचरण करे तो उसका पतन अधिक शीघ्र होगा। और यदि इनमें से सभी गुण यदि एक ही युवक के पास आ जाएँ तो कहना ही क्या? फिर तो यदि उसने स्वयं को सम्भालकर नहीं रखा तो उसके पतित होने का प्रतिशत और बढ जायेगा जिससे

वह निंदा का पात्र बन जायेगा। विशेषकर युवावस्था में पतन करने वाले कारणों और अनिष्टों से बचना चाहिए। अतः युवाओं को स्वोत्थान के लिए अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

हमारे देश में प्राचीन काल से ही युवाओं की शक्ति रही है। यदि युवा नहीं होते तो हम अंग्रेजों से स्वतंत्रता कैसे पाते? हमने युवाओं के कारण ही विदेशी आक्रांताओं बर्बर विदेशी जातियों, कबीलों से साहसपूर्वक सामना करके उन्हें रणभूमि में परास्त करके यहां से भगाया। युवाओं की शक्ति के कारण ही समाज में अनेक सकारात्मक परिवर्तन हुए जिसके कारण भारत उन्नति के पथ पर आगे बढ़ रहा है। राम मंदिर के निर्माण में भी युवाओं का अतुलनीय योगदान है। जिसे कभी बुलाया नहीं जा सकता है। युवा ही वह शक्ति है जो समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकती है। अच्छा और गुणी नागरिक ही समाज व राष्ट्र को प्रगति की ओर ले जा सकता है। किसी ने सही कहा है- युवा ऊर्जा से भरी नदी के समान है जिसके प्रवाह को एक सही दिशा दिखाने व मार्ग प्रदर्शन करने की आवश्यकता है।

इसी प्रकार के विचारों को ध्यान में रखकर स्वामी विवेकानन्द ने युवाओं के पथ - प्रदर्शन हेतु प्रेरणास्पद अमृत वचन कहा था - उठो, जागो और जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो तब तक रुको मत।

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्यवरान्निबोधत। (कठोपनिषद् 1/3/14)

स्वामी विवेकानंद ने राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका को महत्वपूर्ण माना है। उन्होंने युवाओं को जागृत किया व प्रेरणा भी दी इसीलिए वो युवाओं के प्रेरणा स्रोत माने जाते हैं। उनके बताए हुए मार्ग पर युवाओं को चलना चाहिए।

युवाओं को यदि उन्नति करनी है तो सबसे पहले अपने माता-पिता व गुरु की आज्ञा का पालन करना चाहिए। कहा गया है कि प्रथम गुरु माता होती है, द्वितीय गुरु पिता होते हैं और फिर जो आध्यात्मिक, सांसारिक व पारलौकिक ज्ञान प्रदान करते हैं वह गुरु की श्रेणी में आते हैं। अतः युवाओं को माता-पिता व गुरु इन तीनों को देवता के समान मानकर उनकी बातों का पालन करना चाहिए। जिससे उनकी सर्वविध उन्नति व विकास हो सके। कहा गया है-

माता परं दैवतम्। मातृ देवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव। (तैत्तिरीयोपनिषद्, शिक्षावल्ली, अनुवाक् 11/2)

युवाओं को अपने जीवन में सबसे ऊपर राष्ट्र को रखना चाहिए। यदि राष्ट्र रहेगा तो हमारा गाँव, शहर, समाज, कुटुंब - कबीला, राज्य आदि सभी बचा रहेगा। यदि राष्ट्र सुरक्षित नहीं रहेगा तो न तो हमारा परिवार, न समाज और न हम अर्थात् कुछ भी नहीं बचेगा। अतः स्वयं से ऊपर परिवार, परिवार से ऊपर समाज, समाज से ऊपर राज्य व राज्य से ऊपर राष्ट्र ही प्रथम होना चाहिए। यदि सभी युवा इस प्रकार के विचारों को अपने जीवन में धारण करेंगे तो अवश्य ही राष्ट्र सही दिशा में आगे बढ़ेगा। इससे राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका सही रूप में उभर कर आएगी जिससे भारत के स्वर्णिम भविष्य का निर्माण होगा। यही वह मार्ग है जिससे भारत विश्व गुरु के पद पर आसीन होगा।

निष्कर्षतः यहां का युवा संपूर्ण विश्व को अज्ञान और अंधकार से ज्ञान व प्रकाश की ओर लेकर जाएगा जिससे संपूर्ण विश्व में भारतीयों को विशिष्ट सम्मान की दृष्टि से देखा जाएगा। यहां के युवा संपूर्ण विश्व का ज्ञान के माध्यम से मार्ग प्रशस्त करेंगे अंततः संपूर्ण विश्व में शांति होगी यही हमारा लक्ष्य है।

(महर्षि वाल्मिकी)

हिंदी खण्ड

सम्पादकीय

कॉलेज पत्रिका नीलाम्बरा का वर्ष 2022-2023 का अंक आपके समक्ष है । इस वर्ष की नीलाम्बरा पत्रिका 'राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका' विषय पर केन्द्रित है इस विषय से संबंधित रचनाओं में विद्यार्थियों ने और कॉलेज परिवार के सदस्यों ने अपने भावों और विचारों की अभिव्यक्ति की है । राष्ट्र निर्माण का कार्य बहुआयामी होता है इसलिए रचनाओं में विषय की विविधता है ।

नीलाम्बरा को इस रूप में लाने के लिए प्राचार्य श्री रवीन्द्र गुप्ता जी का आभार। संपादक मंडल के सदस्यों प्रियंका चैटर्जी और योगेश शर्मा जी का विशेष आभार जिनके सद् प्रयत्नों से यह समय पर प्रकाशित हो सकी। उन सभी का आभार जिन्होंने इस पत्रिका के प्रकाशन में किसी भी प्रकार का सहयोग किया है।

डॉ. राजकुमारी पाण्डेय
हिन्दी विभाग

सिनेमाई बाजार में विकलांगता की नुमाईश: करुणा का बिकाउ फार्मूला

डॉ. अनिरुद्ध कुमार
सहायक आचार्य, हिंदी विभाग

करुणा और श्रृंगारिकता को भरपूर खूबसूरती के साथ ही तमाम विद्रुपताओं के साथ परोसने वाले हिंदी फिल्मकारों को विकलांगता कामधेनु लगती रही है जो दर्शकों की संवेदना को सिक्कों में ढालकर न केवल उनके खाते की जमा राशि को दस अंकों वाले आकर्षक क्लब में पहुँचा सकती है बल्कि संवेदनशीलता, सामाजिक जुड़ाव और ऑस्कर में नामांकन जैसे तमगे भी दिला सकती है। यह आजमाया हुआ नुस्खा है जिसे हिंदी फिल्मों ने कई बार अपनाया है। 2005 ई. में आई ब्लैक की सफलता ने इसकी हृदय बेधक क्षमता पर फिर से मुहर लगा दी तो एक बारगी हिंदी फिल्मकार इस फार्मूले को तरह-तरह के रंग में रंगकर बाजार में उतर पड़े। विविध मात्रा और स्वाद के साथ इकबाल (2005), गुजारिश (2020), माइ नेम इज खान (2020) बर्फी (2022) आदि नामों से विकलांगता से जुड़ी कहानियों को पर्दे पर उतारा गया। इन कहानियों के पात्र और घटनाओं की विविधता के आवरण को बेधकर मूल कथानक तक पहुँचने पर एक ही बुनियादी सूत्र हाथ लगता है। भारतीय दर्शक भीषण संघर्ष में जूझते नायक की जीत की कहानी देखना चाहते हैं। नायक का कमजोर लगना जरूरी है ताकि भीषण भावात्मक झंझावातों से तीन घंटे में दो-चार हो चुकने के बाद मिली जीत का स्वाद आश्चर्य की चटनी के साथ और भी मजेदार हो जाए। नायक कमजोर लगे इसके लिए सबसे सुविधाजनक रास्ता है उसे बीमार या विकलांग बना देना। गरीबी और सामाजिक उपेक्षा भी जुड़ जाय तब तो नायक करुणा पैदा करने का सफल यंत्र साबित होता है। ऐसे पराजित नायक के संघर्ष कर जीत हासिल करने की करामाती कहानी बचपन को खींचने वाले मदारी के बंदर की तरह दर्शकों को सिनेमाघरों में बार-बार ला बिठाने की ताकत रखती है। इस फॉर्मूले को लागू करने के लिए हिंदी फिल्मों ने बीसवीं सदी के नायक को लगातार ब्लड कैंसर या ब्रेन ट्यूमर या ऐसी ही किसी डरावनी बीमारी का शिकार बनाया था। 11 वीं सदी के आखिरी दशक तक भारत में विकलांग आंदोलनों से पैदा हुई चेतना ने समाज का ध्यान अपनी ओर खींचा तो फिल्मकार भी इस दिशा की ओर फिर से आकृष्ट हुए। बीमारी में नायक का मरना जरूरी सा हो जाता था और ऐसी हर फिल्म पिछले की याद दिला जाती थी। कुछ नया करने के लिए उत्साही फिल्मकारों ने इक्कीसवीं सदी में करुणा के व्यापार के

लिए सुविधाजनक रास्ते के रूप में कहानी में विकलांगता को शामिल कर सोने की चिड़िया तक पहुंचने की स्वेज नहर खोद ली।

फरवरी 2023 में आयोजित 85 वें ऑस्कर के लिए सर्वश्रेष्ठ विदेशी भाषा फिल्म की श्रेणी में भारत की ओर से आधिकारिक प्रविष्टि के रूप में भेजी गई फिल्म बर्फी (1922) विकलांगता को कुरकुरे की तरह परोसने की ताजी कोशिश है जिसमें दार्जिलिंग के मूक बधिर युवक मर्फी (बर्फी)जॉनसन दो लड़कियों श्रुति घोष और फिर झिलमिल चटर्जी के प्रेम की ओर उन्मुख घटनाओं के साथ हैरत और हास्य बिखेरता चलता है। बॉक्स ऑफिस के लिए इतना सामान भी पर्याप्त हो सकता था मगर लेखक और निर्देशक अनुराग बसु असफलता के द्वार पर दोहरा ताला जड़ते हुए दोस्ती की तरह का विविध विकलांगता वाला फारमूला अपनाते हैं। 38 करोड़ को 400 करोड़ में बदलने वाली फिल्म माई नेम इज खान के रिजवान की तरह ही झिलमिल मानसिक विकलांगता (ऑटिजम) से पीड़ित है और संप्रेषण में कठिनाई, कार्य-व्यवहार में दुहराव, सामाजिक कटाव आदि मुश्किलों से जूझती है। इतनी भिन्नता जरूर है कि रिजवान को ऐस्पर्जर सिंड्रोम (ऑटिज्म का एक प्रकार) होने का पता बहुत बाद में चला था। लेकिन झिलमिल बचपन से ही ऑटिज्म और अपने अमीर माँ-बाप की सामाजिक कुंठा का शिकार है। दिल को सुकून करने वाली हास्य-रोमांस से भरपूर माई नेम इज खान या बर्फी के सुखिया संसार से निकलकर विकलांगता के प्रस्तुतिकरण पर विचार करने पर यह समझना मुश्किल हो जाता है कि यदि विकलांगता न होती तो फिल्म की कहानी में बुनियादी रूप से क्या बदल जाता? आक्रोश जैसी फिल्म के गैर विकलांग संवाद रहित पात्र और बर्फी के मूक-बधिर होने के कारण संवाद रहित पात्र होने में क्या फर्क है? वास्तव में विकलांगता इन कहानियों में ऐसा कुछ भी नहीं जोड़ती है जिसके लिए उसे विकलांगों की सकारात्मक छवि प्रस्तुत करने वाली फिल्म के रूप में चिह्नित किया जाए। मूक-बधिरता और ऑटिज्म केवल प्रेम-रोमांस को नया स्वाद देने के मसाले हैं जिनका विकलांगता के आंदोलनों से पैदा हुई सकारात्मक चेतना से कोई सरोकार नहीं है। बर्फी की हरकुलिसिया हरकतों के पीछे की किसी प्रक्रिया को बताना एक मुश्किल डगर है जिसपर चलने के साहस का दर्शन हिंदी फिल्म में दुर्लभ है। मुश्किल यह है कि विकलांगता के मसाले से 30 करोड़ को 175 करोड़ में बदलने में सफल होने पर बर्फी जैसी फिल्में सकारात्मक विकलांगता के चित्रण के दावे के साथ कलात्मक और संवेदनात्मक श्रेष्ठता का पुरस्कार का दावा करने के लिए भेज दी जाती हैं। रेनमैन, एलिफैंटमैन, आई डोंट वांट टू टॉक एबाउट इट, जैसी अधुनातन विकलांगता चेतना से युक्त अंग्रेजी फिल्मों को देख चुके चयनकर्ताओं की कसौटी पर इन दावों के साथ गई बर्फी जैसी फिल्मों का पहले ही दौर में बाहर हो जाना स्वाभाविक परिणाम था।

विकलांगता फार्मूले के उन व्यवसायियों और उनके समर्थक अधिकारियों के लिए 2022 के सफलतम फिल्म की असफलता भी शायद ही एक सबक हो सके जो विकलांग व्यक्ति को देखते ही करुणा से द्रवीभूत होकर उनके जीवन यथार्थ को उसमें डुबो देते हैं। और जब दूसरा मार्ग पकड़ते हैं तो विकलांग पात्र उन्हें इतना जिंदादिल और जिजीविषा से पूर्ण दिखाई पड़ते हैं कि वे उसे हैरतजनक खतरों से खेलकर मजा लूटते, छठी इंद्रिय की अलौकिक शक्ति से युक्त, शब्दबेधी सामर्थ्य वाले बनकर अचूक निशाना मारते, भीख माँगकर भी दूसरे दुखियों का कल्याण करते आदि, आदि अलौकिक विभूतियों से युक्त देव बना देते हैं। हिंदी सिनेमा के अधिकांश विकलांग पात्र इन्हीं दो ध्रुवों पर रचे गए हैं। इसलिए जब ये फिल्में कुछ सकारात्मक संदेश देने की कोशिश करती हैं तो अपना ही मजाक बना बैठती हैं। मसलन बर्फी में मूक-बधिर युवक से विवाह न करने की सलाह देते हुए श्रुति की माँ कहती है- "बात सिर्फ पैसों की नहीं है। जो तू सुनना चाहेगी, वो बोल नहीं पाएगा और जो तू कहेगी वो सुन नहीं पाएगा ।... वो खामोशी ही धीरे-धीरे एक दिन तेरे प्यार को ही खामोश कर देगी। तू शायद उससे इशारों में बात कर भी लेगी। लेकिन दुनिया तुझे देख के इशारे करेगी।" विकलांगता की सकारात्मक छवि के दावेदार फिल्म के लेखक अनुराग बसु माँ के इस दावे को श्रुति के अनुभव के आधार पर गलत ठहराकर विकलांगता को बेहतर साबित करने की कोशिश करते हैं। श्रुति कहती है- "माँ ने कहा था कि बर्फी और मेरे बीच की खामोशी एक दिन हमारे बीच के प्यार को ही खामोश कर देगी। मैं और रंजीत बात तो करते थे पर दिल खामोश थे। हम शब्दों को सुनते थे पर उन्हें महसूस नहीं करते थे। हम हर लिहाज में पूरे थे मगर हमारा प्यार अधूरा था। बर्फी अधूरा था पर उसका प्यार पूरा था।" यह मजाक नहीं तो क्या था कि अनुराग की कलम त्वरित निर्णय ले सकने और समर्पित प्रेम करने वाले बर्फी की प्रशंसा करते हुए भी अधूरा कह रही थी और खामोश दिल वाले और किसी के खो जाने को अपने लिए मौके के रूप में देखने वाली पात्र द्वारा खुद और अपने ही जैसे पात्रों को पूरा कहलवा रही थी। अनुराग बसु बर्फी के प्यार की पूर्णता की तारीफ करते वक्त भी उसकी अपूर्णता को रेखांकित करना अनिवार्य समझते हैं। ठीक उसी तरह जैसे प्रेम की शब्दातीत भाषा समझाने के लिए बर्फी को जबर्दस्ती मूक और झिल मिल को मानसिक विकलांग बना देना उन्होंने जरूरी समझा। भारतीय फिल्म समीक्षकों और सितारादाताओं ने भी इस फिल्म से सबक लेकर विकलांगता को ध्रुवों से उतारकर हरी-भरी कोलाहल युक्त धरती पर लाने के बजाय इस उल्टे मार्ग की तारीफों के पुल बाँधे हैं। और इस तरह विकलांगता को प्रस्तुत करने का सही मार्ग बंद करने में ही योगदान दिया है। मसलन जी न्यूज के फिल्म समीक्षक रेशम सेंगर ने इस फिल्म से उन निर्माताओं को सबक लेने की सलाह दी

जो विकलांग चरित्रों को दब्बू और उबाऊ बनाते हैं। हालाकि मूल्यहीन अखबारी लेखन की जोर-शोर से जारी परंपरा निभाते हुए ऐसे किसी फिल्म और निर्माता का नाम लेना उन्होंने उचित नहीं समझा।

बर्फी के विकलांग पात्रों के प्रेम को उसके ही गैर-विकलांग पात्रों के प्रेम की तुलना में रखकर देखने के बजाय 1980 ई. में साई परंजपय द्वारा लिखित और निर्देशित फिल्म स्पर्श के विकलांग और गैरविकलांग पात्र के बीच के प्रेम के सामने रखने पर विकलांगता और प्रेम दोनों कसौटी पर बर्फी नितांत बनावटी और चिढ़ानेवाली लगती है। स्पर्श के नवजीवन अंध विद्यालय में कार्यरत दृष्टिबाधित प्राचार्य अनिरुद्ध परमार (नसीरुद्दीन शाह) में न बर्फी की सी अतिशय जिंदादिली है न ही दिल को परोसने की बेचैनी। हालाकि दिल जरूर है जिसमें 200 दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के हित की कामना और उन्हें स्वावलंबी बनाने के पुख्ता इरादे हैं। उसमें परावलंवी होकर सुविधाभोगी होने के खिलाफ एक ज्वलनशील आत्माभिमान है जो विकलांगता को करुणा का उत्स बना देने के खिलाफ सदैव सचेत रखती है। वह डॉक्टर के पास पहुँचने में आरंभ में ही मदद जरूर लेता है मगर उससे अधिक नहीं जितनी की जरूरी और स्वाभाविक है। वह कविता प्रसाद (शबाना आजमी) के मदद के प्रस्ताव को सधन्यवाद इनकार करता है। वह सहयोगी अध्यापक जगदीश से कहता है- "जानते हो जगदीश! जिस दिन मुझे ये लगेगा कि तुम्हारे बगैर मेरा काम नहीं चल सकता उस दिन तुम्हारी छुट्टी हो जाएगी।" वह कविता द्वारा बेचारे बच्चों को ज्यादा से ज्यादा कुछ सिखाने की बात पर कहता है- "एक छोटी सी अर्ज है। एक लब्ज आप जितनी जल्दी-से-जल्दी भूल जाएं उतना अच्छा होगा। बेचारा। हमें मदद चाहिए तरस नहीं। यहाँ के बच्चों की जिंदगी में एक बहुत बड़ी कमी जरूर है लेकिन उस कमी का बार-बार अहसास दिलाने से कोई फायदा नहीं।... अगर आप उन्हें कुछ देंगी तो वो भी आपको बहुत कुछ देंगें। किसी का किसी पर अहसान नहीं। कोई बेचारा नहीं।" यह फिल्म देखने वालों की दुनिया के समानांतर दृष्टिबाधितों की अपनी अलग दुनिया को रेखांकित करती है जिसमें मस्ती, शरारतें, दोस्ती, स्नेह, स्पर्धा सबकुछ है जरा सी भिन्नता के साथ। वे बोतल के ढक्कन से गेंद सा बनाकर क्रिकेट का मजा लेते हैं। नाटक खेलते हैं, दोस्त बनाते हैं, झगड़ा और कुश्ती करते हैं तथा ब्रेल के माध्यम से पढ़ाई करते हैं। उनकी समस्याएं भी अलग हैं और प्रेम की कसौटी भी भिन्न है। अनिरुद्ध दृष्टिबाधित तथा सामान्य बच्चे की दुनिया में पैदा खाई को रेखांकित करते हुए कहता है- "ब्रेल में सिर्फ टेक्स्टबुक छपती हैं। भूगोल, विज्ञान गणित इतिहास। लेकिन हल्की फुल्की कहानियों से दिल बहलाने वाली किताबें कितनी हैं ब्रेल में। क्या आप समझती हैं कि अंधे बच्चों को परियाँ और राक्षस और सिंदबाद और इसप्ट और टार्जम और मिकी माउस ये सब पसंद नहीं आते।" कविता से प्रेम हो

जाने पर वे एक उजाले को अपनाने के लिए सगाई कर लेते हैं। अनिरुद्ध कविता की सुंदरता की गोरा रंग, बड़ी आँखें, घने बाल आदि से अलग पहचान बताते हुए कहता है- "तुम्हारे बदन की, बालों की महक टुबुकमी है। इसलिए तुम सुंदर हो। निसिगंधा के फूल की तरह। और तुम्हारी आवाज बहुत स्पर्शी है इसीलिए तुम सुंदर हो; सितार के झंकार की तरह। और तुम्हारा स्पर्श बहुत कोमल है इसलिए तुम सुंदर हो;मखमल की तरह।" स्पर्श दृष्टिबाधितों के स्वाभिमान और स्वावलंवन का जीवन जीने की तीव्र जिजीविषा के साथ उसके पीछे के न्यूनता के गहन आत्मबोध को भी रेखांकित करता है और उनके प्रति न्यूनता के सामाजिक बोध को भी। कविता के साथ अनिरुद्ध के विवाह को जब मंजू का पति सुरेश कविता के त्याग और बलिदान के रूप में रेखांकित करता है और स्वयं कविता भी उसे अपना कर्तव्य बताती है तो अनिरुद्ध विवाह के नाम पर होने वाले त्याग रूपी एहसान को अस्वीकार कर देता है। वह कविता की सहेली मंजू से इसकी वजह बताते हुए कहता है- "जब से हमारी सगाई तय हुई मुझे ये अहसास होने लगा कि ये शादी नहीं यज्ञ होने जा रहा है जिसमें कविता आत्मबलिदान देने जा रही है, महान बनने जा रही है। और इस चक्कर में मुझे छोटे से छोटा बनाया जा रहा है।...एक अपाहिज से शादी करके वह शहीद होने जा रही थी।...वो मेरी सेवा करेगी। उसका सुंदर त्याग कभी खत्म नहीं होगा। यही रहेगी हमारे वैवाहिक जीवन की कहानी।"

स्पर्श ने बड़ी खूबसूरती से दो दुनिया के अंतर को दिखाने के साथ ही उसे समझदारी से पाटने के रास्ते को भी रेखांकित किया। कविता शीघ्र ही दृश्य के बदले ध्वनि, खुशबू और स्पर्श के महत्व को पहचानकर उन्हें दृश्यों के विकल्प के रूप में स्थान देना शुरू करती है। वह ब्रेल सीखती है और अंततः सगाई को तोड़ने वाला अनिरुद्ध पुनः मिलकर एक उजाला लाने के लिए उसके पास जाता है। हालांकि फिल्म कुछ स्थानों पर जबर्दस्ती संवादों के सहारे कुछ निष्कर्ष निकालने की कोशिश करती प्रतीत होती है। मसलन बेचारे शब्द पर प्रतिबंध लगाने वाले प्राचार्य द्वारा बेचारा शब्द कहलवाना संवाद में ठीक नहीं बैठता है और आगे के कुछ संवादों के लिए बनाई गई सीढ़ी सा लगता है जिसके सहारे लेखक ने दृष्टिबाधित व्यक्ति के न्यूनता के आत्मबोध को प्रदर्शित करने की चेष्टा की है। इसी तरह संबोधन के प्रति संवेदनशील प्राचार्य का नॉर्मल बच्चों का संवाद लेखक की समझदारी में मौजूद फाँक को चिह्नित करता है। अनिरुद्ध ब्रेल किताबों की समस्या को सामने रखते हुए कहता है- "नॉर्मल बच्चों के लिए हर रोज हजारों किताबें छपती हैं। और यहाँ मैं इसी इंतजार में रहता हूँ कि कब कोई नई किताब ब्रेल में छपे और कब मैं उसे अपने बच्चों के लिए खरीद लूं।" 1980 ई. तक विकलांगता आंदोलन वैश्विक स्तर पर जोर पकड़ने लगा था तथा 1975 में हुए समझौते के साथ वैश्विक स्तर पर

विकलांगता संबंधी नई चेतना वैश्विक स्तर पर प्रसारित हो रही थी। अपमानजनक या न्यूनता बोध कराने वाली भाषा चिह्नित कर प्रतिबंधित की जाने की शुरुआत हो गई थी ॥ ऐसे में एक सचेत प्राचार्य पर बेचारा और नॉर्मल जैसे शब्द आरोपित ही लगते हैं और लेखक की सीमा का संकेत करते हैं। बर्फी की श्रुति ने बर्फी और रिमझिम के प्रेम को पूर्ण माना था और स्पर्श की मंजू ने अनिरुद्ध से कविता के प्रेम को अलौकिक बताया। किंतु बर्फी जितनी असामाजिक, दुर्लभ और अस्वाभाविक लगती है स्पर्श उतना ही सामाजिक, संभव और स्वाभाविक। इसमें बर्फी की तरह न प्यार की सच्चाई परखने वाला कोई लिटमस है न ही एक साथ मरने की कसौटी।

1972 ई. में आई गुलजार द्वारा लिखित और निर्देशित फिल्म कोशिश स्पर्श की तरह ही विकलांगता को उसकी शक्तियों और संभावनाओं के साथ यथार्थ रूप में बेहद खूबसूरत मार्मिक और प्रेरणादायी ढंग से चित्रित करती है। स्पर्श की तरह ही यहाँ भी एक समानांतर दुनिया है जिसमें मूक-बधिर हाथों, इशारों और होंठ पढ़ना सीखकर अपनी निजी दुनिया का निर्माण करते हैं। मूक-बधिर युवक हरिचरण के बताने पर आरती की माँ दुर्गा उसे मूक बधिर विद्यालय में भर्ती करवाती है। वहाँ की शिक्षिका उससे इस समानांतर और उतनी ही मजेदार दुनिया का राज समझाते हुए कहती है- "आवाज के साथ तो नहीं बोल सकते ये बच्चे लेकिन ऊंगलियों के इशारों से बिल्कुल उसी तरह बात कर सकते हैं जैसे हम लोग दो होठों से बात कर सकते हैं। और खास तौर पर वो बच्चे जो आरती की तरह कुछ लिखना पढ़ना पहले से जानते हैं। इनके दो तीन कोर्स होते हैं पहला वो जो दो बेज़ुबान आपस में बोलते हैं। दूसरा वो जो ये लोग बोलने-सुनने वालों के साथ साथ बात-चीत करते हैं। तीसरा है लिप रीडिंग। यानि की आप जरा आहिस्ता बोलें तो आपके होठों से ये लोग लब्ज बना लेते हैं। और समझ जाते हैं।... उसने अपनी बीबी को हाथों की जुबान सिखा दी है और अब वो लोगों के सामने भी प्राइवेट बातें करते रहते हैं।" शिक्षिका दुर्गा को यह जरूरी नसीहत भी देती है कि- "इन बच्चों को ज्यादा सहारा भी नहीं देना चाहिए। इनपर तरस कभी न खाइए। इन्हें बिल्कुल ये महसूस न होने दीजिए कि इनमें कुछ कमी है इसलिए दूसरों से अलग बर्ताव किया जा रहा है। बल्कि जितना आम लोगों में घुलेंगें-मिलेंगें उतना ही अच्छा है।"कोशिश न केवल दो मूक-बधिर आरती और हरि के मिलने, प्रेम करने, विवाह करने और कठिन परिश्रम कर अपनी संतान को उच्च शिक्षा दिलाने तक के सफर की कहानी है। यह फिल्म दिलचस्प ढंग से उनके साथ दृष्टिबाधित नारायण अंकल के परिचय तथा संवाद को रेखांकित करते हुए संवाद का सर्वथा नवीन सूत्र संभव करती है मगर बर्फी या ब्लैक की तरह न कोई आरोपित मसाला है न अवास्तविक लगने वाला जीवन। जीवन को संपूर्णता में जीने की अदम्य कोशिश इस फिल्म को बेहद खास बनाती है।

समस्या यह है कि हिंदी की अधिकांश फिल्में बर्फी की तरह अस्वाभाविक उपकरणों के साथ विकलांगता को परोसने वाली कतार में शामिल हैं। संजय लीला भंसाली की ब्लैक (2005) और गुजारिश (2020) विकलांग पात्रों को हीरो के रूप में प्रस्तुत करने के लिए उन्हें बेहद मुश्किल स्थिति में डालकर कठिन संघर्ष में जीतते हुए दिखाती है। इसके लिए वह कई अस्वाभाविक मसाले का इस्तेमाल करती हैं जो इन कहानियाँ की सुर्खियाँ बनाने वाली क्षमता को बढ़ाती है मगर साथ ही विकलांग जीवन यथार्थ से बेहद दूर ले जाती है। यह दिलचस्प है कि उनके पात्र निम्न या निम्न मध्यवर्ग से नहीं आए हैं। इसलिए आर्थिक समस्या की चिंता, जो की विकलांग पात्रों को दोस्ती (1964) जैसी फिल्मों में भिखारी बना रही थी, इन्हें नहीं थी। 21वीं सदी की विकलांग चेतना के नए दौर में विकलांग पात्र को भिखारी बनाकर नायक बनाने की कहानी कहना अस्वाभाविक हो उठा था। विकलांगों के संघर्ष, शिक्षण और सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने के इस दौर में संजय ने विकलांगता से उबरने और मुश्किलों के बीच जिंदादिल रहकर प्रेरणा-स्रोत बनने की कहानी चुनी। ब्लैक की मिसेल मैकनली वास्तव में प्रसिद्ध अमेरिकी दृष्टिबाधित -बधिर आचार्य, समाजसेवी और राजनीतिक विचारक हेलेन केलर की कहानी है जो 19 माह की अवस्था में पेट और मस्तिष्क की बीमारी (शायद स्कार्लेट फीवर या मेनिंजाइटिस) के कारण मूक-बधिर और दृष्टिबाधित हो गई। वह तब केवल अपने परिवार के रसोइए की 6 वर्षीए बेटी के सहारे ही कुछ कह पाती थी जो कि उसके इशारों को समझती थी। उसकी माँ ने चार्ल्स डिकेंस की एक दूसरी बधिर-दृष्टिबाधित महिला लोरा ब्रिजमैन की सफल शिक्षा पर लिखे नोट्स से प्रभावित होकर बधिर बच्चों पर काम करने वालों से प्रायः मिलती रही। अंततः पर्किंस स्कूल फोर दि ब्लाइंड की पूर्व दृष्टिबाधित छात्रा 20 वर्षीय ऐन सुलिवन के ६ वर्षीय हेलेन के प्रशिक्षक बनने के रूप में उनकी तलाश पूरी हुई। ऐन हेलेन के लिए गुड़िया लाई और उसकी हथेली पर डॉल लिखा। हेलेन वस्तुओं को स्पर्श कराने के साथ हथेली पर कुछ किए जाने से परेशान हो उठी मगर लगातार कोशिश के बाद अगले महीने तक पानी छूने के साथ हथेली पर सुलिवन कुछ उकेरने के संबंध को वह पहचान गई। 2 वर्षों में बहुत सी वस्तुओं का नाम सीखने के बाद 8 वर्षीय हेलेन सुलिवन के संरक्षण में पर्किंस स्कूल फोर दि ब्लाइंड में दाखिल हुई। 14 वर्ष की अवस्था में वे ह्युमेसन स्कूल फोर दी डेफ में दाखिल हुई। इस ठोस जमीन की तैयारी के बाद हेलेन मैसाचुसेट्स के कैंब्रिज स्कूल फोर यंग लेडी आदि संस्थानों में पढ़ते हुए 24 वर्ष की अवस्था तक वह रैड क्लिफ से स्नातक होने वाली पहली बधिर दृष्टिबाधित बन गई। बाद में पत्रों के अलावा उसने संप्रेषण के लिए बोलना और होठों की गति के सहारे बातों को समझना भी सीख लिया। वह पूँजीवाद विरोधी वामपंथी विचारधारा के निकट तथा मजदूरों, स्त्रियों और विकलांगों के अधिकारों की बड़ी प्रवक्ता बनी तथा बहुत से देशों में निरंतर व्याख्यान दिए और किताबें लिखी।

ब्लैक में आकर हेलेन की कहानी जिस रूप में बदली गई वह रोचक है तथा तमाम गंभीरता के बावजूद हिंदी सिनेमा की फार्मूलाबाजी और विकलांगों के प्रति संकुचित दृष्टि का परिचायक है। हेलेन के विकास की कहानी में दृष्टिबाधित, बधिर और उनकी शिक्षण संस्थाएं लगातार शामिल है लेकिन मिशेल की कहानी में इनका कहीं पता नहीं है। लगातार 49 वर्षों तक साथ रहकर हेलेन के शिक्षण-प्रशिक्षण में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली दृष्टिबाधित सुलिवन का सारा श्रेय गैर विकलांग पात्र देवराज सहाय को दे दिया गया और भी मसालेदार बनाने के लिए उसे अल्जाइमर से पीड़ित बनाया गया और हेलेन को उससे प्यार का अर्थ जानने को आतुर दिखाया गया। ब्लैक में आकर विकलांगों के सामूहिक संघर्ष को मिटाकर व्यक्तिगत नायकत्व में बदला जाता है साथ ही उनकी क्रांतिकारी भूमिका समाप्त कर दी जाती है। मिसेल हेलेन की ताकत से लैस होकर भी उसकी तरह मजदूरों, स्त्रियों, और विकलांगों के अधिकारों के लिए समर्पित कार्यकर्ता वाली भूमिका खो देती है। इसके विपरीत वह अपने प्रशिक्षक से प्रेम की भावना में और उसे प्रशिक्षित करने में लग जाती है। यह कितनी मुग्धकारी कल्पना है कि याददाश्त खो चुके प्रशिक्षक के प्रशिक्षण की शुरुआत भी हाथ पर पानी गिरने के साथ सीखे पहले शब्द पानी के रूप में ही होती है। मगर इन सारे शिल्पगत और संरचनागत वैभव के बावजूद यह सवाल जेहन पर बिंधा रह जाता है कि विकलांगता की सामाजिक उपयोगिता की भूमिका को सीमित करना हिंदी सिनेमा लेखकों निर्देशकों और निर्माताओं को अनिवार्य क्यूँ लगता है?

मिसेल के बाद संजय लीला भंसाली ने भरपूर जिजीविषा लेकर 12 वर्षों तक रेडियो जॉकी के रूप में लगातार लोगों को खुशियाँ बाँटने वाला विकलांग पात्र एथेन मैस्करेन रचा जो लकवाग्रस्त होने से पहले सफल जादूगर था। मगर इस बार ब्लैक के खिलाफ संघर्ष नहीं बल्कि पराजय की अनूभूति के साथ आत्महत्या की गुजारिश थी। हेलन की कहानी से क्रांतिकारी तथा सामाजिक उपयोगिता परक तत्वों को निकालने के बाद उन्होंने स्टीवन हॉकिन्स की तरह जिजीविषा से भरपूर एथेन को 12 वर्षों तक खुशियाँ बाँटते दिखाया मगर फिर अंततः मृत्यु के लिए गुजारिश करते हुए पात्र के रूप में चित्रित किया। 70 साल के बाद अपने गालों की पेशियों पर से भी नियंत्रण खो देने के कारण एक मिनट में मशीन के सहारे 5 शब्द बोल पाने तक सीमित हो गए हॉकिन्स की अदम्य जिजीविषा तथा निरंतर भौतिक विज्ञान की गुत्थियों से उलझते रहने की कहानी के बदले बारह साल तक दुनिया को खुशियाँ देने के बाद मृत्यु का अधिकार माँगने की कहानी को दिलचस्प रोमांस की चाशनी में डुबोकर परोसा गया। विकलांग पात्र को नायक तो बनाया गया किंतु नायकत्व की दिशा जरा सी चूक गई। इसलिए फिल्म को प्रशंसा और पुरस्कार तो बहुत मिला मगर दर्शकों को बात समझ नहीं आई और निर्माताओं को सौदे में घाटा उठाना पड़ा।

आम सामाजिक धारणा विकलांग पात्रों को बेकार समझने की है। विकलांग चेतना के नए दौर में यह धारणा टूटी है मगर अभी भी इतनी नहीं की मान लिया जाय कि विकलांग खतरनाक आपराधिक कार्यवाइयों में संलिप्त हो सकते हैं। इसलिए विकलांगों को ऐसी कार्यवाइयों में सफल होते दिखाना फिल्म का एक सनसनीखेज विषय हो सकता है और थोड़े इंतजाम के साथ इसे वास्तविक रूप दिया जा सकता है। निर्देशक विपुल अमृतलाल शाह ने आतिश कपाड़िया के साथ मिलकर 2002 में आई आँखें फिल्म में इसी कथानक को फिल्माया। विकलांगता की इस नुमाईश ने एक ऐसी काल्पनिक दुनिया रची जिसका स्पर्श की दो दुनिया में से किसी से भी वास्ता नहीं था। इसमें दर्शकों के लिए एक सनसनी थी किंतु विकलांगों की भीतरी दुनिया और बाहरी दुनिया पर यह फिल्म एक नकारात्मक वास्तविकता को आरोपित करने की कोशिश कर रही थी। 2005 ई. में सुभाष घई द्वारा निर्देशित और विपुल के रावल द्वारा लिखित फिल्म इकबाल आँखें की तरह विभिन्न औजारों के सहारे नकारात्मकता को वास्तविकता में बदलकर सनसनी के सहारे विकलांगता को भुनाने की कोशिश करने के विपरीत सकारात्मक कहानी कहने की कोशिश कर रही थी जिसका वास्तव में विकलांगता से कोई खास सरोकार नहीं था। यदि इकबाल बोलता तो भी कहानी में परिवर्तन नहीं होता भले ही कुछ दृश्य और संवाद बदल जाते। बर्फी और माई नेम इज खान की तरह इसमें भी नायक की विकलांगता सहानुभूति अर्जित करने की अरुचिकर कोशिश ही लगती है। इकबाल का अपने मूक होने से उत्पन्न स्थितियों के साथ कोई संघर्ष नहीं है बल्कि उसका सारा संघर्ष एक गरीब किसान के बेटे के राष्ट्रीय क्रिकेट टीम में शामिल होने को लेकर है। इकबाल के मूक होने ने मूक व्यक्ति के जीवन संघर्ष को भले ही अनदेखा किया लेकिन 70 लाख की कहानी से 45 करोड़ जरूर बना दिया।

हिंदी सिनेमा में बर्फी, माइ नेम इज खान, इकबाल, खामोशी जैसी कहानियों की ही फेहरिश्त लंबी है स्पर्श और कोशिश जैसी कहानियों की नहीं। और ब्लैक जैसी कहानियाँ भी कम ही बनी हैं। अर्थात् ज्यादातर कहानियों में विकलांगता के सहारे दर्शकों की सहानुभूति अर्जित करने की सुविधाजनक कोशिश ही सामने आती है। 1981 ई. में आई शक्ति सामंत द्वारा निर्देशित और शक्तिपदा राजगुरु द्वारा लिखित बरसात की एक रात में रजनी की दृष्टिहीनता ऐसा ही एक उदाहरण है। अभिजीत रजनी से उसकी दृष्टिहीनता को देखकर दुःखी होने के प्रश्न पर कहता है- "जिंदगी की इतनी बड़ी नियामत खोने के बाद भी आपने अपने जीवन में कभी अँधेरा नहीं आने दिया। हँसी खुशी सब कुछ अपना लिया। किसी से कोई शिकायत नहीं की।" कालीराम द्वारा रजनी के साथ बलात्कार के प्रयास के बाद उसकी बदनामी के बीच भी अमिताभ उसके साथ विवाह करने का प्रस्ताव करते हुए

उससे प्यार होने की बात बताता है। रजनी अपनी दृष्टिहीनता के अभिशाप को अभिजीत पर थोपने से मना करती है और तब अभिजीत कहता है- "ना तुम्हें पाना अभिशाप नहीं रजनी। ये तो मेरा सौभाग्य है।"

बरसात की एक रात की तरह अधिकांश हिंदी सिनेमा में बहुत पहले से ही विकलांग पात्र वास्तव में नायक की वीरता, उदारता और मानवता को प्रकाशित करने का माध्यम बनाए जा रहे थे। यह रोमांस इन फिल्मों की टिकट खिड़की पर भीड़ जुटाने में सफल हो रहा था। यही कारण था कि सभी प्रमुख हिंदी अभिनेताओं तथा अभिनेत्रियों ने इस तरह के चरित्र को स्वीकार कर अपनी चमक और मूल्य में इजाफा किया। विकलांग या बीमार चरित्रों का अभिनय दूर से पीड़ा में शामिल होने का सुखियापन था जिससे बिना कष्ट झेले विजय और सहृदयता के भावबोध को तृप्ति मिलती थी। इस तृप्ति भाव में गिने-चुने निर्माताओं, लेखकों और कलाकारों ने ही इस ओर ध्यान देने की जहमत उठाई कि दूर से पीड़ा भोग का सुख उठाने वालों की भीड़ से इतर सचमुच विकलांगता की स्थिति में शामिल लोगों पर इस रवैये का क्या असर होगा? विकलांगता को शामिल करने वाली फिल्मों से इतना लाभ जरूर हुआ कि विकलांगों के प्रति नकारात्मक सामाजिक दृष्टि का बार-बार पर्दाफाश हुआ और उनपर करुणा करने वाले पात्रों ने भी जब सहानुभूति के बजाय प्रेम के आधार पर उन्हें अपनाया तो विकलांगों की सामाजिक स्वीकृति को बढ़ावा मिला। यद्यपि यह दिशा गलत थी मगर बरसात की रात, अंकुर, आँखें, गुजारिश, बर्फी आदि फिल्मों की धारणाओं के साथ स्पर्श, कोशिश और कुछ हद तक ब्लैक जैसी फिल्मों की स्थापनाओं को रखकर देखें तो करुणा के बाजार की नुमाइश में भी एक सकारात्मक बदलाव और विकास की झलक मिल जाती है।

(टिप्पणी: यह लेख मूलतः 2013 ई. में 'इस्पातिका' के सिनेमा विशेषांक में प्रकाशित हुआ था जिसमें 2012 में आई फिल्म 'बर्फी' को प्रस्थान बिंदु बनाया गया था।)

"उत्साहित मन"

उमेश शर्मा
पुस्तकालय सहायक

किसी भी काम को बेमन से करने से कुछ भी उपलब्ध नहीं होता इसलिए तो कहा गया है कि – "जो खोजा तिन पाइयां, गहरे पानी पैठ" किसी भी काम की गहराई में जाने पर ही कार्य सिद्ध हो सकता है। किनारे पर बैठे-बैठे देखते रहने से तो कुछ प्राप्त होने वाला है नहीं। अतः जिस काम को अन्य कोई साधन संपन्न नहीं कर सकता। उसे उत्साह पूरा कर देता है, उत्साह एक ऐसी भावना है, जो हमें नए दृष्टिकोण और नई सोच की ओर ले जाती है। यह हमारी सोच को परिवर्तित करती रहती है और हमें नए समृद्ध जीवन की ओर ले जाती है। जिससे हम किसी भी काम को करने के लिए कमर कसकर तैयार हो जाते हैं। यह हमारे जीवन में गति उत्पन्न कर देता है, साथ ही हमें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता है। उत्साह की कमी के कारण हमें अपने काम को अधूरा छोड़ देना पड़ता है।

उत्साह से तात्पर्य हमारी इच्छा शक्ति और उमंग से होता है। जो हमें एक कार्य को पूरा करने के लिए प्रेरित करता है। यह हमें सकारात्मक सोच की ओर ले जाता है। जिस काम को अन्य कोई साधन संपन्न नहीं कर सकता। उसे उत्साह पूरा कर डालता है। जैसे कि मैंने अपने विद्यार्थी जीवन में देखा है - हमारे साथ हमारा एक मित्र जिसका नाम सुंदर था, बहुत ही उत्साहित लड़का था जब हम किताबें रखकर आधे-अधूरे मन से कुछ पढ़ा करते थे, तो वह खेलकूद में अपना समय व्यतीत करता था। अक्सर पूरे-पूरे दिन वह खेलता रहता था या इधर-उधर घूमता-फिरता रहता था। उसी में अपना समय गुजारता था किन्तु जब हम रात में मीठी-मीठी नींद का आनंद लिया करते थे तो वह पूरे उत्साह के साथ अपनी पढ़ाई में लीन रहता था। यहां तक की उसे यह भी होश नहीं रहता था कि उसके आसपास क्या हो रहा है। किस विद्यार्थी के खर्राटे उसे परेशान कर रहे हैं, उसे कुछ ज्ञात नहीं होता था। केवल पढ़ाई में लीन रहता था। परीक्षा का परिणाम आने पर सभी दोस्तों को आश्चर्य होता था कि घूमने-फिरने व खेल-कूद में अपना समय बिताने वाला, वह लड़का परीक्षा में प्रथम स्थान कैसे पा लेता है? बहुत समय के बाद ही हम सभी दोस्त उसकी सफलता का रहस्य समझ पाए ! यह सब काम उत्साह एवं दृढ़ इच्छा शक्ति के द्वारा ही किए जाते हैं। अतः हमें अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ उत्साह को भी बनाए रखना चाहिए। विद्यार्थी जीवन में अक्सर कहा जाता है कि अरे, हां यह बात मेरे दिमाग में तो है ! इसको करने के बारे में मैं सोचूंगा ! देखो, यदि हो सका तो करने की चेष्टा करूंगा ! या मैं यह काम कर तो रहा हूं, पर हो नहीं पा रहा

इस तरह के बहाने हमारे सामने आते हैं। इसमें सबसे बड़ी वज़ह, उत्साह की कमी की होती है। ऐसे ढुलमुल इरादों वाले व्यक्ति कभी किसी काम को कर ही नहीं सकते क्योंकि जब उनकी ज़बान में ही दृढ़ता नहीं है तो काम में कहां से पैदा होगी।

इस संबंध में एक छात्र का उदाहरण बहुत ही रोचक है - जब वह दसवीं की परीक्षा दे रहा था तो कहा करता था कि यह गणित ही मेरे लिए जानलेवा बन रहा है, नहीं तो मुझे, फर्स्ट डिवीजन आने में कोई नहीं रोक सकता ! खैर, किसी तरह से दसवीं पास हुई तो 12वीं में गणित के स्थान पर कंप्यूटर साइंस जोकि नया विषय था ले लिया परंतु उसमें भी मन नहीं लगा। 12वीं पास करने के बाद बी.ए. में प्रवेश लिया तो इतिहास विषय चुन लिया। अब तो इतिहास विषय में भी कठिनाई आने लगी कहने लगा कि इतिहास तो गणित और कंप्यूटर साइंस से भी कठिन है क्योंकि इसमें सन्/संवत को मैं हमेशा ही भूल जाया करता हूँ। किसका बेटा कौन है? कौन सा युद्ध कब लड़ा गया? कहाँ लड़ा गया? कुछ याद ही नहीं रहता। मैंने इस इतिहास विषय को लेकर बहुत बड़ी गलती कर दी। यदि मैं यह विषय नहीं लेता तो अवश्य ही प्रथम श्रेणी से पास हो जाता। खैर, जैसे-तैसे बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की तो एम.ए. करने की सोची। लगा कि बचपन से अंग्रेजी विषय पढ़ा है तो एम.ए.(इंग्लिश) तो आसानी से कर ही लूंगा। अब तो उसे अंग्रेजी साहित्य में भी कठिनाई आने लगी कहने लगा कि दुनिया में अगर कोई कठिन विषय है तो वह अंग्रेजी ही है। यह विषय तो मुझे कहीं का नहीं छोड़ेगा, इतनी कठिन भाषा, नाटक, कविता, उपन्यास सब के सब मेरे सर के ऊपर से निकल जाते हैं। कुछ समझ में नहीं आ पाता। अगर मैं फेल हुआतो अंग्रेजी के कारण ही होऊँगा। अच्छे मनुष्य को अपने अंदर की कमी को पहचानने में समय लग जाता है तथा उसे कठिन परिश्रम से बच निकलने का बहाना मिल जाता है। यह सब उत्साह की कमी के कारण ही होता है। यदि कठोर परिश्रम किया जाए और सच्ची लगन व इच्छाशक्ति से कार्य किया जाए तो कठिन से कठिन कार्य को भी सरल बनाया जा सकता है।

आज के युग में इसका सबसे बड़ा उदाहरण क्रिकेट का भगवान कहे जाने वाले सचिन तेंदुलकर का हो सकता है क्योंकि उनमें सच्ची लगन व उत्साह था। मात्र 16 वर्ष की उम्र में उनका चयन भारतीय टीम में हो गया था। उन्होंने 24 साल तक क्रिकेट खेला, साथ ही क्रिकेट के सभी फॉर्मेट में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर अपने कैरियर के विभिन्न रिकॉर्ड बनाए। वहीं सूर्यकुमार ने 32 वर्ष की उम्र में भारतीय क्रिकेट टीम के लिए T20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण किया और अपनी योग्यता को सिद्ध किया। यह सब इन खिलाड़ियों की सच्ची लगन, परिश्रम और उत्साह का ही नतीजा है। यही उसकी सफलता का मूल मंत्र है। यही मनुष्य की असफलता को हल करता है और भविष्य का द्वार खोलता है इसीलिए तो कहा गया है कि किसी भी महान कार्य को करने के लिए योग्यता से अधिक

उत्साह की आवश्यकता होती है। यदि उत्साह नहीं है तो योग्य व्यक्ति कुछ भी नहीं कर सकता। यदि उत्साह है तो साधारण मनुष्य भी कठिनाइयों को पार करते हुए घने जंगलों, पहाड़ों में से भी अपना रास्ता निकाल लेता है। सत्य कहा गया है कि - आशा ही जीवन है और निराशा ही मृत्यु है। आशा तो उत्साह की जननी है। निरुत्साहित व्यक्ति को अपना जीवन ही भारी लगने लगता है।

चींटी का उत्साह हमारे लिए प्रेरणादायक इसलिए है क्योंकि उसमें बार-बार दीवार पर चढ़ने का साहस, उत्साह और लगन हमेशा बनी रहती है। चाहे वह कितनी ही बार फिसल जाए पर अपने उत्साह को कम नहीं करती है। जिस तरह से वह अपनी मंजिल पर पहुंचने के लिए न जाने कितनी बार प्रयास करती है और अपने रास्ते से अनगिनत बार भटक भी जाती है परंतु उसके उत्साह में कोई कमी दिखाई नहीं देती। ध्यान रखें, कुदरत सबसे बड़ी गुरु है। इसमें वास करने वाला हर प्राणी हमें जीवन जीने की कला सिखाता है। जब हम अपने मन के तार प्रकृति के साथ जोड़ लेने में सफल हो जाते हैं तो अपने आप विचारों में स्पष्टता आने लगती है। अपनी ऊर्जा व्यर्थ न जाने दें। बल्कि, उसका इस्तेमाल अपने सपनों को साकार करने में करें। अपने मन में एक बात को बिठा लेना है -

"हम होंगे कामयाब - हम होंगे कामयाब,
एक दिन ! मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास,
हम होंगे कामयाब एक दिन"

भारत के प्राचीन इतिहास में ऐसे कितने ही महापुरुष हुए हैं, जिनके जीवन में उत्साह की बहुत बड़ी भूमिका देखने को मिलती है जैसे कि नेपोलियन, रविंद्र नाथ टैगोर, महात्मा गांधी, महान धनुर्धारी अर्जुन, भीष्म पितामह, छत्रपति शिवाजी, महाराणा प्रताप आदि। इन सभी ने उत्साह, दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर ही जीवन में महान कार्य किए और इतिहास में अपना योगदान दे प्रसिद्ध हुए।

उत्साह ही हमारे जीवन का सबसे बड़ा मित्र है और सहायक भी है। हमें हमेशा इसकी सहायता लेते रहनी चाहिए। तभी हमारे जीवन की यात्रा सफलतापूर्वक संपन्न हो सकेगी, साथ ही हमें अपने जीवन का आनंद भी प्राप्त होगा। कभी निराशा और अवसाद का मुंह नहीं देखना होगा। जहां हम अपने जीवन को सफल बनाएंगे। वहां हम दूसरों के लिए एक मार्ग दर्शक का काम करेंगे।

अंतिम युद्ध

आयुष कुमार सिंह
बीए प्रो., तृतीय वर्ष

है युद्ध अंतिम बस यही मरकर हमें मरना नहीं,
फिर सर कटे या धड़ कटे बस शस्त्र है धरना नहीं।

इस रण की भूमि में हमारा शौर्य ही प्रकाश हो,
अंतिम विगुल अपनी बजे बस मन में ये विश्वास हो।

हर रक्त के कतरे का बदला भी तो लेना है हमें,
बलिदानियों के प्राण को बलिदान देना है हमें।

तूणीर की सारी विधायें ज्ञात होनी चाहिए,
जो हार भी हो जाए तो विख्यात होनी चाहिए।

विभावरी अंतिम है ये बस आसमां को निहार लो,
सब काँच हीरक हैं नहीं ये मन में तुम विचार लो।

अंतर्मन

अंतर्मन से हार चुका हूँ,
किंतु डर को मार चुका हूँ।

दुर्गम पथ पर आ निकला हूँ,
अतुल ताप पर ना पिघला हूँ।

जय से न अस्मीत हुआ हूँ,
भय से न भयभीत हुआ हूँ।

अडिग खड़ा हूँ झुका नहीं हूँ,
खिसक रहा हूँ रुका नहीं हूँ।

मैं तो अब तक मरा नहीं हूँ,
क्या तन मन से लड़ा नहीं हूँ।

बेटियाँ

रूढ़ियों के बंधनों से लड़ रहीं अब बेटियाँ,
आने वाले बेहतर कल को पढ़ रहीं अब बेटियाँ।

जिस भी पर्वत को गुमां था अपनी उस ऊँचाई पे,
शीर्ष उसकी चोटियों पर चढ़ रहीं अब बेटियाँ।

घुट रहे थे बंद कमरों में सभी अरमान जो,
खोल पंखों को जहाँ में उड़ रहीं अब बेटियाँ।

सोचते थे जो कि उनके है ये कुछ बस का नहीं,
इतिहास के पन्नों में खुद को गढ़ रहीं अब बेटियाँ।

बस यही सौभाग्य मेरे देश भारत का रहा,
उसकी भी रक्षा को आगे बढ़ रहीं अब बेटियाँ।

सुनो मां

सुनो मां,

जब भी कुछ ना तुमसे कहता हूं अर्थ यह है कि मैं एक राज छुपाए बैठा हूं कुछ बात छुपाए बैठा हूं।

इस कोमल मन पर घात हुई है एक घाव छुपाए बैठा हूं कुछ बात छुपाए बैठा हूं।

कुछ शब्द चुभे हैं लोगों के मुझको, यह चुभन छुपाए बैठा हूं कुछ बात छुपाए बैठा हूं।

चेहरे पर हां चमक नहीं है मन के भीतर भाव नहीं है मुस्कान छुपाए बैठा हूं कुछ बात छुपाए बैठा हूं।

खोल दो मन के द्वार तुम मेरे मां अपने आंचल में रख सिर को मेरे ना तुमसे

कोई बात छुपाना चाहता हूं हर बात बताना चाहता हूं।

पिता

वह सूर्य समान, उसकी ताप गर्म पर ताप गरम ,आवश्यक उसकी। गर जीवन में ना हो वो तो दिन भी है... एक रात घनेरी।

सबसे मुश्किल काम जीवन का उसको गले लगाना है ,

प्यार बहुत करता है हमसे यह अभी कहां हमने जाना है ।

कठोर नहीं है ह्रदय उसका उतना जितना हमें दिखता है,

दूर जाते हो जब तुम उससे मुंह घुमा वह आंसू अपने छिपाता है।

बेटा सफल हो मुझसे ज्यादा....

सिर्फ संसार में एक पिता ही है जिसने यह चाहा है....

जितेन्द्र कुमार सिंह
वाणिज्य स्नातक
तृतीय वर्ष

उदास

आदेश यादव
बीए हिंदी (ऑनर्स)
तृतीय वर्ष

हमको जो याद रह गयीं बातें उदास हैं ,
बातों को अनसुना किए साँसें उदास हैं ।

पलकों में उदासी की कोई दास्ताँ छुपी ,
पर ये नहीं लगेगा कि आँखें उदास हैं ।

कोई तो ख़ुशगवार मेरे साथ-साथ चल,
मुद्दत से इस सफ़र में जो राहें उदास हैं।

अब तेरे कहकहों से मेरा राब्ता नहीं,
दिन ढल रहें हैं याद में रातें उदास हैं।

शायद उदासियों का सबब हो तुम्हें पता,
आओ गले लगा लूँ कि बाहें उदास हैं।

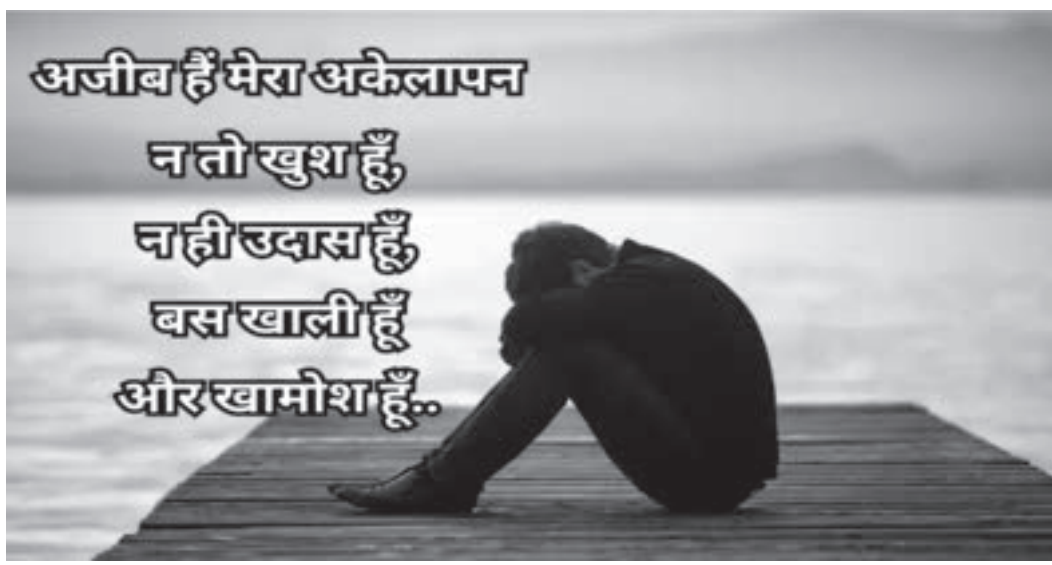

"संविधान सभा में राजभाषा हिंदी पर हुई बहस की समीक्षात्मक व्याख्या।"

शिवम् सिंह
बी ए (ऑनर्स) हिंदी, तृतीय वर्ष

संविधान सभा में राज-भाषा पर हुई बहस को सुनकर मैं अपनी राय इस प्रतिवेदन के माध्यम से प्रस्तुत करता हूँ -

संविधान सभा की बहस सुनकर मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि " संघ की राज-भाषा " वास्तव में एक जटिल विषय था क्योंकि हमारे देश की स्वतंत्रता में केवल एक ही भाषा बोलने वाले लोगों का योगदान नहीं था वरन् विभिन्न प्रकार की भाषा बोलने वाले, विभिन्न जातियों, इस देश में रहने वाले कई धर्म के लोगों का योगदान था और इन लोगों की अपनी अलग- अलग भाषाएँ थी।

यद्यपि स्वतंत्रता आंदोलन के समय विभिन्न वर्गों ने एक साथ आन्दोलन किया और आज़ादी प्राप्त की,फिर भी संविधान सभा में ये सदस्य अपना- अपना पक्ष प्रस्तुत कर रहे थे। कुछ सदस्य 'राज-भाषा' के रूप में हिंदी की मांग कर रहे थे तो कुछ हिंदुस्तानी की।राज-भाषा के संबंध में अंग्रेज़ी, संस्कृत, उर्दू की भी वकालत करने वाले सदस्य मौजूद थे। कुछ सदस्य तर्कसंगत विचार प्रस्तुत कर रहे थे तो कुछ अपनी भाषा के प्रति प्रेम और दूसरी भाषा ,जो उन्हें पसंद नहीं थी उसके प्रति नफ़रत बयान कर रहे थे।

उदाहरण के रूप में मैं आर.वी .धुलेकर के वाक्यों पर अपनी राय प्रस्तुत कर रहा हूँ-

आर वी धुलेकर के अनुसार," जो हिन्दुस्तानी नहीं जानते हैं उन्हें हिन्दुस्तान में रहने का अधिकार ही नहीं है।जो लोग यहाँ भारत का विधान निर्माण करने आए हैं और हिन्दुस्तानी नहीं जानते, वे इस सभा के सदस्य होने योग्य नहीं हैं। बेहतर होगा कि वे सभा छोड़कर चले जाएँ।" (निर्देशक- श्याम वेनेगल,धारावाहिक, राज्यसभा टीवी,एपिसोड 7, 3 मिनट 55 सेकंड- 4 मिनट 9 सेकंड)।

इस तरह के विचार धुलेकर जी के थे जिनसे मैं सहमत नहीं हूँ।शायद धुलेकर जी भूल गए थे कि इस देश में दक्षिण भारत या उत्तर- पूर्व के राज्य भी आते हैं जिन्हें हिन्दुस्तानी समझने में दुविधा होती है। यदि मैं उस समय संविधान सभा की अध्यक्षता कर रहा होता तो मैं यह प्रश्न धुलेकर जी से

अवश्य पूछता कि क्या गैर -हिन्दुस्तानी बोलने वाले को अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने या उसकी भाषा संबंधी समस्याओं को सभा में रखने का अधिकार नहीं है?

दूसरा प्रश्न यह कि धुलेकर जी के पास क्या अधिकार है कि वह निर्धारित करें कौन सभा में रहे और कौन न रहे ? धुलेकर जी के इन्हीं विचारों का परिणाम था कि उन्हें डॉ सच्चिदानंद द्वारा आगे बोलने से मना कर दिया गया।

संविधान सभा में हिंदी और हिन्दुस्तानी दोनों भाषाओं पर तीखी बहस चल रही थी। संविधान सभा में कांग्रेस का बहुमत था और कांग्रेस हिंदी को संघ की राजभाषा बनाने की पक्षधर थी (देश के विभाजन के पहले कांग्रेस हिन्दुस्तानी की पक्षधर थी) और हिंदी ऐसी कि जो संस्कृतनिष्ठ हो ,अन्य भाषाओं के शब्दों का समावेश न हो।

कांग्रेस के बहुमत का प्रभाव इस प्रकार से समझा जा सकता है -

प्रारूप समिति के सदस्य सादुल्लाह, प्रारूप समिति के अध्यक्ष डॉ अंबेडकर से उनकी राय पूछते हैं तो अध्यक्ष जवाब देते हुए कहते हैं कि ,"हम इस तथ्य से इंकार नहीं कर सकते हैं कि कांग्रेस निर्विवाद बहुमत में है और अगर वे हिन्दुस्तानी को हिंदी में बदलना चाहते हैं ,तो हमें उस बात को शीघ्र ही या बाद में मानना होगा। तो बाद की अपेक्षा शीघ्र क्यों नहीं ?"(वही, 10मिनट 33 सेकंड - 10मिनट 51 सेकंड)।

डॉ. बी.आर.अंबेडकर का यह कथन मुझे अत्यधिक तर्कसंगत प्रतीत होता है क्योंकि उस समय संविधान सभा में कांग्रेस का बहुमत था और गैर-कांग्रेसी सदस्य प्रयास करने के बाद भी दूसरा विकल्प चुनने में सक्षम नहीं थे। यही वजह थी कि संविधान सभा के निर्णय के पहले ही प्रारूप समिति अपने दस्तावेज़ों में संघ की राजभाषा 'हिंदी' शब्द का प्रयोग करने लगी थी।

मेरा यह व्यक्तिगत मत है कि 'संघ की राज-भाषा ' के विषय को माडॅर्न मनु डॉ. अंबेडकर को सौंपा जाना चाहिए था क्योंकि जो व्यक्ति' हिंदू कोड बिल 'द्वारा लम्बे समय से चली आ रही कुरीतियों को खत्म कर सकता है ,उस व्यक्ति को संघ की राज-भाषा निर्धारित करने में कठिनाई नहीं होती।

संविधान सभा में हिंदी के पक्षधर हिंदी को ही सर्वश्रेष्ठ भाषा के रूप में देख रहे थे। वे हिंदी के अतिरिक्त कोई दूसरा विकल्प स्वीकार करने के लिए सहमत नहीं थे।

उदाहरणार्थ-

संविधान सभा के सदस्य सेठ गोविंद दास के अनुसार ," हिंदी और केवल हिंदी इस देश की राष्ट्र-भाषा हो सकती है। हिंदी बनाम हिंदुस्तानी का विवाद अब समाप्त हो चुका है क्योंकि संविधान की धारा 99 के अनुसार केवल दो भाषाएँ हैं - अंग्रेज़ी और हिंदी जिनमें संसद की कार्यवाही हो सकती है। जहाँ तक दक्षिण भारत के नागरिकों और सदस्यों का सवाल है मैं स्वीकार करता हूँ कि कुछ वर्षों तक कार्यवाही को अंग्रेज़ी में चलाना होगा। उन पर हम ज़बरदस्ती कुछ लाद तो नहीं सकते ।मगर अंत में हिन्दी ही हमारी राष्ट्र-भाषा होगी और साथ में देवनागरी हमारी राष्ट्रलिपि।" (वही , 11 मिनट 19 सेकंड - 11मिनट 55 सेकंड)।

मैं गोविंद दास जी से यह प्रश्न करना चाहता हूँ कि यदि धारा 99 में दो ही भाषाएँ हैं - हिंदी और अंग्रेज़ी तो फिर वह हिंदी को ही इतना महत्व क्यों दे रहे हैं ? क्या गैर-हिंदी भाषी क्षेत्रों या लोगों का इस देश में कोई महत्व नहीं ?

मैं गोविंद दास जी के इस कथन से सहमत नहीं हूँ क्योंकि अनेकता में एकता हमारे देश की पहचान है ।स्वतंत्रता आंदोलन के समय ऐसे नेता समस्त क्षेत्र के लोगों को आंदोलन में सहभागिता करने के लिए आह्वान कर रहे थे परन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान सभा में भाषा का विवाद उत्पन्न कर क्षेत्र-विशेष, भाषा-विशेष के लोगों की भावनाओं को ठेस पहुंचाने का कार्य कर रहे थे।

दक्षिण भारतीय राज्यों की जनता या अन्य राज्यों की जनता (जो हिंदी समझने में असमर्थ थी) की स्थिति ठीक उसी प्रकार थी जैसे कि वर्तमान समय में चल रहे किसान आंदोलन में किसानों की है। जिस प्रकार किसान कृषि क़ानूनों का विरोध कर रहे हैं और उनके प्रतिनिधि कुछ भी करने में असमर्थ हैं क्योंकि उनका लोकसभा में बहुमत नहीं है ,उसी प्रकार गैर हिंदी-भाषी जनता के प्रतिनिधि सभा में बहुमत न होने के कारण कुछ भी करने में असमर्थ थे।

टी. टी. कृष्णामचारी, लक्ष्मीकांत मैत्रा, श्यामाप्रसाद मुखर्जी जैसे सदस्यों का मानना था कि हिंदी को ऐसे लोगों पर नहीं थोपा जाना चाहिए जिनके लिए हिंदी एक नई भाषा के रूप में है।

संविधान सभा में हिंदुस्तानी को राज-भाषा बनाए जाने के विचार को कुछ सदस्यों के विरोध का सामना इसलिए करना पड़ा क्योंकि संघ की राज-भाषा हिंदुस्तानी बनाए जाने पर उसमें उर्दू भाषा के भी शब्द शामिल हो जाते ।देश विभाजन के पश्चात पाकिस्तान उर्दू को अपनी राज-भाषा घोषित

कर चुका था जिससे भारतीय संविधान सभा में हिंदी प्रेमी सदस्यों ने उर्दू के प्रति गलत अवधारणा बना ली थी और वे सदस्य अपने देश की राज-भाषा में उर्दू को किसी भी प्रकार का स्थान नहीं देना चाहते थे।

सेठ गोविंद दास ने सभा में ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जिसको सुनकर स्पष्ट होता है कि वह संघ की राज-भाषा को एक सांप्रदायिक रंग में रंगना चाहते थे।

गोविंद जी के अनुसार, " हम उर्दू से प्रेम रखते हैं मगर उर्दू भाषा ईरान और अरब की तरफ देखती रही है। उर्दू भाषा केवल मुसलमानों की अकेली भाषा है ये मैं नहीं कहता मगर मैं यह अवश्य कहूँगा कि हिंदी के समर्थक सांप्रदायिक नहीं हैं , जो उर्दू का समर्थन करते हैं वे सांप्रदायिक हैं।" (वही, 20 मिनट 10 सेकंड - 20 मिनट 29 सेकंड)।

मुझे लगता है कि गोविंद दास जी अवश्य ही विकृत मानसिकता के परिचायक थे जो कि भारत जैसे लोकतांत्रिक, पंथनिरपेक्ष देश के लिए कैंसर बीमारी से कम नहीं है। इस प्रकार की संकीर्ण विचारधारा का व्यक्ति संविधान सभा का सदस्य बनने के योग्य ही नहीं था।

अब मैं ऐसे सदस्य के बारे में बताना चाहता हूँ जिसने सेठ गोविंद दास जैसे सदस्यों को एक तार्किक जवाब दिया क्योंकि सेठ गोविंद दास जैसे सदस्य ही गिरगिट की तरह रंग बदल रहे थे। पहले तो 'हिंदुस्तानी' की बातें किया करते थे और जब संघ की राज-भाषा बनाने की बात आयी तो 'हिंदी' के पक्ष में बोलने लगे। यह सदस्य कोई और नहीं बल्कि काज़ी सईद करीमुद्दीन थे जिनके अनुसार- " मैं सेठ गोविंद दास की तवज्जो उन्हीं की तकरीर की तरफ दिलाना चाहता हूँ। सन् 1945 की बजट स्पीच में इन्होंने कहा था कि मुझे बड़ा अफसोस है कि मैं अपनी तकरीर हिंदुस्तानी में नहीं कर सकता। सन् 1945 में इनकी जबान हिंदुस्तानी थी जो आज देवनागरी रसमुल खत्म-ए-हिंदी हो गई। इसका कोई जवाब है इनके पास। इसकी वजह यह है कि 1947 के विभाजन के बाद पाकिस्तान ने अपनी राष्ट्रीय जबान उर्दू होने का एलान किया। मैं हिंदी के खिलाफ नहीं हूँ लेकिन जब यहाँ की जबान हिंदुस्तानी है तो उर्दू के बारे में इतनी नफरत क्यों जाहिर की जाती है? अपने बहुमत के जरिए आप इसे एकदम खत्म और बंद क्यूँ कर देना चाहते हैं?"(वही , 28 मिनट 56 सेकंड- 29 मिनट 42 सेकंड)।

संघ की राज-भाषा के चयन पर संविधान सभा के सदस्य शंकर राव देव ने ऐसे विचार विचार व्यक्त किए जो कि उन लोगों के लिए एक सीख थी जो एक भाषा और एक संस्कृति की भावना रखते हैं।

शंकर राव जी के अनुसार, " एक भाषा ,एक संस्कृति का नारा बड़ा ही खतरनाक नारा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक भी एक देश ,एक संस्कृति की दुहाई देते हैं।मगर महोदय आज इस बात का अर्थ सिर्फ इतना है कि बहुत से लोगों पर केवल कुछ लोगों की मर्ज़ी का वर्चस्व चलेगा।"(वही , 39 मिनट 18 सेकंड - 39 मिनट 38 सेकंड)। मैं शंकर राव जी के विचारों से सहमत हूँ। यदि हम एक भाषा , एक संस्कृति की विचारधारा को अपना लेते तो हमारे देश के स्वतंत्रता सेनानियों का देश के प्रति बलिदान ही व्यर्थ हो जाता क्योंकि ये बलिदान ऐसे लोगों ने अपने देश के लिए किया जिनके लिए जाति, धर्म, भाषा से ऊपर राष्ट्र की एकता थी।

तत्कालीन शिक्षा मंत्री मौलाना आज़ाद ने संविधान सभा में एक प्रभावी भाषण दिया जिसमें उन्होंने कई बातें स्पष्ट की। उन्होंने स्पष्ट किया कि कांग्रेस पार्टी और गाँधी जी का एक ही राय पर अमल रहा कि राज-भाषा के रूप में हिंदुस्तानी को स्वीकार किया जाना चाहिए। मौलाना आज़ाद कहते हैं कि ," मुझे बेहद मायूसी हुई ये देखकर कि चंद गिने हुए कदमों के सिवा तमाम कदम अपनी जगह से हिल रहे थे।"(वही, 47 मिनट 37 सेकंड- 47 मिनट 48 सेकंड)।

मौलाना आज़ाद हिंदुस्तानी के पक्षधर थे और वे कांग्रेस के सदस्यों को ही जिम्मेदार मानते थे कि वे हिंदुस्तानी के बजाय हिंदी को राज-भाषा बनाना चाहते हैं।लेकिन मुझे मौलाना आज़ाद के इसी भाषण में एक विरोधाभास नजर आता है जब वह प्रारूप समिति पर आरोप लगाते हुए कहते हैं कि ," मैंने ये देखा कि अखसरियत पहले से ही एक खास राय पर ज़मी हुई थी। किसी भी तरह इस बात के लिए राज़ी नहीं थी कि हिंदी की जगह हिंदुस्तानी को इख्तियार कर लिया जाए। "(वही, 48 मिनट 30 सेकंड - 48 मिनट 46 सेकंड)।

मेरा व्यक्तिगत मत है कि मौलाना आज़ाद को प्रारूप समिति पर आरोप न लगातार कांग्रेस को ही जिम्मेदार मानना चाहिए था क्योंकि उस समय कांग्रेस ही बहुमत में थी। जैसा कि प्रारूप समिति के अध्यक्ष ने पहले ही स्पष्ट कर दिया था।

मुझे लगता है कि संघ की राज-भाषा के बहस के दौरान एक प्रस्ताव से ही स्पष्ट हो गया था कि संघ की राज-भाषा हिंदी ही होगी।यह प्रस्ताव एन गोपाल स्वामी अयंगार ने प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने स्पष्ट किया कि -" एक बात पर लगभग सभी ने अपनी सहमति जताई कि भारत की तमाम भाषाओं में से ही किसी एक भाषा को सारे भारत की भाषा के रूप में चुनना चाहिए। अंतिम निर्णय है कि हमें हिंदी को अपनाना चाहिए। संविधान के अंतर्गत संघ के सभी आधिकारिक कार्यों की भाषा

हिंदी ही हो। साथ ही एक अन्य फैसला यह लिया गया कि अगले 15 साल में हिंदी को कामकाज के लायक बनाने तक अंग्रेज़ी का इस्तेमाल हो। मैं यहाँ प्रस्तावित करता हूँ कि संघ की राज-भाषा हिंदी और लिपि देवनागरी हो और संख्याओं को अंतर्राष्ट्रीय गणना में लिखा जाए।" (वही, 17 मिनट 06 सेकंड - 18 मिनट 11 सेकंड)।

- इसी प्रस्ताव के द्वारा ही अयंगार ने संख्याओं के विवाद को भी स्पष्ट कर दिया।

अन्ततः कांग्रेस के गरम दल एवं नरम दल के नेताओं में समझौता हो गया। हिंदी वालों ने संख्याओं के अन्तरराष्ट्रीय रूप को हटाने की ज़िद छोड़ दी और दूसरे दिन 14 सितंबर 1949 को हिंदी को संघ की राज-भाषा के रूप में स्वीकार कर लिया गया। दक्षिण भारतीय सदस्यों ने भी हिंदी के पक्ष में अपनी सहमति दे दी।इसके साथ ही अंग्रेज़ी को 15 वर्षों तक संघ की दूसरी राज-भाषा के रूप में स्वीकार किया गया। हांलाकि वर्तमान समय में भी हिंदी के साथ अंग्रेज़ी राज-भाषा के रूप में कार्य कर रही है।

- अब मैं हिंदी को राज-भाषा बनाए जाने क पक्ष एवं विपक्ष में तर्क प्रस्तुत करना चाहता हूँ-

हिंदी के पक्ष में तर्क- संविधान की धारा 99 में दो ही भाषाएँ हिंदी एवं अंग्रेज़ी का होना। अंग्रेज़ी की तुलना में हिंदी को समझने वालों की संख्या अधिक थी।

- संविधान सभा में हिंदी-भाषी सदस्यों का बहुमत होना।

भारत- पाकिस्तान के विभाजन के बाद पाकिस्तान द्वारा उर्दू को राज-भाषा बनाया जाना , जिससे भारतीय संविधान सभा के अधिकांश सदस्य उर्दू को हिंदी के विरोधी के रूप में देखने लगे और उनका रुझान हिंदी की तरफ बढ़ गया।

हिंदी के विपक्ष में तर्क-

- भारत के आधे से अधिक राज्यों में हिंदी का न बोला जाना।

राज-भाषा के रूप में हिंदी को प्राथमिकता देना इसलिए असंगत था क्योंकि हमारे देश के स्वतंत्रता आंदोलन में केवल हिंदी- भाषी जनता का ही योगदान नहीं था।

- सम्पूर्ण जनता का प्रतिनिधित्व न हो पाना।

निष्कर्ष- संविधान सभा में राज-भाषा पर हुई बहस को सुनकर स्पष्ट हो जाता है कि बहुसंख्यक जनता का प्रभाव प्रत्येक क्षेत्र में होता है।

उदाहरणार्थ- जिस प्रकार जम्मू-कश्मीर की जनता के विरोध प्रदर्शन के बाद भी धारा 370 को खत्म कर दिया गया और वहाँ की जनता को उसे स्वीकार करना पड़ा क्योंकि धारा 370 को खत्म करने वाली पार्टी का लोकसभा में निर्विवाद बहुमत था ,ठीक उसी प्रकार गैर- हिंदी भाषी जनता और उनके प्रतिनिधियों के विरोध करने के बाद भी कांग्रेस ने हिंदी को राज-भाषा बनाया और उसे स्वीकार करना पड़ा क्योंकि कांग्रेस का संविधान सभा में बहुमत था।

मैं गाँधी जी के कथन से सहमत हूँ कि ,"हिन्दुस्तानी भाषा को न संस्कृतनिष्ठ हिंदी बनाना चाहिए न फारसी भरी उर्दू। इसे तो दोनों का एक मीठा- सा मिश्रण होना चाहिए।"(वही, 5 मिनट 31 सेकंड - 5 मिनट 53 सेकंड)।

यदि मैं संविधान सभा का सदस्य होता तो नि:संकोच राज-भाषा के रूप में हिंदुस्तानी और इसके साथ ही अंग्रेज़ी की मांग करता।

मेरे मतानुसार राज-भाषा के चयन में गाँधी जी के लोकतंत्र के इसी विचार को प्राथमिकता मिलनी चाहिए थी," प्रजातंत्र की भावना रूपों के उन्मूलन द्वारा समायोजित की जाने वाली एक यांत्रिक चीज नहीं है। इसके लिए हृदय परिवर्तन की आवश्यकता है ....लोकतंत्र की भावना के लिए भाईचारे की भावना का समावेश होना चाहिए ।लोकतंत्र एक राज्य नहीं है जिसमें लोग भेड़ की तरह काम करते हैं। लोकतंत्र के तहत , राय और कार्यवाई की व्यक्तिगत स्वतंत्रता ईर्ष्या की रक्षा है।" (लेखक- रमिन जहांबेगलू ,समाचार पत्र 'द हिन्दू ' , 1 फरवरी, पृष्ठ संख्या- 6)।

रिश्तों की महक कहां खो गई है?

अदिति गुप्ता
हिन्दी ऑनर्स, द्वितीय वर्ष

क्या यह चंद पैसों की गुलाम हो गई है
एक समय था जब रिश्तों मे खोजी जाती थी खुशियां
अब वह खुशियां क्या चंद रुपयों की मोहताज हो गई है
रिश्तों की महक कहां खो गई है?
कुछ समय पहले माता - पिता के चरणों में बसता था स्वर्ग
क्या वह कुछ दान पेटी के दानों में खो गई है
ऐसा लगता है कल ही की तो बात है
आंख खुलते ही क्या वह खुशियां ओझल हो गई है
रिश्तों की महक कहा खो गई है?
एक समय था जब परिवार में खुशियां खोजते थे लोग
क्या वह कुछ जायदादों में खो गई है
रिश्तों की महक कहां खो गई है?
क्या आज की पीढ़ी पैसों की गुलाम
तो वही मां - बाप की दृष्टि वृद्धा आश्रम की मोहताज हो गई है
रिश्तों की महक कहां खो गई है?

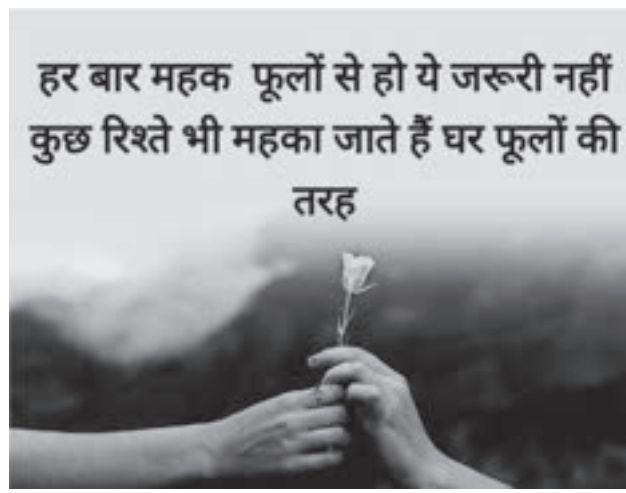

फिर क्यों न कहें हम, हम हिन्दी के सम्राट हैं

सर्वेश कुमारी
हिन्दी ऑनर्स, द्वितीय वर्ष

फिर क्यों न कहें हम,हम हिन्दी के सम्राट हैं
विक्रम लाये साहित्य यह गौरव कि बात हैं,
जिन के 57 वर्ष पश्चात शुरु होता औरों का इतिहास हैं,
फिर क्यों न कहें हम, हम हिन्दी के सम्राट हैं।

अपनों से वैर नहीं यह एकता का विश्वास हैं,
गुरुओं का सम्मान करना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार हैं
फिर क्यों न कहें हम, हम हिन्दी के सम्राट हैं।

देश एक ज्ञान का सागर यह आश्चर्य की बात हैं,
जिन आचार्यो में आती यह दृढ़ निश्चय कि बात हैं,
फिर क्यों न कहें हम, हम हिन्दी के सम्राट हैं।

प्रेमचंद की कथाओं में चलती पूस की एक रात हैं
जिन कथाओं में आता जबरा भी एक पात्र हैं,
फिर क्यों न कहें हम, हम हिन्दी के सम्राट हैं।

रीतिसिद्ध काव्यों में चलती सिद्धों की यह बात हैं,
जिन रीतिसिद्ध में आते बिहारी एक मात्र हैं,
फिर क्यों न कहें हम, हम हिन्दी के सम्राट हैं।

फिर क्यों न कहें हम, हम हिन्दी के सम्राट हैं,
फिर क्यों न कहें हम, हम हिन्दी के सम्राट।

युवा नेतृत्व

अर्गति विजय
बीए (ऑनर्स) हिंदी

युवा नेतृत्व एवं युवाओं की भागीदारी राष्ट्रनिर्माण में बहुत महत्वपूर्ण है। वे न केवल राष्ट्र के भविष्य को सशक्त बनाने में सक्षम होते हैं, बल्कि वे समाज के सभी क्षेत्रों में नए विचारों, नए उत्साह के साथ आगे बढ़ते हुए राष्ट्र की तरक्की में अहम भूमिका निभाते हैं।

युवाओं को नयी सोच और नये उद्देश्यों की ओर ले जाने का काम सबसे बड़ा काम है। यही उन्हें राष्ट्र के विकास में नई ऊर्जा का स्रोत बनाता है। उनके नए विचार, नए उपाय राष्ट्र की तरक्की के लिए अवश्यक होते हैं। युवाओं की रुचि, उत्साह, जोश और सक्रियता से राष्ट्र की तरक्की तेजी से होती है।

युवाओं की भागीदारी से न केवल राष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों में उन्नति होती है, बल्कि यह समाज में एक अद्भुत परिवर्तन भी लाता है। वे जन-जीवन में नए अवसर बनाते हैं और नए उद्यमों की शुरुआत करते हैं। उनके द्वारा समाज में अपराधों को कम करने का काम भी किय जाता है।

क्या यहीं तक का था सफर तुम्हारा

अनुज शुक्ल
बीए प्रो., तृतीय वर्ष

जो नहीं लड़ा है लहरों से
वो बचना कैसे सिखलायेगा
जो नहीं गिरा है जीवन में
वो उठना कैसे बतलायेगा
और माना नही जानते कुछ भी तो कोशिश भी नही करोगे तुम
क्या यहीं तक का था सफर तुम्हारा आगे नहीं बढ़ोगे तुम ?

हमको मंजिल की राहों को
बस आसान दिखाया जाता है
आएंगे उसमे कंकड़ पत्थर भी
ये नहीं बताया जाता है
और माना नहीं बताया तुमको तो नहीं लड़ोगे तुम
क्या यहीं तक का था सफर तुम्हारा आगे नहीं बढ़ोगे तुम ?

अंतिम क्षण तक चलेगा जो
वो ही मंजिल को पायेगा
जो सागर में नाव उतारेगा
वो ही उसको पार लगाएगा
और माना हार गए हो तो फिर से नहीं उठोगे तुम
क्या यहीं तक का था सफर तुम्हारा आगे नहीं बढ़ोगे तुम ?

सूरज ढलने पर अंधियारा छा जाएगा
कुछ पल रुककर फिर वो नया सबेरा लाएगा
पर उसी सबेरे एक पल ऐसा आता है
सूरज के रहने पर भी जो अंधकार कर जाता है
और माना हो उसी अंधकार में तो उजाला नहीं करोगे तुम
क्या यहीं तक का था सफर तुम्हारा आगे नहीं बढ़ोगे तुम ?

हर रोज़ उठता है धुआँ

हर रोज़ अंधेरा होने से पहले ही
उस घर से उठता है धुआँ
एक माँ
अपने बच्चों के साथ
बैठकर फूंकती है
चूल्हा
और पकाती है खाना
उनका पेट भरने
के लिए ,
उनके घर के ऊपर नहीं है
ठीक से कोई छत और
ना ही
प्रकाश के लिए
बिजली या दीपक
और फिर
रात होने से पहले ही
उस घर से
बंद हो जाती है
आनी आवाज़
शायद वो
सो जातें हैं जल्दी
उतनी ही जल्दी
जितनी जल्दी
वो
उठ जाते हैं सुबह
और निकल जाते हैं जंगल की तरफ
लकड़ियाँ इकट्ठा करने
के लिए
और फिर से वो माँ
फूंकती है
चूल्हा
उसके बाद निकल जाती है
लोगों के घर
काम करने के लिए
तब तक के लिए
वह
छोड़ देती है अपने बच्चों को अकेला
फिर वह लौट कर
आती है शाम में
और ; फिर अंधेरा होने से पहले ही
उठ जाता है उस घर से धुआं !।

अनुज शुक्ल

कौन जानता है उन्हें ?

कौन जानता है उन्हें ?
जिनके नाम
नहीं लिखें हैं
किसी भी किताब में या,
नहीं लिखे जाते किसी भी अख़बार में
उन्हें कौन जानता है ,
जिन्होंने बस एक पुकार पर
त्याग दिया अपना घर , बिछड़ गए
अपने परिवारों से
और न्योछावर कर दिया
अपने प्राणों को
भारत मां की रक्षा में ।
पर कोई तो जानता होगा उन्हें
शायद उन्हें जानता है,
वह पेड़ जिसके नीचे उन्होंने कठिन समय में
बितायी हैं रातें,
वह नदी जिसके पानी से उन्होंने
बुझाई है अपनी प्यास, और
शायद जानती होगी
वह धरती जिस धरती पर अंत समय में लड़ते-लड़ते उन्होंने
त्याग दिए अपने प्राण ।

अनुज शुक्ल

संस्कारयुक्त शिक्षा आज की आवश्यकता

दुर्गेश
हिन्दी ऑनर्स, तृतीय वर्ष

विचार मनुष्य की मूल शक्ति है... यह मनुष्य की मनः स्थिति में जन्मे विचारों का ही कमाल है कि आज हम जीवन के इस पृष्ठ तक आ पहुँचे है। मिट्टी से मंगल तक का हमारा यह सफर हमारे विचारों की अभूतपूर्व क्षमताओं को दर्शाता है मगर कल्पना करिये,क्या हो जब हमारे यह विचार सकारात्मकता और नकारात्मकता के भेद को भूल जाए? क्या हो जब हमारे यह विचार नैतिक धर्मता को अस्वीकार कर दें? कल्पना का परिणाम जितना वीभत्सात्मक है असल में ऐसा होने पर स्थिति इससे कई गुणा डरावनी होगी।

मैं यह बातें हवा में नहीं लिख रहा हूं, बढ़ते पर्यावरण प्रदूषण की तरह ही हम मनुष्यों में भी एक वैचारिक प्रदूषण फैल रहा है। जिसके चलते हमारी नई पीढ़ियां प्रभावित हो रही हैं ऐसे में इससे बचने के लिए हमें नई पीढ़ी की क्षतिग्रस्त नींव को मजबूत करना होगा।

हमें इसकी शुरुआत प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था से करनी होगी, यह आश्चर्य की बात है कि किसी समय में सर्व विद्या की राजधानी कहा जाने वाला हमारा यह देश आज अपनी शिक्षा व्यवस्था से जूझ रहा है। इतिहास के अक्षर बताते हैं कि भारतवर्ष में शिक्षा की सर्वश्रेष्ठ व्यवस्था गुरुकुलों के रूप में उपस्थित थी।

तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला और वल्लभी के विश्वविद्यालय इन गुरुकुलों का ही विकसित रूप थे। चीनी यात्री हवेनसांग के यात्रा विवरण और अनेक ऐतिहासिक संदर्भ हमें यह बताते हैं कि इन विश्वविद्यालयों में दूर देशों से भी विद्यार्थी पढ़ने आते थे।

गौर करने वाली बात यह है कि ये उस वक्त की बात है जब पूरी दुनिया में न तो कहीं उन्नत संचार व्यवस्था थी और न ही यातायात सुविधाएं

इसे पढ़ने के बाद आप सोच रहे होंगे कि भारत में ऐसे बड़े विश्वविद्यालय तो आज भी हैं और आज भी इनमें विदेशों से विद्यार्थी पढ़ने आते हैं लेकिन सोचने योग्य बात यह हैं कि तब की शिक्षा का उद्देश्य क्या था और आज दी जाने वाली शिक्षा का उद्देश्य क्या है?

शिक्षा का उद्देश्य स्वस्थ व्यक्तित्व का निर्माण होना चाहिए किन्तु आज लगभग सभी शैक्षणिक संस्थानों में दी जाने वाली शिक्षा का उद्देश्य महज़ नौकरी पाना हो गया है। जिसके चलते

आज की युवा पीढ़ी दुनिया द्वारा बनाये गए मानकों के आधार पर साक्षर तो हो गई है लेकिन धीरे-धीरे उसके जीवन का दायरा छोटा होता जा रहा है। ऐसे में नई पौध का समग्र विकास करने के लिए हमें अपनी शिक्षा व्यवस्था के साथ संस्कारों को अनिवार्य रूप से जोड़ना चाहिए।

शिक्षा मनुष्य के जीवन का अनमोल उपहार है जो किसी व्यक्ति के जीवन की दिशा और दशा दोनों बदलने की क्षमता रखती है वही संस्कार जीवन का सारांश है इसके माध्यम से मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण और विकास होता है। मेरा यह मानना है कि जब किसी मनुष्य में शिक्षा और संस्कार दोनों का समुचित विकास होगा तब वह परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व के सकारात्मक विकास की ओर अग्रसर होगा।

सही मायनों में शिक्षा का तात्पर्य सिर्फ किताबी ज्ञान ही नहीं बल्कि चारित्रिक ज्ञान भी होता है जिसपर हम आज की इस तनावपूर्ण और भागदौड़ भरी जिंदगी में तनिक भी ध्यान नहीं दे रहे हैं। वर्तमान परिवेश में हम अपनी जिम्मेदारियों से भागते हुए अपने बच्चों को अच्छे स्कूलों में दाखिला दिलाकर संतुष्ट हो जा रहे हैं, लेकिन हमारी लापरवाही हमारे बच्चों को गुमराह कर रही है। जिसके चलते आज के अधिकांश बच्चे संभ्रांत तो बन जाते हैं पर उनमें विवेकशीलता क्षीण हो रही है।

समाज में निरंतर सुधार और बदलाव तभी होते हैं जब समाज में उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति में अच्छे गुणों का विकास होता है और व्यक्ति के गुणों का विकास यूं ही नहीं होता इसकी नींव हमें बच्चों की बाल्यावस्था में ही रखनी पड़ती है और अनिवार्य रूप से हमें उनमें तीन गुण आत्मसात करवाने होते हैं। यह तीन गुण ज्ञान, कर्म और श्रद्धा है। इन तीन गुणों के विकास से व्यक्तित्व विकास का प्रथम सत्र प्रारम्भ होता है।

मेरे हिसाब से आज जो राष्ट्रव्यापी अनैतिकतावादी प्रदूषण समूचे विश्व को दूषित कर रहा है उसका मुख्य या मूल कारण बच्चों में संस्कार युक्त शिक्षा का अभाव है और इसके जिम्मेदार हम खुद हैं।

हम छदमवाद से भरे झूठे और दिखावे वाले जीवन के पीछे भारतीय अमूल्य संस्कारों के प्रति उदासीन होते जा रहे हैं। निश्चित रूप से पश्चिमी सभ्यता का आँख मूंद कर अनुसरण करना ही हमें और हमारे बच्चों को पथभ्रष्ट कर रहा है।

आज बच्चों में सांसारिक और आध्यात्मिक शिक्षा दोनों की नितांत ज़रूरत है क्योंकि शिक्षा हमें जीविका के अवसर देती है और संस्कार जीवन को मूल्यवान एवं महत्वमयी बनाते हैं। मुझे लगता

है यह कार्य उतना भी मुश्किल नहीं है जितना हम इसे समझते हैं अगर हम अपने बच्चों में भारतीय संस्कृति, परम्परा और एकता आदि का बीजारोपण करते हैं तो उनमें खुद ब खुद संस्कारों का प्रस्फुटन हो जायेगा।

अभिभावकों के साथ-साथ शिक्षकों का भी यह कर्तव्य बनता है कि वे कक्षा तथा खेल के मैदान में ऐसा वातावरण उपस्थित करें जिससे बच्चों में शिक्षा और संस्कार दोनों का विकास हो विद्यालय स्तर पर भी लगातार ऐसी गतिविधियों का आयोजन होना चाहिए जिससे बच्चों में आत्मसंयम, अनुशासन, उत्तरदायित्व, आज्ञाकारिता, विनयशीलता, सहयोग, सहानुभूति और प्रतिस्पर्धा आदि गुणों का विकास हो सके।

आज अधिकांशतः सरकारी स्कूलों में ग्रामीण पृष्ठभूमि के बच्चे पढ़ने आते हैं जो मूलतः मजदूर और कृषक वर्ग से ताल्लुक रखते हैं यह समाज का वह वर्ग है जो मुख्य धारा में जुड़ने के लिए लगातार संघर्षरत है ऐसे में सरकारी स्कूलों में शिक्षकों को अधिक परिश्रमशील बनने की आवश्यकता है क्योंकि यह बच्चे देश का भविष्य हैं और इन्हें कुशल नागरिक बनाना हमारा नैतिक कर्तव्य है।

मैं व्यक्तिगत रूप से कक्षा 1 से 8 तक के विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य रूप से नैतिक शिक्षा से जुड़े पाठ्यक्रम का समर्थक हूं। बच्चों को विश्व के महान व्यक्तित्वों की जीवनी और उनके विचारों का भी ज्ञान कराना आवश्यक है क्योंकि यह वो उम्र है जिसमें बच्चे हीरो की तलाश करते हैं और ये हीरो जब उन्हें आस पास नहीं मिलते तो वो टी.वी. और कॉमिक्स में नकली हीरो पाकर संतुष्ट हो जाते हैं यहां तक तो फिर भी ठीक था पर टी. आर. पी. और ब्राइस की अंधीदौड़ में भाग रहे चैनल आज कुछ भी दिखा रहे जिनका बच्चों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। ऐसे में हमारा यह दायित्व बनता है कि हम अपने बच्चों को समाज के असली रक्षकों के बारे में बताएं।

हम बताएं कि कोई गुरुगोबिंद सिंह और उनके बेटे भी थे, हम बताएं कि 23 साल की उम्र में फाँसी का फंदा चूमने वाला माँ भारती का अलबेला बेटा भगत बचपन में कैसे बंदूकें बो रहा था। हम नई पीढ़ियों को बताएं कि कैसे मुलशंकर नाम का एक बालक शिवरात्रि के दिन चूहे को शिवलिंग पर खेलता देख संसार के आडम्बरो से पर्दा हटा देता है।

इतिहास पर नजर डालें तो पता चलता है कि ऋषि-मुनि जो शिक्षा देते थे, वह उनका समग्र ज्ञान था। उनकी शिक्षा व्यवस्था के लिए नहीं थी वो संस्कृति के रक्षकों को आकार देते थे। कर्म से धर्म तक, नैतिक ज्ञान से चरित्र निर्माण तक शस्त्र से शास्त्रार्थ तक, व्यक्ति व्यवहार से आचरण तक की शिक्षा अर्जित करने के बाद किसी को योग्य समझा जाता था। लेकिन मुझे इसका भान है कि आज के

दौर में इसकी अपेक्षा नहीं की जा सकती है। किन्तु हम नई पीढ़ी से इतनी तो आशा कर ही सकते हैं कि वह अच्छा इन्सान बने, वो मानवीय गुणों को अपनाकर समाज एवं देश की सेवा करें, उनमें सहयोग की भावना विकसित हो, उनमें सबके साथ मिल-जुल कर रहने की भावना जन्मे। मैं चाहता हूं कि हमारी शिक्षा व्यवस्था मनुष्य में सद्भावना एवं सद्प्रवृत्ति को बढ़ाए। हमारी शिक्षा व्यवस्था ऐसी हो कि वह एक सुसंस्कृत समाज की आधारशिला बन सके। यह व्यवस्था महज़ काग़ज़ की रसीद रूपी डिग्री पाने के लिए न हो बल्कि एक नए सवेरे की ओर ले जाने वाली हो। यह व्यवस्था ऐसी हो कि हमें ले जाये बुराई से अच्छाई की ओर, हीनता से उच्चता की ओर, असंभव से संभव की ओर, हिंसा से अहिंसा की ओर, पशुता से मनुष्यता की ओर.. और इसके बाद हमें जो मिलेगा यही स्वस्थ जीवन होगा, यही समृद्ध संस्कृति होगी, पश्चिमीकरण, भौतिकवादी दृष्टिकोण, अतितार्किकता और औद्योगीकरण को विकास मानने से भारतीय संस्कृति का आध्यात्मिक आधार लगातार शिथिल हो रहा है, जिसके चलते वर्तमान परिवेश में भारतीय शिक्षा व्यवस्था भारतीय संस्कृति व संस्कारों का वाहक बनने के स्थान पर मिश्रित संस्कृति को पुष्ट करने वाली एक इकाई बनकर रह गई है। इस मिश्रित संस्कृति से भारत के नागरिकों को भरसक नुकसान हुआ है और उनपर अर्पण का भाव रखने वाली भारतीय संस्कृति से ज्यादा व्यक्तिगत हित को सर्वोपरि मानने वाली पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव परिलक्षित होने लगा है... यही कारण है कि आज नैतिक व श्रेष्ठ जीवन मूल्यों के स्थान पर अनैतिक आचरण, भ्रष्टाचार, संकुचित जातिवाद, दायित्वहीनता भारतीयों पर हावी होती जा रही है। यह शिक्षा के साथ संस्कारों को प्राथमिकता न देने का ही नतीजा है कि अध्यात्म आधारित सुख व खुशहाली के स्थान पर लोग भौतिकतावादी संतुष्टि को जीवन का ध्येय मान रहे है।

भ्रम और भौतिकता से भरी पश्चिमी सभ्यता के नकारात्मक प्रभावों से भारत की नई पीढ़ी को बचाने के लिए प्राचीन संस्कारों एवं परिवर्तित आचरणीय मानकों के बीच समन्वय का मार्ग निकालकर नए नैतिक, धार्मिक, प्रजातान्त्रिक सामाजिक, वैयक्तिक, व्यावसायिक, सांस्कृतिक, मानकों को सबल करने की आवश्यकता है।

मेरा इस बात पर प्रबल पक्ष है कि अगर किसी व्यक्ति की शिक्षा-दीक्षा उचित वातावरण में हो, तो उस व्यक्ति का जीवन मर्यादित, संयमित, अनुशासित, नैतिक और श्रेष्ठ चारित्रिक गुणों का संगम बन जाता है। बस जरूरत है तो अपनी संस्कृति को पहचानने की, अपने अतीत के प्रति गौरव की अनुभूति की, भविष्य के प्रति आस्था उतारने की, युवाओं में राष्ट्रवाद की अभिव्यक्ति की राष्ट्रभक्ति की और राष्ट्र प्रतिष्ठा के पुनः निर्माण की निष्ठा की और यह सब संस्कार आधारित शिक्षा पद्धति के प्रयोग से संभव है।

उत्साह से उत्थान तक

दुर्गेश
हिन्दी ऑनर्स, तृतीय वर्ष

"उत्साह" कहने को तो यह हिंदी का एक छोटा सा शब्द मात्र है किंतु इस छोटे से शब्द में जीवन की सफलता का गूढ़ सूत्र संरक्षित है। मुझे लगता है कि ज़िंदगी तमाम उतार चढ़ावों से सजी हुई एक कसौटी है जिसे हर कोई अपने तरीकों से हल करने का प्रयास करता है लेकिन अब तक की अपनी ज़िंदगी में मैंने तमाम कठिन मरहलों का सामना करते हुए यह महसूस किया है कि यदि आपके मन में "उत्साह" है तो आप कठिन से कठिन वक़्त को भी मुस्कुराते हुए झेल सकते हैं पर वहीं अगर आपके अंदर उत्साह का भाव नहीं अवतरित हो रहा है तो निश्चित रूप से सोने की सेज भी आपको काँटों के समान चुभने लगेगी।

अक्सर लोग घर, परिवार और समाज के सामने प्रसन्नता का अभिनय करते हुए उत्साही दिखने का प्रयास करते हैं किंतु यह स्थिति उत्साही न होने से भी घातक है वास्तव में यहीं से अवसाद का उद्भव होता है।

आपको जानकर हैरानी होगी की समूचे विश्व में अधिकतर लोगों को उत्साह का अर्थ ही नहीं पता है, उन्हें लगता है कि प्रसन्न रहना ही उत्साह है जबकि ऐसा नहीं है उत्साह की सटीक परिभाषा को स्वेट मार्डेन के कथन से समझा जा सकता है। स्वेट ने कहा है कि, "काम करते रहने में उत्साह नहीं, कष्ट सहते रहने में उत्साह नहीं, प्रसन्न रहने में उत्साह नहीं, बल्कि काम करते हुए बीच में आने वाले कष्ट को सहते हुए प्रसन्न रहें और काम करते चले जाएं, वही उत्साह हैं।"

आप यदि उत्साह शब्द के सार तक पहुंचना चाहेंगे तो आपको दिखेगा कि इस अकेले शब्द में सम्पूर्ण जीवन को जीने की कला कल्पित हो रही है,"उत्साह परिपूर्णता की प्रथम इकाई है" उत्साह एक तरह का प्रतिरोध है निडरता के प्रति, निराशा के प्रति और निरंकुशता के प्रति। हमारे दौर के मशहूर लेखक और ग़ज़लकार जावेद अख्तर साहब का एक शेर है,

"क्यों डरें ज़िन्दगी में क्या होगा, कुछ ना होगा तो तज़रूबा होगा।"

इस शेर में जो भाव उजागर हो रहा है बस उसी भाव का नाम है उत्साह यदि यह भाव किसी व्यक्ति में है तो निश्चित है कि वह सफल होगा क्योंकि निडरता सफलता की पहली सीढ़ी है और यह निडरता मन में तभी जन्म लेती है जब उसमें उत्साह होता है।

हाल के दिनों में मैं देख रहा हूं कि देश - दुनिया में आत्महत्याओं का चलन बढ़ गया है मुझे लगता है कि इसका सिर्फ एक कारण है और वो है उत्साह की कमी।

हमें और हमारी नई पीढ़ियों को यह समझना होगा कि चमचमाती लाइट्स और गूंजते हुए पॉप संगीत में मदिरा सेवन से जीवन में उत्साह उद्दरित नहीं होगा। उत्साह हमारे अंदर है लेकिन इसे ढूंढने के लिए हम बाहरी दुनिया में दर बदर घूमते रहते हैं जिसके कारण आख़िर में हमें निराशा ही मिलती है। इस निराशा के साथ कुछ लोग जीवन गुज़ार देते हैं और कुछ लोग जो निराशा को स्वीकारने का सामर्थ्य नहीं रखते हैं वो आत्म हत्या जैसे कदम उठा लेते हैं।

इस सब के पीछे गलती उस शख्स की नहीं है जिसने आत्महत्या की, गलती उस समाज की है जिसने कभी अपने सदस्यों को सही रास्ता दिखाया ही नहीं। गलती उस समाज की है जिसने अंतः शांति जैसी किसी चीज़ को स्वीकार ही नहीं किया।

उत्साह जीवन जीने की पहली इकाई है। मन में उत्साह का होना उतना ही आवश्यक है जितना कि शरीर में श्वासों का। बगैर उत्साह के मनुष्य या तो मृत होता है या मृत होने की तैयारी में होता है इसलिए मन में सदैव उत्साह का सेतु सधा होना चाहिए क्योंकि यह, "उत्साह ही है जो आपको उत्थान तक पंहुचा सकता है।"

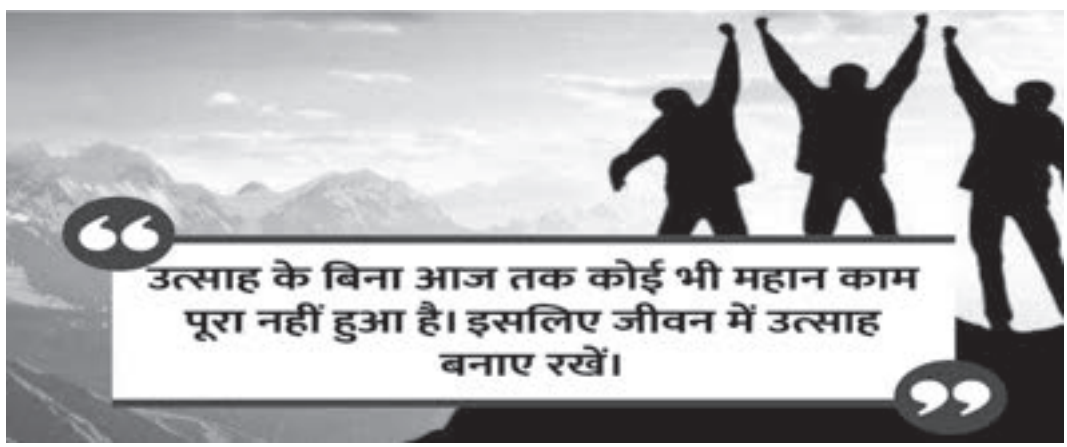

युवा : जिंदगी एक कला है

गिरिशा सिंह तोमर
बीकॉम प्रोग्राम, द्वितीय वर्ष

जिंदगी एक कला है
इसी में तो नशा है
क्यों है इतना परेशान तू,
इस परेशानी में ही तो दवा है
जिंदगी एक कला है।

क्या चाहता है इस जिंदगी से,
क्यों तू इतना खफ़ा है
किस बात का है तुझे गम,
और किस बात की मिली तुझे सज़ा है
जिंदगी एक कला है।

बढ़ना है आगे ...
तो क्यों दुनिया से डरा है,
जब तू घर से निकल पड़ा है,
इसी के लिए तो तू अपनों से लड़ा है,
जिंदगी एक कला है।

अब रुका है क्यों
ज़माने ने बेहया तुझे कहा है?
क्यों करता तू इनकी परवाह है!?
रुद्र तू डट के खड़ा है,
कलाकार यूही नहीं तुझे कहा है,
जिंदगी एक कला है।

बेखौफ तू बढ़ता चल,
बेफिक्र बस संभलता चल,
ये खुदा तेरे साथ खड़ा है,
न रुकना अब न झुकना अब,
कर्मों का मीठा फल तुझे मिला है,
जिंदगी एक कला है
जिंदगी एक कला है।

विभिन्न समितियों द्वारा आयोजित कार्यक्रमों के छाया चित्र

संगोष्ठी
सम्मान समारोह-2022
अशोक सिंहल फाउण्डेशन
दिल्ली विश्वविद्यालय

“विषय : नई शिक्षा नीति और संस्कृत”
तिथि एवं समय : रविवार, 21 अगस्त 2022, दोपहर 3.00 बजे
समारोह स्थल : पीजीडीएवी महाविद्यालय (सांध्य) सभागार, नेहरू नगर, नई दिल्ली
सहभागिता : विहिप संस्कृत आयाम-भारत संस्कृत परिषद् राष्ट्रोक्ति वेबपोर्टल अशोक
संस्कृत परिषद्, पीजीडीएवी महाविद्यालय (सांध्य)

“विषय : नई शिक्षा नीति
तिथि एवं समय : रविवार, 21 अगस्त 2022, दोपहर 3.00 बजे
समारोह स्थल : पीजीडीएवी महाविद्यालय (सांध्य) सभागार, नेहरू नगर, नई

संस्कृत सम्भाषण शिविर

विशेष व्याख्यान

हंसराज महाविद्यालय व जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में संगोष्ठी

आशीर्वाद समारोह

संस्कृत प्रतियोगिताएँ

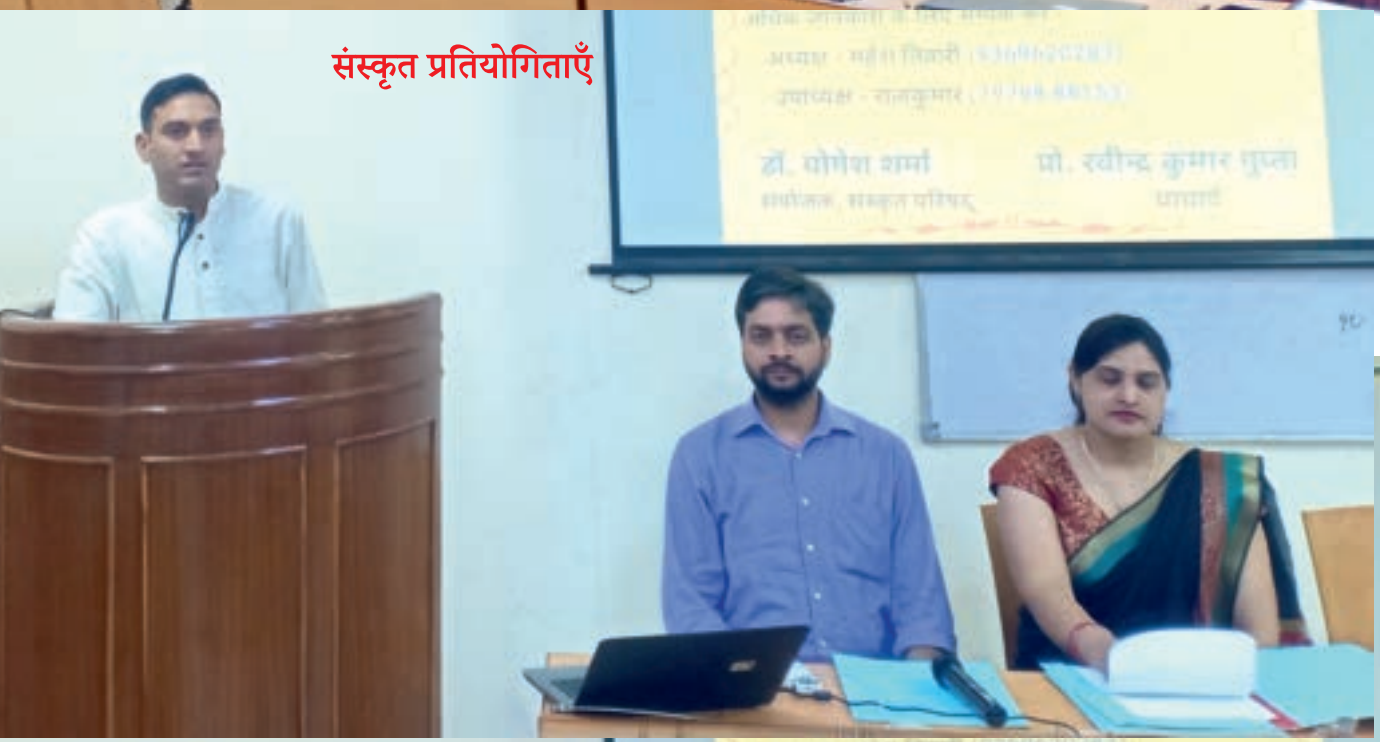

FAREWELL 04-05-2023

FRACTALS

JAGMOHAN SIR'S FAREWELL 28-07-2023

96

FROM ONE GLORIOUS CHAPTER TO A NEW ONE

Marketing Club Seminar held on 31.3.23

Library 2022-23

हिंदी विभाग

हिंदी साहित्य सभा

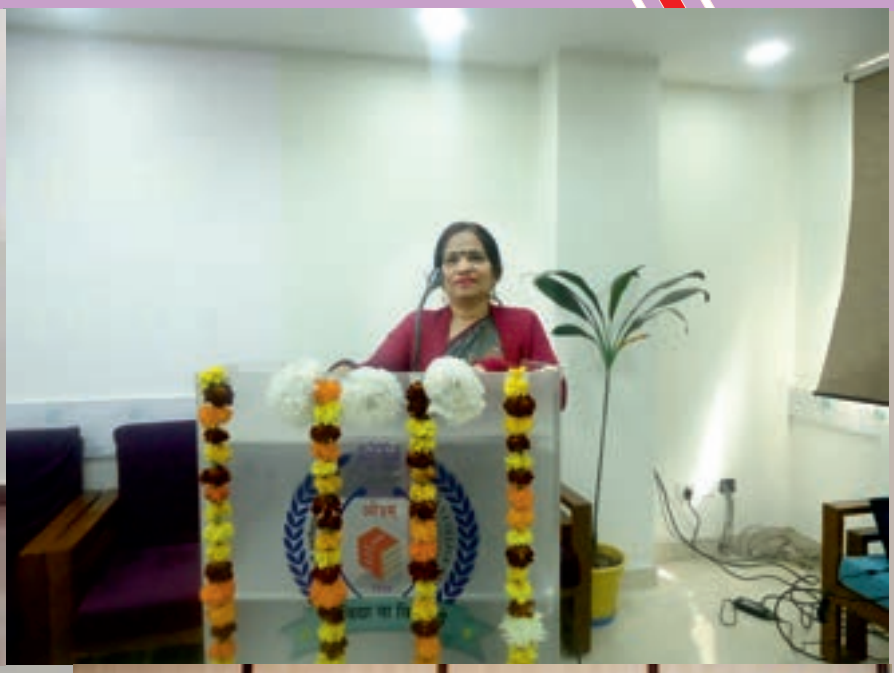

राजभाषा प्रकोष्ठ

P.G.D.A.V. COLLEGE
(UNIVERSITY OF DELHI)

P.G.D.A.V. COLLEGE
(UNIVERSITY OF DELHI)

You have the power
to fulfil dreams!

Gandhi Study Circle

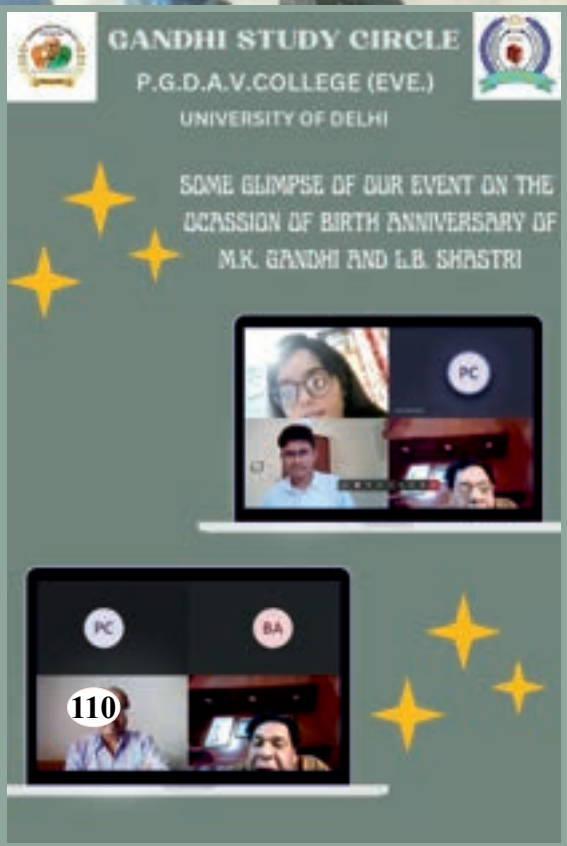

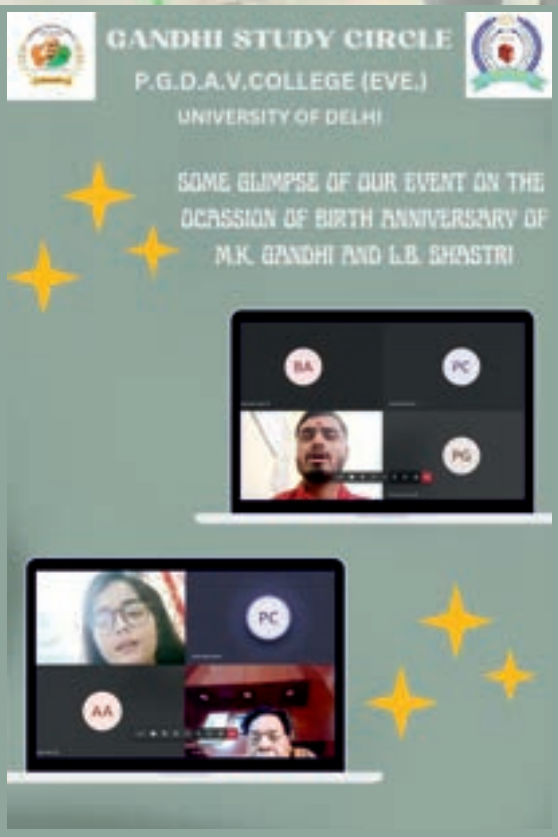

HAPPY
NEW
YEAR

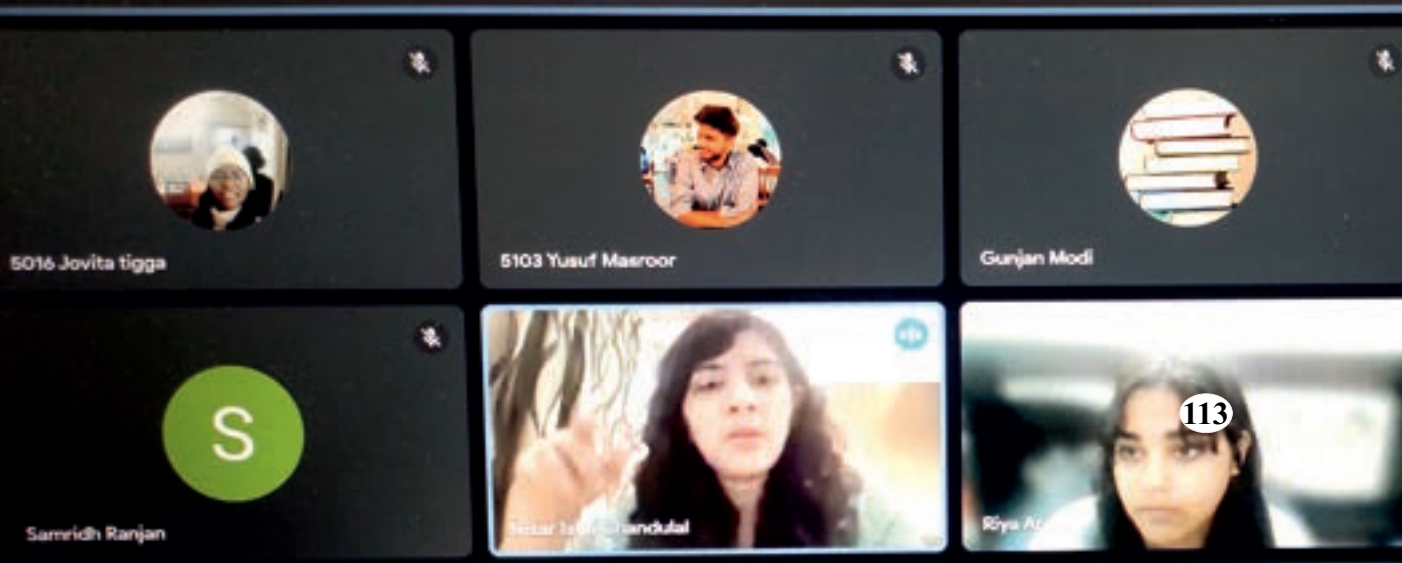
5016 Jovita tigga
5103 Yusuf Masroor
Gunjan Modi
S
Samridh Ranjan

K R I T A G

BLOO
MING

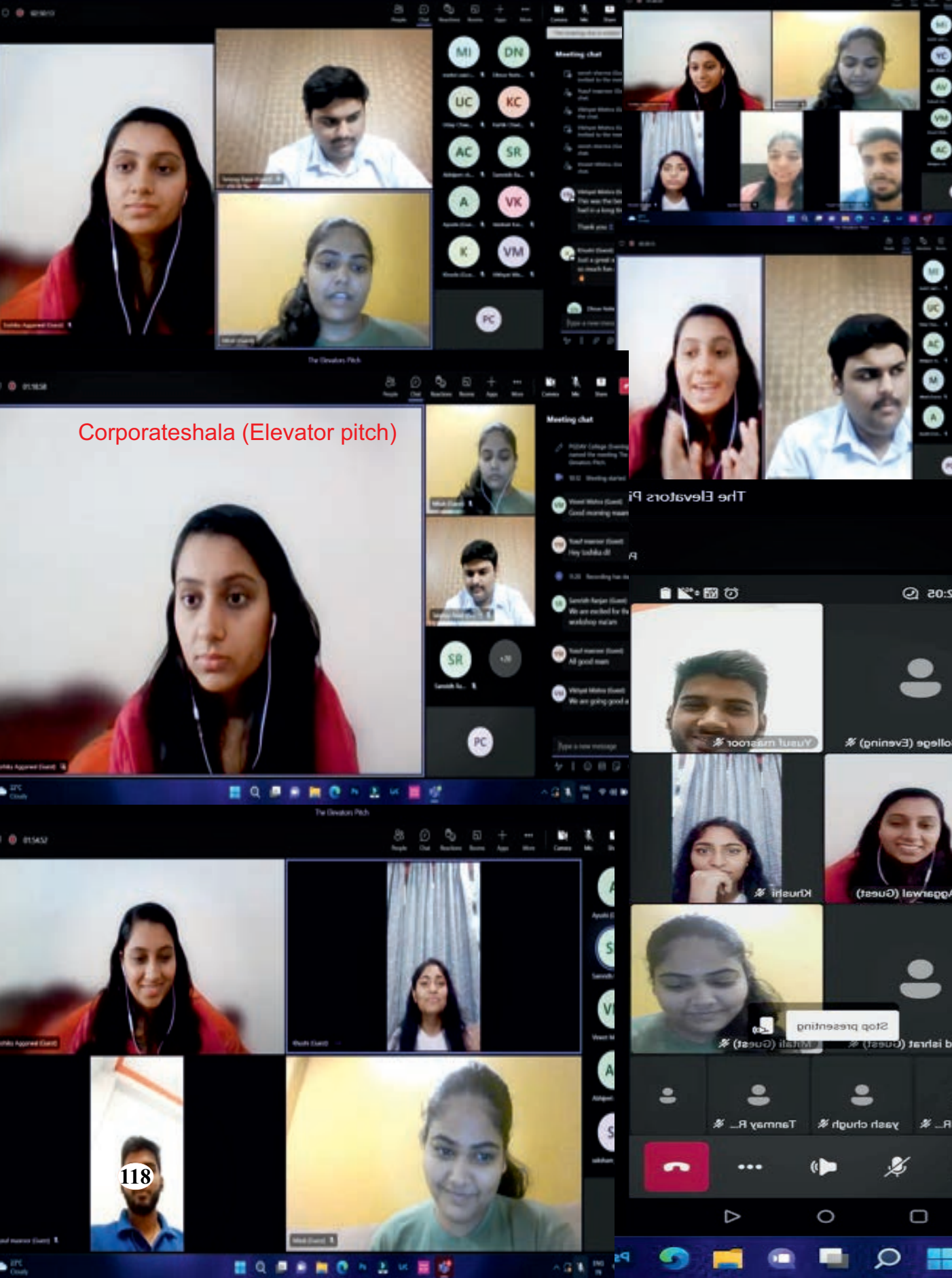
Corporateshala (Elevator pitch)

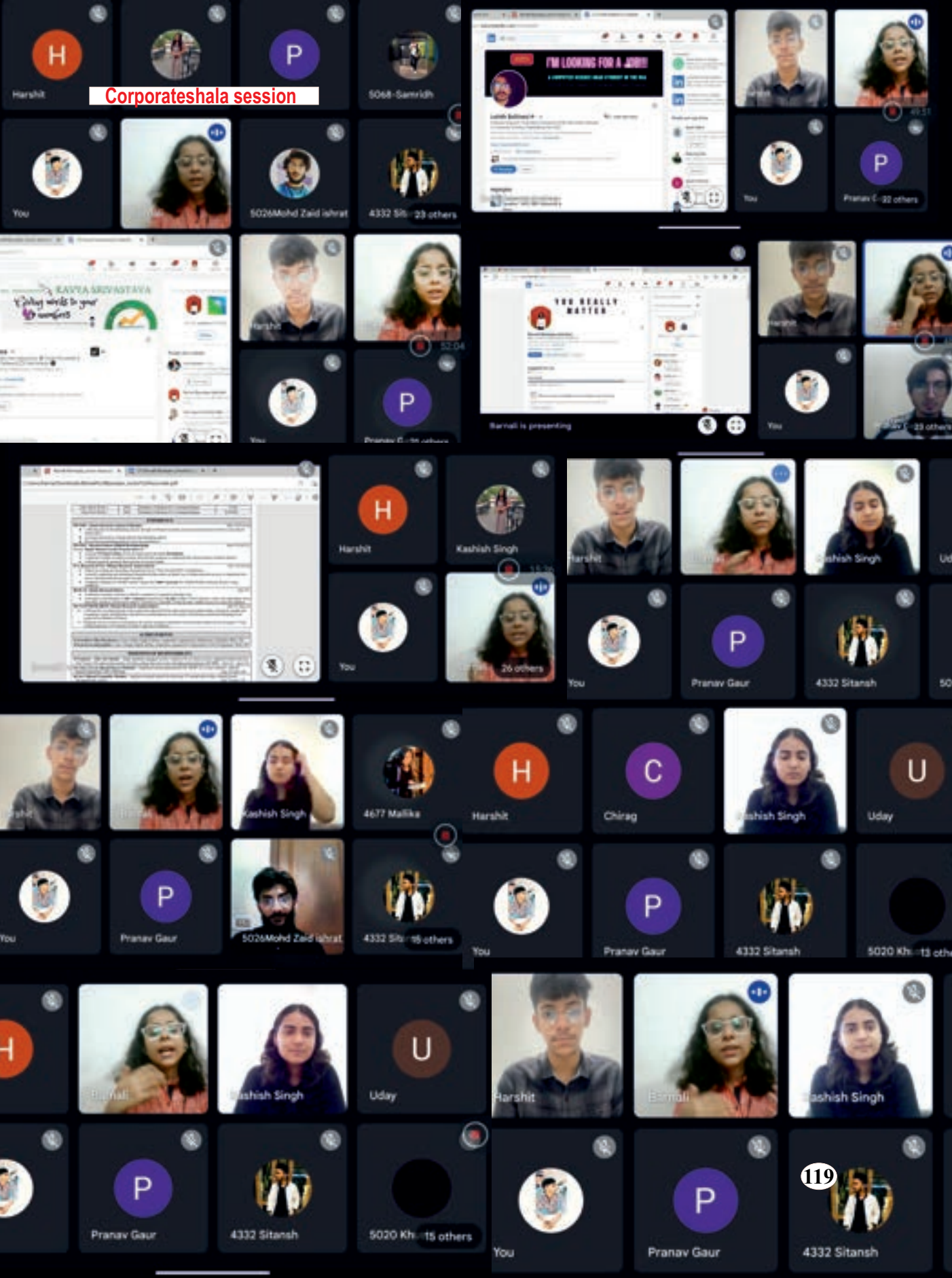

Corporateshala session

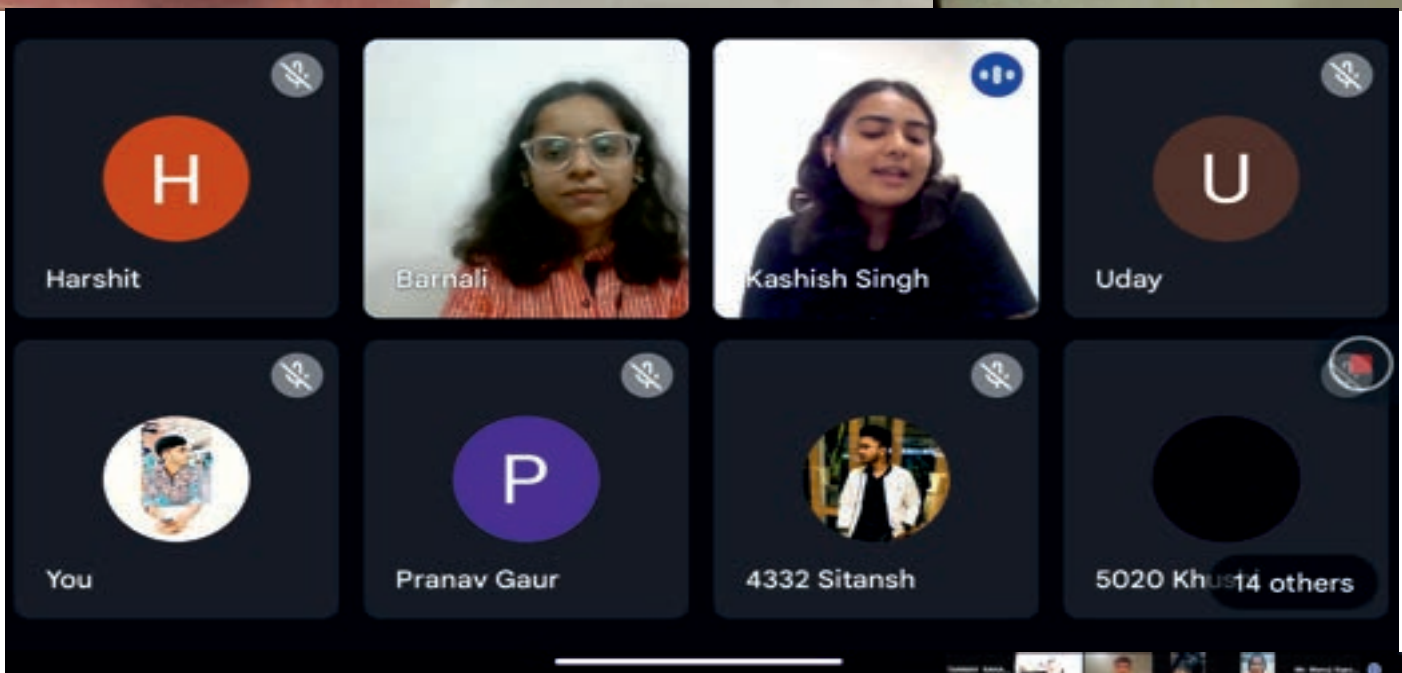
H
Harshit
Barnali
Kashish Singh
U
Uday
You
P
Pranav Gaur
4332 Sitansh
5020 Khu
14 others

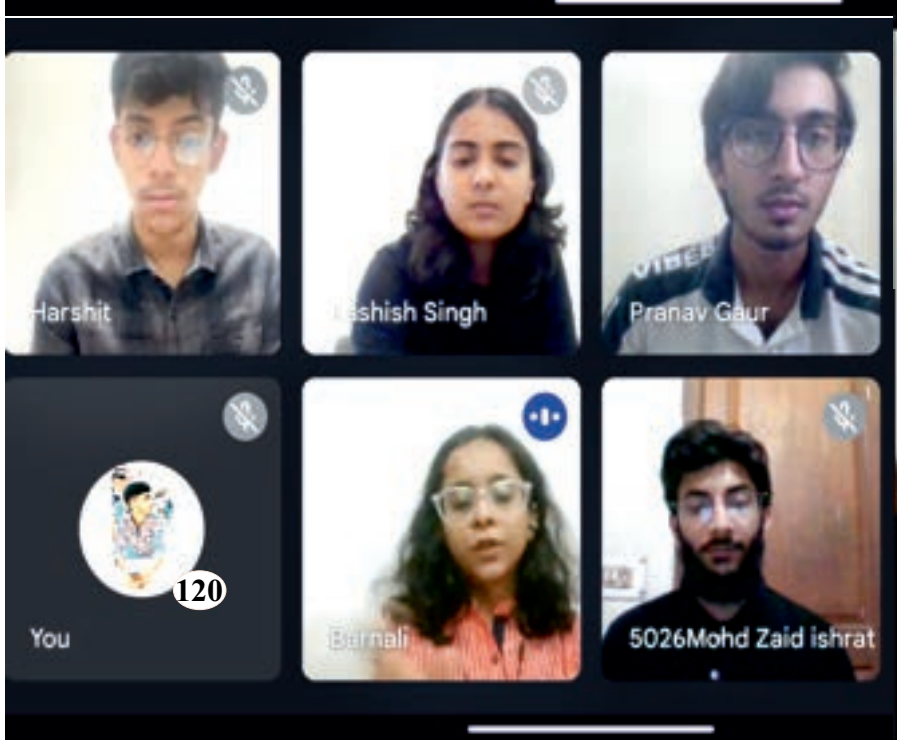
Harshit
Pranav Gaur
You
120
5026Mohd Zaid ishrat

Drishyam-2023

CHALAVA

FILA

Extempore Competition(26-11-2022)

Essay Writing Competition on G20(12-6-2023)

Parliament Visit (31-03-2023)

Seminar on G20(21-02-2023)

Dramatics society

Annual Theatre Fest UMANG '23

Decoration of College with artificial Pots & Plants on 7th April, 2023

Teachers Day Celebration Tilak Ceremony of faculty Members by Students on 5th September, 2022

YOGA CLUB

MoU SIGNING CEREMONY

VALEDICTORY FUNCTION OF ADD-ON COURSE
on
"MIND MANAGEMENT THROUGH
SHRI BHAGAVAD GITA"
&
MoU Signing Ceremony
between

ISKCON

P.G.D.A.V COLLEGE (EVE.)
(UNIVERSITY OF DELHI)
VALEDICTORY FUNCTION OF ADD-ON COURSE
on
"MIND MANAGEMENT THROUGH
SHRI BHAGAVAD GITA"

&
MoU Signing Ceremony

VALEDICTORY FUNCTION OF ADD-ON COU
on
&
MoU Signing

Cultural Events

Welcome you to
संस्मृति

ALUMNI MEET 2023
संस्मृति

Welcome you to
ALUMNI MEET 2023
संस्मृति

(University of
ALUMNI COMMITTE & IQAC
Welcome you o
ALUMNI MEET 2023
संस्मृति
APRIL 16, 2023 (SUNDAY)
3:00 PM ONWARDS
AUDITORIUM,
P.G.D.A.V. COLLEGE (EVE.)
PROF. B. N. CHAUDHARY
PROF. HARISH ARORA
DR. ANITA BAJAJ
PROF. R. K. GUPTA

P.G.D.A.V. COLLEGE (EVE.)
(University of Delhi)
ALUMNI COMMITTEE & IQAC
Welcome you to
ALUMNI MEET 2023
संस्मृति

Celebrates
दीपोत्सव
In the
NTENARY YEAR OF UNIVERSITY OF DELHI
With
"दीप से दीप जले"

पी.जी.डी.ए.वी(सांध्य)
शुभ दीपावली
शुभ हो दीप जले

पी.जी.डी.ए.वी(सांध्य)
शुभ दीपावली

दीपोत्सव
CENTENARY YEAR OF UNIVERSITY OF DELHI
"दीप से दीप जले"

P.G.D.A.V. COLLEGE (EVE.)
(UNIVERSITY OF DELHI)
IN COLLABORATION WITH
JAMMU KASHMIR PEOPLES' FORUM
COMMEMORATES
KARGIL VIJAY DIWAS
पराक्रमी भारत - विजयी भारत
SH. MAHINDER MEHTA
(CONVENOR, JKPF)
PROF. R.K. GUPTA
(PRINCIPAL)

IN COLLABORATION WITH
JAMMU KASHMIR PEOPLES' FORUM
KARGIL VIJAY DIWAS
PROF. R.K. GUPTA
(PRINCIPAL)

P.G.D.A.V. COLLEGE (EVE.)
JAMMU KASHMIR PEOPLES FORUM
KARGIL VIJAY DIWAS
PROF. R.K. GUPTA

SH. MAHINDER MEHTA
(CONVENOR, JMPF)
GUPTA
PAL)

Sankalp Diwas

P.G.D.A.V. COLLEGE (Eve.)
TALENT HUNT
BIHU
LOHRI
MAKAR SANKRANTI
PONGAL

Skill Innovation and Entrepreneurship Cell

ENACTUS PCDAVCW
PROJECT VASTU
GPS Map Camera
New Delhi, Delhi, India
H782+MHW, Nehru Nagar, Lajpat Nagar, New Delhi, Delhi 110065, India
Lat 28.566835°
Long 77.251588°

ENACTUS PCDAVCW
PROJECT VASTU
GPS Map Camera
PGDAV College
Google
New Delhi, Delhi, India
H782+MHW, Nehru Nagar, Lajpat Nagar, New Delhi, Delhi 110065, India
Lat 28.566837°
Long 77.251646°
09/09/22 04:15 PM

Pravah events

विकसित युवा
विश्वगुरु भारत
वर्ष 2080 की

प्रवाह 2023

प्रवाह

P.G.D.A.V. COLLEGE (EVE.)

sparx

P.G.D.A.V. COLLEGE (EVE.)
COMPETITION

COLLEGE (EVE.)

REVEL BEATS

P.G.D.A.V. COLLEGE (EVE.)

P.G.D.A.V. COLLEGE (EVE.)
REVEL BEATS
WESTERN DANCE (GROUP)
COMPETITION
RIEVA
REVEL BEATS

P.G.D.A.V. COLLEGE (EVE.)
PRAVAH '23

P.G.D.A.V. COLLEGE (EVE.)

P.G.D.A.V. COLLEGE (EVE.)
कलांजलि
प्रवाह
MARCH 21 & 22, 2023

ZESTREETS

PRAVAH
2023

PRAVAH

2:00 PM
3:30 PM
March 21 & 22, 2023
(Tuesday & Wednesday)
Do follow us on Instagram
MS. UDITA AGRAWAL
CONVENER
1:00 PM
3:00 PM
PROF. R. K. GUPTA
PRINCIPAL

P.G.D.A.V. COLLEGE (EVE.)
(University of Delhi)
कलांजलि- THE CULTURAL COMMITTEE
presents
प्रवाह 2023
The Annual Cultural Fest
Theme
March 21 & 22, 2023
(Tuesday & Wednesday)
AUDITORIUM
Day-1, March 21, 2023
EVENTS
TIME
Non-Stop
10:30 AM
12:30 PM
2:00 PM
3:30 PM
AUDITORIUM
Day-2, March 22, 2023
EVENTS
TIME
आलाप
लोक गायन
11:00 AM
1:00 PM
3:00 PM

P.G.D.A.V. COLLEGE (EVE.)
(University of Delhi)
कलांजलि- THE CULTURAL COMMITTEE
presents
प्रवाह 2023
The Annual Cultural Fest
AUDITORIUM
Day-1, March 21, 2023
AUDITORIUM
Day-2, March 22, 2023
P R A V A H

P.G.D.A.V. COLLEGE (EVE.)
(University of Delhi)
कलांजलि- THE CULTURAL COMMITTEE
presents
प्रवाह 2023
The Annual Cultural Fest
March 21 & 22, 2023
AUDITORIUM
Day-1, March 21, 2023
EVENTS
TIME
10:30 AM
12:30 PM
AUDITORIUM
Day-2, March 22, 2023
EVENTS
TIME
11:00 AM
1:00 PM
3:00 PM

P.G.D.A.V. COLLEGE (EVE.)
(University of Delhi)
कलांजलि- THE CULTURAL COMMITTEE
presents
प्रवाह 2023
The Annual Cultural Fest
AUDITORIUM
Day-1, March 21, 2023
EVENTS
TIME
10:30 AM
12:30 PM
2:00 PM
AUDITORIUM
Day-2, March 22, 2023
EVENTS
TIME
11:00 AM
1:00 PM
3:00 PM

SV
S2

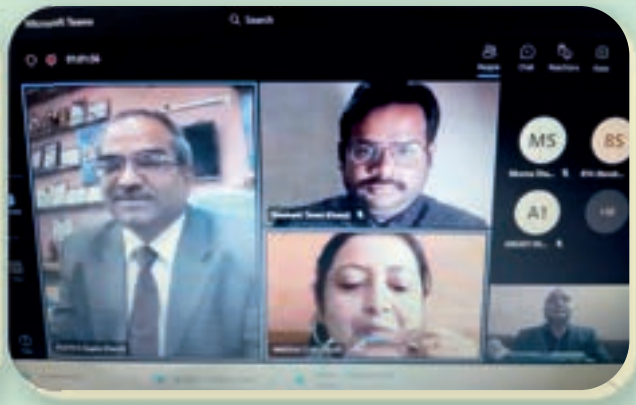
MS
BS
AI

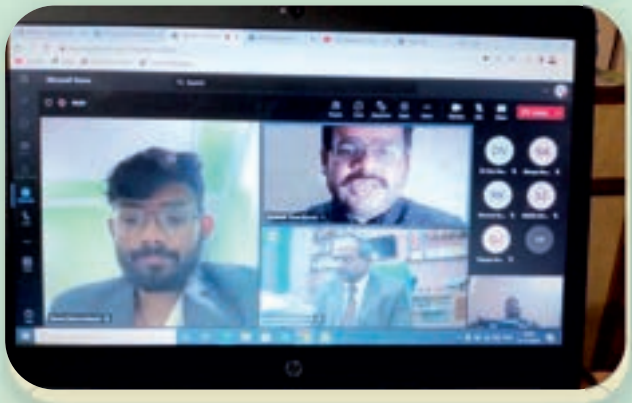

S2
PG
BS

MS
S2
PG

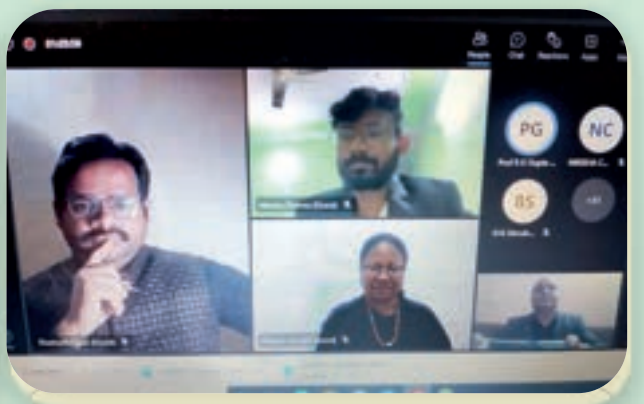
PG
NC
BS

UNITY
DAY

GPS Map Camera
New Delhi, Delhi, India
H782+XJ5 Pgdav College Office, Nehru Nagar, Lajpat Nagar, New Delhi, Delhi 110024, India
Lat 28.567353°

राष्ट्रीय स्वाभिमान आंदोलन

New Delhi, Delhi, India

RASHTRIYA EKTA DIWAS-2023

IN
DELHI
DTE

GURU VISHRAM
Old Age Home
HELPLINE N. 8588888999
VRIDH ASHRAM
Managed By
SHEOWS

SONY

THE BLIND RELIEF ASSOCIATION

GURU VISHRAM VRIDH ASHRAM
Old Age Home
Managed By
SHEWS

Light, Water and Sanitation Committee

1
2
3

1
2
3

ENGLISH SECTION

FROM THE EDITOR'S DESK

Ms. Priyanka Chatterjee
Editor-English

Dear Readers,

Welcome to the English section of ***Neelambara***!

This year our focal theme is '***The Role of Youth in Nation Building***.' According to the 2022 revision of the World Population Prospects, India has more than 50% of its population below the age of 25 and more than 65% below the age of 35. This is, indeed, a great resource that our countryis harbouring. We are living in an era where AI is developing by leaps and bounds and, therefore, the youth should be at the helm of all affairs as this is their natural forte. They can truly lead our country to great heights with their immense grasp over technology and their in-born resourceful attitude. The youth of our country have the right balance of traditional values on the one hand and a modern mindset on the other. This is, undoubtedly, a winning combination.

In this issue of ***Neelambara***, amongst various offerings, we have our students writing on topics related to this focal theme. The regular feature of our magazine '***College Collage***' at the end also chronicles the wide array of activities that our young students have engaged in throughout the academic session which, in itself, is a pointer towards the immense potentiality and talent that lies in each one of them. As their teachers, we truly believe that they will use this potential to the best of their abilities. It would be the best way they can repay the debt to the country.

We sincerely hope that our readers enjoy going through the efforts put up by our students. I would like to express my sincere gratitude towards our respected Principal Prof. R.K. Gupta for being our guiding light at every stage in the publication of the magazine. I am also thankful to my co-editors from the Hindi and Sanskrit departments as well as our very talented student-editors. Do reach out to us with your valuable feedback and suggestions at neelambara@pgdave.du.ac.in.

Wishing you all health and happiness!

STUDENT-EDITORIAL

Dear Reader,

Saadat Ali
(Student-Editor)

It is with great pleasure and pride that we present to you this year's edition of ***Neelambara – The Annual College Magazine***, a highlight reel of our achievements and a platform for budding writers and artists to showcase their skill and work. This year's edition presents a fair balance of beautifully written artistic pieces and carefully constructed articles, compre-hensively demonstrating the talent of our youth. Speaking of Youth, this year's theme was "**Role of Youth in Nation Building**".

Undeniably, the youth is the most influential (and perhaps the most influenced) population group for any nation. The youth decides the trends of the present, and consequently, shapes the future. Hence, mobilising the youth towards good is one of the most important goals for any civilisation. It was only last year when it was published that around **half the population** of India is under the **age of 30** (*The Indian Express*, *May '22*, evaluating statistics from the NFHS-5). A promising prospect indeed. This youth, if nurtured, educated and trained properly can bring India to heights unseen. A Youth that is dynamic, informed and active. Youth that believes in swift and definite change when needed, but also in the conservation of the rich Indian culture that they inherit. With the knowledge of modernity and wisdom of tradition, a Youth that further sows seeds that bless this country once again when the torch is inevitably passed on to the next generation. This is the nation that we should aspire to build, and it is certainly one that I would want to live in.

Through this magazine, we are playing our part in this very mission, while also proudly extending our college's legacy. We hope you enjoy this edition of *Neelambara* and by the end of it, are inspired to pursue something great.

Best wishes!

Champions of Change: The Essential Role of Youth in Driving Sustainability and Nation Development

Ms.Tanishka Gupta
Guest Lecturer
Dept. of Commerce

Sustainability refers to the ability to meet the needs of the present generation without compromising the ability of future generations to meet their own needs. It involves balancing the economic, social, and environmental dimensions of development to ensure a healthy and sustainable future for all.

In practical terms, sustainability involves the adoption of practices and policies that promote environmentally responsible behavior, social equity, and economic growth. For example, the use of renewable energy sources such as wind and solar power instead of finite fossil fuels can help reduce greenhouse gas emissions and mitigate the impacts of climate change. This, in turn, contributes to the long-term sustainability of our planet.

Another example is sustainable agriculture, which involves the use of environmentally friendly farming practices such as crop rotation, the use of organic fertilizers, and the reduction of water usage. This type of agriculture not only protects the environment but also helps to ensure food security for future generations by maintaining soil fertility and preserving biodiversity.

Sustainable urban planning is another critical aspect of sustainability. This involves the design and development of cities that are livable, healthy, and environmentally responsible. This can be achieved through the promotion of sustainable transportation options, the use of green spaces, and the development of energy-efficient buildings.

The role of youth in promoting sustainability is crucial and imperative. They have the power to raise awareness and educate others, advocate for sustainable policies and practices, adopt sustainable lifestyle choices, participate in environmental activism, and drive innovation and entrepreneurship in the green economy. By doing so, they can contribute to

the creation of a sustainable future for themselves and future generations. It is imperative that young people are empowered and encouraged to take an active role in promoting sustainability and addressing environmental challenges. Their energy, creativity, and passion can have a profound impact and help build a sustainable world for all.

Sustainability encompasses three interrelated dimensions: environmental, social, and economic. Environmental sustainability focuses on preserving and protecting the natural environment for future generations. Social sustainability involves ensuring equitable and inclusive communities, with a focus on human well-being and social equity. Economic sustainability focuses on promoting economic growth and development while utilizing resources in a responsible and sustainable manner. These three dimensions are interdependent, and addressing one dimension without considering the others is unlikely to lead to long-term sustainability. Achieving true sustainability requires a holistic approach that takes into account the environmental, social, and economic impacts of actions and decisions.

Addressing sustainability is of utmost importance for future generations. The current rate of resource depletion and environmental degradation is unsustainable, and unless we take action, future generations will inherit a planet that is less hospitable and less able to support human life. Additionally, failure to address sustainability will lead to a decline in the quality of life and a reduction in economic opportunities. It is the responsibility of current generations to ensure that future generations have access to the resources and opportunities they need to thrive. By prioritizing sustainability, we can create a better future for all and leave a lasting legacy for those who come after us.

Adopting sustainable lifestyle choices is a crucial step that young people can take to promote sustainability. This involves making conscious choices in areas such as consumption, transportation, and energy use, with the aim of reducing one's carbon footprint and minimizing the impact on the environment. For example, reducing meat consumption, using public transportation or cycling instead of driving, and reducing energy consumption through the use of energy-efficient appliances, can all contribute to a more

sustainable lifestyle. Additionally, young people can support sustainable businesses and products, and encourage their peers and families to adopt sustainable practices as well. By leading by example and promoting sustainable lifestyles, young people can have a significant impact on the transition towards a more sustainable future.

Young people can drive innovation and entrepreneurship in the green economy by developing sustainable business models that address environmental challenges and promote economic growth. By embracing innovative technologies and creative thinking, young entrepreneurs can create new products, services and industries that support a more sustainable future. They can bring fresh perspectives and new ideas to the table, helping to spur on the transition towards a greener and more sustainable economy. Furthermore, by creating jobs and contributing to economic growth, they help to build a more resilient future for everyone. The role of youth in driving innovation and entrepreneurship in the green economy is critical, as they have the potential to lead the way in creating a sustainable future.

Schools and communities can play a crucial role in promoting sustainability through a variety of projects and initiatives. These can include recycling programs, energy-saving initiatives, community gardening projects, and educational workshops and events that raise awareness about sustainability issues. By involving young people in these initiatives, they can learn about the importance of sustainability and develop the skills and knowledge needed to contribute to a more sustainable future. Additionally, school and community-based projects can bring people together and foster a sense of community and shared purpose, helping to create a more sustainable future for all. Through these initiatives, schools and communities can play a significant role in promoting sustainability and shaping the attitudes and behaviors of the next generation

Mukesh was a 12th standard student at a prominent high school in Mumbai. Despite his busy schedule of academic and extracurricular activities, he was deeply passionate about sustainability and community work. He was aware of the environmental and social challenges faced by his city, particularly the plight of residents in Dharavi, one of Asia's largest slums.

After school hours, Mukesh would regularly volunteer in sustainability and community development projects in Dharavi. He believed that small efforts by individuals could make a big impact in the long run.

One of the initiatives that Mukesh was involved in was waste management. He worked with a team of volunteers to educate residents about the importance of proper waste disposal and recycling. They organized community clean-up drives and worked with the local municipality to set up recycling bins in public spaces. Through their efforts, they were able to reduce the amount of waste being sent to landfills and increase recycling.

Mukesh was also involved in promoting sustainable agriculture in Dharavi. He worked with farmers to set up community gardens, where they could grow their own crops using eco-friendly methods. He trained farmers on sustainable agriculture techniques and helped them access markets for their produce. Through this initiative, the community was able to access fresh and healthy food, while also reducing their carbon footprint.

Additionally, Mukesh worked with local schools to educate young students about sustainability and environmental protection. He organized interactive sessions and field trips to raise awareness among the young generation.

Mukesh's efforts did not go unnoticed. He received recognition and accolades from various organizations and government agencies for his work. He was also featured in local news articles and gained a reputation as a young leader in sustainability and community work.

Mukesh's story is a testament to the power of youth in creating a more sustainable and equitable world. Through his hard work and dedication, he was able to make a positive impact in his community and inspire others to get involved.

The Eternal Wealth: Celebrating the Indian Knowledge System

From the depths of ancient wisdom,
Comes a call to seek and find,
The knowledge that can guide us,
And help us leave our mark behind.

Oh India, your knowledge system,
Is a wealth beyond compare,
Let us embrace and celebrate,
The wisdom that we share.

In the teachings of the Vedas,
Lies the path to self-realization,
And the Upanishads, they offer,
A path to liberation.

Oh India, your knowledge system,
Is a wealth beyond compare,
Let us embrace and celebrate,
The wisdom that we share.

From the Bhagavad Gita,
Comes a message of the soul,
And in the tales of the Puranas,
Lies a wealth of ancient lore.

Oh India, your knowledge system,
Is a wealth beyond compare,
Let us embrace and celebrate,
The wisdom that we share.

So let us bring this wisdom,
To the forefront of our youth,
And let our education system,
Embrace this ancient truth.

Oh India, your knowledge system,
Is a wealth beyond compare,
Let us embrace and celebrate,
The wisdom that we share.

For the knowledge of our forefathers,
Is a treasure beyond measure,
And with its guidance and wisdom,
We'll build a better future together.

By Ms. Tanishka Gupta
Guest Lecturer
Dept. of Commerce

I Admit It: A confession to the Bravehearts of this nation

Sharanyam Singh
B. A. (Hons.)
Political Science

I admit - I have, at times, taken this freedom for granted. I admit to giving my petty issues a needlessly large outlook and failing to realize the significance of the greater liberty that I enjoy. I think I have always viewed independence as a natural state of being, a way of life - because I have not had to fight for it. Moreover, it has always been hard to define what being a patriot or what being an Indian means. This has forced me into thinking about those selfless souls who have pledged their lives to the service of our motherland.

India ushered in its 75th year of Independence on August 15, 2022, a momentous milestone in its journey since attaining freedom in 1947. I have observed and realized that India is indeed the most beautiful nation in this world, and to uphold this beauty, stand inspiring men and women who have pledged to protect and uphold the sovereignty and integrity of this great nation. My heart goes out to India's armed and defence Forces for their service to the nation, out of utmost passion and love.

History has witnessed, whenever our pride has been threatened by enemies encroaching on our lands, the Indian forces have chased them away without the slightest hint of fear for their lives. The nation shall always remember such immortal souls with eternal reverence. Tales of their indomitable valour and the undaunted spirit shall never perish. Every bit of them has made me believe in the greatness of this land, that it is worth fighting and dying for.

I shall forever be indebted to you, honourable beings, gallant warriors of the land, for protecting the life and liberty of me and my countrymen. There have been wars, there have been battles, there has been fire, there has been blood. I feel proud because you fight not for yourself but for the glory of the

nation. It is the not arms and ammunitions that fuel a courageous son of the land, it is not the guns, cannons, or artillery, the fuel is the nation itself, to which our hearts and souls are attached.

I admit it,

Be it the scorching heat of the sun or the bone-chilling cold;
Be it the persistent rains or the thunderstorms;
Be it the deep dark valleys or the high towering mountains;
You have always stood strong,
You have always stood strong.
Thank You Bravehearts, we are grateful and shall ever be.
Jai Hind!

Autumn

Sharanyam Singh
B. A. (Hons.)
Political Science

It was one of those golden days
Full of faded trees and changing leaves.
Amidst this magic,
Seated on a bench under an oak she was.

The autumnal sunshine fell on her pink cheeks
A gentle wind scattered her hair
Crisp sunburnt leaves danced around her
The reddening trees swayed for her love.

Caressing her hair, she cast a smile,
A gorgeous hue took over the evening
The autumnal warmth began to spread
Symphony of the fall echoed with grace

The hallway to my heart was filled with her aura,
It was something that could not be said,
But only seen and felt.
The world began to feel a bit more beautiful.

A torrent of emotions came over,
Autumn had awakened, and
Amidst this magic,
Seated on a bench under an oak she was.

Youth: An Engine of Growth

Ritik Raj Kushwaha
B. A. (Hons.)
Political Science

Youth, the word itself reflecting its capabilities, strength and power to change anything. The word "youth", it is a source of power, source of new, unmatchable achievements, source of strength. Hence I chose the topic as "Youth: An Engine of growth". Why did I choose it, you all may ask. In order to understand that, we must correlate both of them, like in any vehicle, engine is one of the most prominent parts, so for any country youth is their engine as well. As we all know that an engine needs some ignition material to work at its best, similarly we need proper education, health facilities and opportunities for the Youth for their maximum utilization and the country's growth.

I am not just exemplifying the importance of youth, here are examples of some countries that achieved great heights and became developed nations after considering their youth power and channeling it to their Nations' growth. For example Japan. Japan was among the first major economies to experience rapid growth because of their demographic transition. Now it is the third (3^{rd}) largest economy of the world, and the same applied to the East Asian nations growth between 1975 and 2005 was also majorly contributed by youths. This high level of growth of East Asia Nations was regarded as the "East Asian miracle".

Now India also has the opportunity to avail it and become a world leader or "Vishwa Guru". According to the Economic Survey 2018-19, India's demographic dividend will peak around 2041, when the share of working age i.e. 20-55 years population is expected to hit 59%. This opportunist window for India will open till 2055-66 and I think this is an ample amount of time for India to channelize their youth power in order to become the master of the 21st century.

In today's time India is already on its path to maximize and utilize its youth's capabilities. Here are some renowned examples of remarkable achievements of youth to prove it. Starting with the Golden boy Neeraj Chopra, he won India's first ever gold medal in athletics at Tokyo Olympics 2021 and made history. He was just 22 years old at that time and seeing this level of achievement is a nail biting moment for everyone and a moment of pride for the whole country. Next is Rameshbabu Praggnanandha, world's 5th youngest Grandmaster born on August 10, 2005 in Tamil Nadu. He made history and proved to the world that there is no age of talent in our country, after defeating the world number one chess champion Magnus Carlson of Norway in the 8th round of Airthings master Rapid online chess tournament in February 2022. After all these great achievements of our youth, how can we forget our Dhing Express Hima Das. She is the first Indian woman, indeed the first ever Indian athlete, to win a gold medal in a tournament of a global track event at IAAF world U20 Championship, when she clocked a time of 51.46 seconds. She belongs to a normal family of rice farmers and yet achieved an absolutely remarkable award.

The youth represents the most dynamic and vibrant segment of the population. India right now is one of the youngest nations in the world with about 65% of the population being under 35 years of age. India has an ample number of young people, ample amount of time, the only thing required is a proper utilization of our youth power. The government is already on this path and has launched many schemes like Prime Minister's new Entrepreneurship Development Scheme (startup India), Prime Minister's Youth Career Development Scheme (PMKVY), Prime Minister's Financial Empowerment scheme, etc. The only thing we can do now is to make this engine more and more efficient and become the leading power of this world because today's youth is tomorrow's future.

Our Shining Light

The future of our nation rests in their hands,
The youth with energy, hope and plans.
So much potential, so much to give,
With every step, their future they'll shape and live.
They hold the key to a brighter tomorrow,
With their knowledge, skills and love for their country to borrow.
They'll rise to the challenge, they'll take the lead,
With their drive and passion, the nation will succeed.
Through education, they'll build a stronger land,
With ideas, hopes and visions so grand.
They'll be the change that our nation needs,
Bringing about progress, unity and all good deeds.
Civic engagement will be their call,
Their voices will be heard, their opinions won't fall.
They'll fight for justice, they'll fight for peace,
Creating a society that's free and release.
In business, they'll help the economy grow,
Their ideas will flourish, and their skills they'll show.
Innovation, they'll bring to the table,
Building a future that's sustainable.
The youth of our nation, they're our shining light,
With their vision, they'll help our country take flight.
So let us empower them, let us show our trust,
For they'll lead us to a future that's just.

Aaditya Pandey
B. Com. (Prog.) 2nd Year

Role of Youth in Nation Building

by
Aaditya Pandey
B. Com. (Prog.) 2nd Year

The youth of any country plays a crucial role in shaping its future and determining its progress. In India, where more than half of the population is below the age of 25, the role of the youth in nation building is especially important. The Indian youth, with their energy, enthusiasm, and creativity, can bring about significant positive change in the country, provided they are channelled in the right direction.

One of the key ways in which the youth can contribute to nation building is through education. By acquiring the knowledge and skills necessary to succeed in the 21st century, the young people of India can help build a more prosperous and developed nation. They can also serve as role models for future generations and inspire them to pursue their dreams and ambitions.

Another important aspect of nation building is civic engagement. The youth of India can get involved in their local communities, work towards addressing issues such as poverty, hunger, and unemployment, and promote social and political awareness. They can also participate in elections and other political processes, thereby ensuring that their voices are heard and their opinions are represented.

In addition, the youth of India can play a vital role in promoting unity and diversity in the country. By fostering an atmosphere of inclusiveness and respect for all communities, they can help to build a strong and cohesive society that is better equipped to address the challenges of the future.

Moreover, the youth of India can also contribute to the economic development of the country by starting their own businesses, or by pursuing careers in areas such as technology, agriculture, or manufacturing. They can

also use their skills and talents to develop innovative solutions to the country's pressing problems, such as climate change, and help to build a sustainable future for all.

In conclusion, the role of the youth in nation building is crucial, and the Indian youth have a unique opportunity to shape the future of their country. By leveraging their energy, knowledge, and creativity, they can help to create a better and brighter future for all Indians.

Beginnings

Tanya Shree
B. A. (Hons.)
Political Science

They say endings are beautiful but beginnings are equally refreshing and quite revitalizing.
I believe beginnings give you a purpose, a reason to wake up every day with a smile on your face, waking up with a feeling of optimism that you can conquer the world.

If anything new I've learnt this year, it's that I won't ever be ready for whatever life throws at me.
I've learned that I will keep on expecting for someone or something, sustained by hope, in spite of knowing the fact that I'll be disheartened by the end of the day.

For what it's worth; "Expectations", my dear, is a lethal word, it's a perpetual feeling...
But you know what? Its okay, as I'm slowly learning of how to live life with contentment and evolving into a more conspicuous and vivid version of myself.

Of not constantly seeking for external validation but internal.
And as one door opens and another closes, I'll move forward with the knowledge that unlike so many others, I still have another year ahead of me - another year where I'll achieve the unachievable.

"She is a Changemaker"

Tanya Shree
B. A. (Hons.)
Political Science

As Michelle Bachelet has rightly said "**A better democracy is a democracy where women not only have the right to vote and to elect but to be elected**". Women have seen suffering at the hands of men through the years. In earlier centuries, they used to be treated as almost non-existent. Rights as basic as the right to vote, were reserved for men. But as the times evolved, women have realized their power.

The National Commission for Women (NCW) launched a pan-India capacity building programme called "**She is a Changemaker**", on December 7, 2021. This programme is for women representatives at all levels, gram panchayats to parliament members and political workers including office bearers of National/State political parties.

The programme, in association with region-wise training institutes, aims to undertake capacity building of women political leaders. It also aims to improve their decision making and communication skills. The official launch of training programmes under the 'She is a Changemaker' series was held in collaboration with **Rhambhau Mhalgi Prabodhini** (Thane, Maharashtra) and was launched by **Ms. Rekha Sharma** (Chairperson, National Commission for Women).

Ms Sharma mentions at the launch event, that increased participation of women in politics is the need of the hour and the Commission is committed towards helping them in their journey. "I hope that 'She is a Changemaker' project will mark a new beginning in the lives of women who are determined to bring a positive change in the society," says Ms Sharma.

To conclude, the female participation in Indian electoral politics is low mainly because of political party competition but this initiative taken up by the National Commission for Women aims to benefit every woman who wishes to make an identity for herself in politics.

Sounds like Static (a depressed daydream)

Saadat Ali
B. A. (Prog.)
Computer Applications

it **sounds** like **static**,
a **static stuck still**,
as you **head home from forever** land;
legs lethargic, immovable.

its like a shadowy park ride through a **maze** of
memories,
carefully curated by a **brain**,
perpetually perplexed;

and the questions it raises are, questionable?
what,
why,
when, **where** - none that it **seeks solutions** to.
it **rather reminds** of a **paused panic,**
a **wordless worry.**

You know, **brows bent**, eyes locked, jaw **dropped dead;**
maybe a ghost unmet? Well if anything,
you exhaled the last **semblance** of a **spirit** a long time ago,
and as realisation **strikes**, the **static** does too.

like a **sobering sight** of light at the end of the tunnel;
a deafening **tunnel**,
tinnitus,
returning to **you**, **yourself**.

you immediately take control,
close the mouth agape,
the eyes revived, the brows relaxed,
look around and jump back to whatever kept your
mind busy before that side-quest of yours,
everything is fine, you say,
over the **sound** of the **static stuck still.**

India's Presidency at G-20

Mohit Singhal
B. A. (Hons.)
Political Science

Once Idowu Koyenikan said that "Your pride for your country should not come after your country becomes great; your country becomes great because of your pride in it" and that is how stoking it feels to hear about our nation taking over the presidency at the G-20 Circuit from Indonesia.

G-20, which was founded back in 1999, reckons to be an intergovernmental forum which is earmarked by the presence of up to 20 Countries including both the developed and the developing economies. G-20 is regarded to be a keen platform that is used to excel economic cooperation among all the countries. Founded when the Asian financial crisis was on the horizon, G-20 turned out to be a significant point where the deliberation and the foundation of coordination has been laid, pertinent to the global issues that further demand proper rounds of dialogues, their outcomes and the implementation of the decisions, which is being carried out.

The agenda is that the current presidency of the G-20 incurs a panacea of various discourses that demands a sense of working together as a whole at the global spectrum rather than going for war which would lead to further malignancy. And on the economic arena, the G-20 acquires a total share of 80% of the world GDP and constitutes a total count of 60% of the total world population.

INDIA'S STRATEGIES AT A GLANCE.

- After attaining the onus of presidency, India now stands in a position of holding more than 200 meetings where the attention will be pondered upon **'The Finance Track',** who will take account of various notions such as sustainable growth off the financing, recurrent policy changes in financial sector, and financing done in terms of infrastructure.

- There's been eleven engagement groups who would further acknowledge the policy making procedure with their recommendations, the members of this group consists of the non-governmental participants from the countries that are a part of the G-20.

- The Sherpa Track will have **G-20 EMPOWER,** an initiative which will aim to work upon the mending of coordination required for leveraging alliances among various business leaders around the globe with countries present in the G-20, another initiative lined up is the **RIIG- Research and Innovation Initiative Gathering** that further seeks to boost the research capacity and innovation collaboration needed among the G-20 members. The Sherpa track will also be taking amends to pertinently address notable issues such as corruption, agriculture, the digital economy.

- Binding up the Indian traditions such as incorporating the notion of Vasudeva Kutumbakam – which means that the entirety of the world is a single universe and reality. India has originated a sense of global oneness that goes as **One earth, One family, One Future** where the **earth** reflects environmental lifestyles which is influenced by the Indian Traditions. **Future** here reckons an honest dialogue underlining various core issues persisting away in the form of climate change and de-escalating the risk of use of arms for causing havoc to international security. And at last, **family** here links up with harmonizing the food security, which will be crucial for preventing the humanitarian crises.

- The Prime minister also addressed the various catacombs that he had in his mind that the whole world had been facing – terrorism, humanitarian crisis, pandemic. There has been a keen focus on what role technology will actually play in determining the digital solutions in hope of creating changes that will last for long.

On a concluding note, strategies enlisted have been extracted from the Maha Upanishads which are ancient Sanskrit texts that affirm the meaning of togetherness of lifeforms as humans, animals etc. This theme further denotes

the vision of our honourable prime minister for the nature that indicates to consider various responsible choices. India's Presidency is seen as being centred around the notion of globalisation that would initially have a surreal impact of policy that had been formulated and such that it will influence the New World Order. G-20 has an enriched history in the contemporary politics that binds the whole world and the events that took place under its diaspora, especially in terms of the policy making configuration and it's dynamics that are being postulated upon certain norms that earmark various notions such that, the policies that are being made to cater the stability in economics of the world arena, and the motives that lie behind the build up of these policies is to ensure security that would be inevitable to prevent the financial crises that might occur at times. On the other hand, the policies interplay a dynamic role in ensuring sustainable growth whether it is economically or environmentally, like the attention and the action of what it really takes to cater climate change mitigation etc.

Open Ended Waiting

Shivani Suri
B. A. (Prog.) English

I'm tired of waiting for a reply
A call back
At least a 'seen'

Each time I think of adding one more text to your
list of not seen texts
I realize how my self-respect keeps coming down
My self-esteem drowns

I'm tired and I want to think about something else
I try distracting myself but everything brings me back to you
I want to tell you how my day was
What spiced up today
How sly I was
Everything
But I can't and I don't

But how do I stop waiting
Waiting is a tricky game
Your mind wandering to places but still there

I'll leave this one open ended this time
Until I get a solution.

Psychology of Gender

Shivani Suri
B. A. (Prog.) English

Vee Won Chong, in his Ted Talk; 'Beyond the Gender Binary', shares the challenges transgendered people face while providing suggestions on being a good ally.

He talks about how sexual orientation need not be in alignment with a person's sexual identity. Due to this misconception, parents of trans children have difficulty accepting the truth due to social norms and societal judgement. When they grow to be adults, they face harassments in bathrooms. Yee Won Chong suggests cisgender people to use their privilege to help a non-gender conforming friend. According to Sanders and Stryker (2016), "rather than confronting underlying cultural apprehensions like homophobia, and the fear of gender non-conformance, opponents and proponents of gender-neutral bathrooms narrowly pose the issue as a question of safety, framing it as an ostensibly objective problem that can be solved through a neo-functionalist architectural approach" (115, pg.4).

In terms of daily vocabulary, only used pronouns fall into gender binary such as male or female. Also, he wants us to understand that not everybody goes by 'he' or 'she'.

Voter Suppression is another problem where transgendered people are not issued ID's. Around 4/10 people do not have their ID's identifying their gender which refrains them from ensuring the right to vote. Also, when they ought to travel, they encounter many uncomfortable situations. This happens when they're asked personal questions about their gender; mostly because of their different mentioned 'sex' and persona making air travel unsafe for them.

Their daily life challenges also include different forms of harassments, discrimination in job spaces. These intolerant behaviours of cisgender people make lives difficult for transgendered people. In terms of which Chong gives

another piece of advice, where he wants us to be empathetic and ask ourselves how we would feel if we were in their places instead.

Keeping yourselves in others' situation is the most effective way to understand and make wise decisions. About which, he claims that the first step is not to tolerate any kinds of jokes or comments about transgendered people and also, by stopping others around us. In 1950's, during the beginning of the second wave, Betty Friedman's book; The feminine mystique' started focussing more on issues like violence, and harassments with emergence of journals on sex roles and gender identity (Bosson, Vandello, Buckner, 2019, p. 52).

One of the other major forms of injustice they face include violence. Especially, transgendered people of colour are reported to face brutal levels of physical violence. All these examples and scenarios depict that the word 'transgender' no more holds its true meaning. Only two sex identities are accepted and understood by our society. The third gender or transgender is part of our society as important as the other sex binaries. Thereby, Yee Won Chong suggests us to start thinking outside the gender binary and to understand facts like gender expression and gender identity, doesn't necessarily mean to align and identify a person's assigned sex.

REFERENCES

Jennifer K. Bosson, Joseph A. Vandello, & Camille E. Buckner, Thousand Oaks, CA: Sage Publications Inc., 2019.

Joel Sanders, Susan Stryker; Stalled: Gender-Neutral Public Bathrooms. *South Atlantic Quarterly* 1 October 2016.

Life's Ebb and Flow

Anuj Shukla
B. A. (Prog.)
Economics

Amidst life's twists and turns we find,
The fleeting nature of joy and pain combined,
A constant flow, like the changing tide,
Of happiness and sadness that doth abide.

At times we feel lost and all alone,
As though the world's turned upside down,
But we must remember, this too shall pass,
And better times will come at last.

For just as the seasons come and go,
The good and bad times ebb and flow,
And though the journey may be rough,
It's what makes life, and love, and all things tough.

So let us cherish every moment,
The ups and downs, and all component,
And find the beauty in life's ebb and flow,
For therein lies the path we must go.

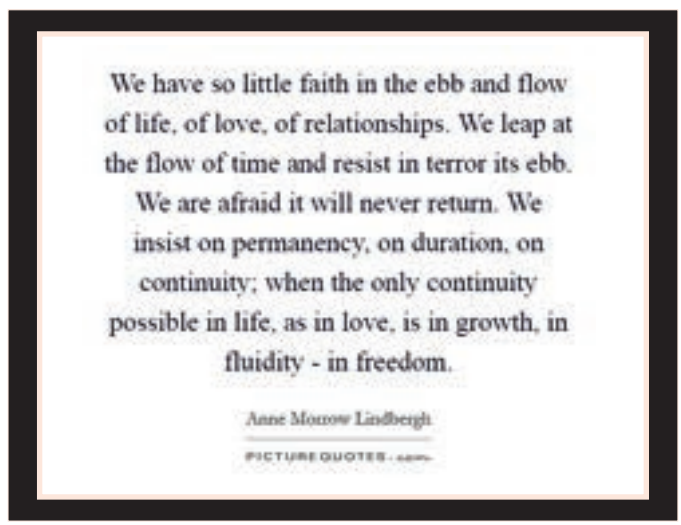

College Days End, But Memories Last Forever

Rishabh Katyal
(2017-20 Batch)
(Working as a Music Producer)

The charm of which college you will end up in begins the day you enter your class 12th. Delhi university is the most talked about in every school and teachers scare children with sky rocketing cutoffs. In our times admissions were conducted purely on merit which meant the least you could enter DU was with a 95 in your BEST FOUR. Now I was an experienced low scorer ninja of my school whose max had gone up to 59 in my much-loved subject. Reversing this 95 sums-up my entire year of class 12th.

With you developing love for your most hated uniform and feeling fine about phones not being allowed in the school, the countdown for the board exams begins and your school life comes to an end with a big question of "what's next?"

Board exams mornings are really charged up and that warrior-like feeling becomes unforgettable. The day exams end it turns into a celebration of not flying high, but getting released from the cage, the excitement of a new college and nervousness for the results keeps you alive, waiting…

One day you get up with your phone flooding with messages of "board results to be out in the afternoon", you log on to the site and stay there until you see yours. Parents are asking, relatives are calling, friends are messaging, -- just one thing a 95 at least? Because any number below is 59.

Now you get your BEST FOUR and DU cutoffs are exactly as told- (you are welcomed to the Satta Bazar), exciting for some and disappointing for many the first cut-off crosses the mark of 100. Students like me have to wait for the bid to fall when we can produce all our earnings from board exams with our highest bid of *THE BEST FOUR*

I remember the last cutoff of 2017 which was exactly meant for me where a 3% fall gave me my next 3 years to rise.

Congratulations! I got PGDAV, entered a fully packed class with all eyes on me and what I will never forget is the scolding on my first day for entering 7 minutes late. The class had just been like a school without a uniform where no one knew the privileges of college, but as the days passed on the strength come to decline making a fully packed class almost an empty one. Though the class strength was low, students present in the college were always on a high because of the amazing institution DAV offers with different sports in the main ground, two fun parks, a huge library, an open parking area, a sneak in terrace and many other chilling spots where two canteens, one mother dairy booth, one juice parlor will take care of all your munching needs during club sessions, friends' gatherings and startup meetups.

The college curriculum is very well defined--

Freshers, Elections, Exams, Fest and a Celebrity Night.

From attending your freshers to your farewell party is the journey of 3 years in which you get to study from highly qualified professors, you join clubs and societies to become the person you want to, your projects and class presentations design you, a little appreciation gives you a big boost and you get to meet your second group of friends after school.

The college routine begins to normalize, you are not a stranger anymore, you get the people you were searching for and here starts your 3rd year with an enthusiasm of getting placed in a renowned company and a little bit of sadness as this would be the last year in college.

All the classrooms, the corridors, the stairs, the ground you were part of start bidding Goodbye even before the Farewell.

3rd year also has the same curriculum – Freshers, Elections, sudden increase in the class strength due to the internals, begging for marks, arranging books for the mains and the fest season but this time it is going to be the last.

Classroom snacks, gossip sessions, silly fights, class bunks, copied assignments, canteen fun and group photos come to an end.

The new is welcomed, but it is always difficult to move on from your present phase where you have met the best people and created some unforgettable memories, you want some more time in the same protected environment where the place is known, the people are yours and the vibe matches, no wonder The Farewell Day comes, you dress up the best not to win any title but to fit in well in the selfie with your people around. You meet everyone, give them a warm hug, the blessings for the future and promise them to meet again, friends swear to be in touch, everyone is smiling, creating a happy moment, but is unaware of the busy and not so small world where circumstances change the person entirely.

You don't know that you are making memories, you just have fun. The college ends memories remain and you begin with a new journey where no amount of success can stop you from cherishing your college days.

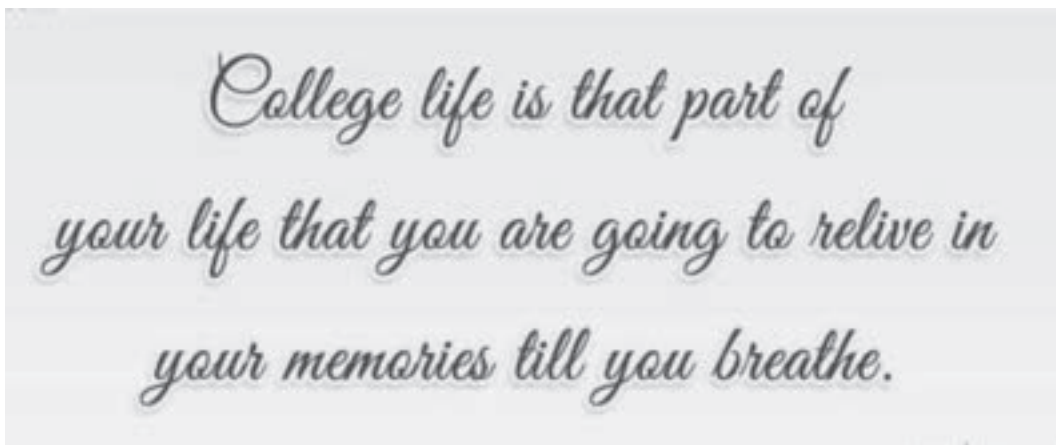

COLLEGE COLLAGE

2022-2023

COLLEGE COLLAGE
2022-2023

ADD-ON COURSE: LEGAL AWARENESS

***Convenor*: Prof. Meena Sharma**

In addition to the formal courses, the college has introduced many supplementary courses with an objective of nurturing highlighting the natural talent and creative skills of the students and for their holistic personality development. In pursuance of this idea, the first batch of 'Legal Awareness' course was started in the college in 2016. Since then, a total of 12 batches have been completed till date. The eleventh batch of 'Legal Awareness' consisting of 50 students started on 12 February 2022 under the leadership of Dr Meena Sharma. On the occasion of its inauguration, the Judge of the District Court of South East Delhi was invited as the Guest of Honour. He apprised the participants about the basic aspects of law and their importance. A total of ten class-sessions were arranged in this course. Along with this, the functioning of the court was explained in detail to the students by making arrangements for a visit to the court premises. A visit to Tihar Jail was also organised, with an objective of apprising the students of the life-style and mentality of the prisoners in the jail. Later, these students were also made para- legal volunteers, under which they went to the slums located at Okhla, Srinivaspuri, Govindpuri, Kalkaji etc. and informed the residents about free legal advice. On 30 August 2022, the twelfth batch of this course was started, in which 50 students got registered. Delhi Legal Service Authority (DLSA) Chief Chairman Mr. Sanjay Garg-I, Mr. Bharat Parashar ji and Mr. Mati Isha Singh ji guided the students as the Chief Guest. This batch successfully completed the course on December 14, 2022.

ADD-ON COURSE: SKILL DEVELOPMENT AND DATA ANALYTICS

A seven day workshop on 'Skill Development and Data Analytics' was organized in the college from September 12-19, 2022 by the Institution's Innovation Council (IIC), Women Development Cell (WDC) and World University Service (WUS), in collaboration with Learning Links Foundation

(LLF), a non-profit organisation dedicated to enriching lives through learning. The objective of this program was to encourage students to build their interest, knowledge and expertise in a high-demanding Technology/STEM career path of data and analytics. It also aimed at enhancing the job readiness skills of the beneficiaries and to provide them an opportunity to enroll in globally recognized certification programs through online skill development platforms such as Coursera, Udemy etc. The workshop was conducted online on Zoom platform. It was a 20 hrs. course including hands-on training on Advanced MS Excel spanning 15 hrs. and sessions on Communication Skill Building spanning 5 hours.

ARUNDHATI BHARTIYA GYAN PARAMPARA KENDRA, P.G.D.A.V. COLLEGE (EVENING)

A two-week FDP (January 23 to February 6, 2023) was organized jointly by Arundhati Bhartiya Gyan Parampara Kendra and Pt. Madanmohan Malviya National Mission for Teachers and Education, Mahatma Gandhi International Hindi University, Wardha on the topic 'Bhartiya Parampara aur Vishwaguru Bharat'.Arundhati Bhartiya Gyan Parampara Kendra and Bhartiya Bhasha Samiti, Ministry of Education, Government of India jointly organized a two-day national seminar on 'Bhartiya Bhashaein aur Bhartiya Gyan Parampara' on February 10 and 11, 2023.

CANTEEN COMMITTEE

Convenor: **Mr Aditya Pratap Singh**

Members of Canteen Committee of the college visit the canteen twice in a month to check management, cleanliness and waste food management. It was ensured with the canteen manager:

- Canteen will sell only healthy and fresh food.
- Smoking and drinking is strictly prohibited in the college canteen.
- The food making section of canteen should be neat and clean.
- Chairs should be arranged properly every time.
- Tables should be cleaned properly every time.

COMMERCE ASSOCIATION

Convenor: **Dr Jay Shankar Sharma**

Commerce Association organized various innovative, educative, informative and infotainment activities throughout the year with a goal to impart knowledge in amusing ways. In order to accomplish its motto, Commerce Association organized various events, seminars, webinars experiential trips and competitions throughout the year. This session commenced with an online quiz competition INSQUIZ 2.0 which was conducted on 14/15/16th September, 2022 on Instagram. This 3-day Quiz was organized to encourage the students and widen their knowledge. It was an individual event with three quizzes which covered the basic knowledge of stock market, social media and startups. Adding further, Commerce Association organized an interactive session on Elevator Pitch under its initiative CORPORATE SHALA which was organized on 19th September 2022 on MS TEAMS. It was an initiative under which attendees were trained to perform better in the corporate world. The speaker invited was Toshika Agarwal. Department of Commerce, in collaboration with the Fortune Institute of International Business organized a seminar on the topic "Insolvency and Bankruptcy Code 2016" on September 21, 2022 in the Old Seminar Hall. It was led by an accomplished, experienced teacher, corporate trainer as well as consultant- Dr. Sudhi Sharma. Also, an insightful session on CV Building, LinkedIn Profile Building, Cold-E-Mailing, and Networking under our initiative CORPORATE SHALA was conducted on September 25, 2022 on Google Meet. The speaker- Barnali Banerjee gave various valuable insights and inputs on the topic. Commerce Association along with Industry Institutional Cell, Vidya Vistar Scheme and Finshala: The Finance Club, BA Prog. and the Board of Industry- Academia Partnership (BIAP) had jointly organized a webinar on Financial Literacy and Awareness on October 17 ,2022 on Zoom Meet. The Speaker enlightened the participants regarding the Role of Board of Industry-Academia (BIAP) and how it bridges gap between industry and academia. The speaker also gave a thanking note to the KRISHA FOUNDATION, who was the backbone for this entire webinar. Further, Commerce Association, in collaboration with The Placement and Internship

Cell organized an interactive session on CAT: Let's crack it, on November 6th on Microsoft Teams under its initiative ACETHE RACE. Under this initiative one can understand the basic anatomy of competitive examinations Commerce Association also organized a webinar on STOCK TRADING: PATHSHALA on December 06,2022 on Google Meet. "Why to learn stock market By- FinX" was an interactive session on Stock Market Analysis. The speaker invited was Mr. Vijay Kaushik. Another webinar on INVESTMENT AND DEPOSITORY SERVICES was conducted on 7 January,2023 on Google Meet. The speakers invited were Dr. Shikha Gupta and Karishma Makkar. The association, in collaboration with Finshala, organized an interactive workshop on Financial Awareness on 8 th January 2023, on Google Meet. Commerce Association also organized an experiential learning trip to IIIT DELHI'S INNOVATION & INCUBATION CENTRE on January 10th, 2023 that provided opportunities to not only network but also to learn the practicalities of forming an entity right from scratch. The visit provided exclusive networking opportunity for our students wherein they had a chance to connect with the founders of two start-ups: -

Anant Sharma
(Co-Founder of "Tweek Labs" featured in Shark Tank India Season 1)
Mukul Chhabra
(Founder of "Scrap Uncle" featured in Shark Tank India Season 2)

A Seminar in collaboration with Phoenix and Career Guidance was organized on January 18th in the Old Seminar Hall by the association under its initiative "ACE THE RACE" wherein they were given insights into "How to crack tough competitive exams." The Speakers invited were: - CA Shruti Gupta and Samdish D Sharma. Commerce Association in collaboration with IIIC (Industry Institutional Interactive Cell) organized another experiential learning trip to one of the most prestigious institutes- IIT DELHI'S INCUBATION CENTRE on February 1st, 2023 that provided the students plethora of opportunities to network and to learn the real-life experiences of start-up founders. Commerce Association in Collaboration with IQAC Committee, BA Prog. Committee, Vidya Vistar and Taxo Academy, organized a webinar on "Fundamentals of GST" on February 27 ,2023 on Zoom. On April 1st 2023, Commerce Association organized their annual commerce fest

"COMMANTRA'23" in the college campus. The annual fest was executed with a total of 5 events: PITCH PERFECT, BRAND BLITZ, INVEST-O-LEAGUE, ESCAPE ISLAND, ANALYSIS ARENA. "START-UP TALES"- An insightful new initiative was launched by Commerce association to and widen our knowledge. It covered all the information regarding different unicorns of India presented in a creative and easy-to-understand all form. Commerce Association has also incubated a project "AVSAR" on November 1st, 2022. AVSAR is a project incubated with the sincerest dedication and passion to break the barriers and help you jump the hurdles towards vistas only thought-off. AVSAR is an initiative taken by our Association to provide students with great internship opportunities at the ease of their doorsteps.

COMPUTERIZATION AND AUTOMATION

Convenor: **Dr Ajay Garg**

The Computerization and Automation Committee of the college issued total 338 e-certificates for various programs and events throughout the year. The website of the college was regularly updated and modified as per the requirements time to time. The committee worked for the automation of the college library. The committee also ensured the backup of various key computers in the college on a continuous basis. Currently, the committee has been working to update and restructure the website of the college.

CULTURE AND ETHICS CELL

Convenor: **Ms. Renuka Dhar Bazaz**

The Culture and Ethics Cell of PGDAV College (E), University of Delhi organised several events from July 22, 2022 to April 23, 2023. The cell started a twelve sessions add-on course on "Mind Management Through Shri Bhagavad Gita" in the month of April 2022, in collaboration with ISKCON, East of Kailash, New Delhi. The 10th session of this course took place on July 26, 2022 on the topic "Dealing with Lust", 11th session on August 2, 2022 on the topic "Overcoming Fear", 12 th session on August 16, 2022 on the topic "Art of Practicing Forgiveness". An MoU between PGDAV College (E) and

ISKCON, East of Kailash, New Delhi came into effect from November 1, 2022. The valedictory function of this add on course and MoU signing ceremony between PGDAV College (E) and ISKCON, New Delhi took place in the auditorium of the college on November 2, 2022. HG Mohan Rupa Das Ji (President, ISKCON, New Delhi) was the key speaker of the session. Certificates were distributed to all the students who successfully completed the add-on course. On October 3, 2023 (Monday), an MoU was signed between PGDAV College (E) and Brahma Kumaris, Defence Colony Centre, New Delhi. A talk on the topic "Turning Crisis into Opportunity Through Seven Billion Acts of Goodness" in Lab 3 of the college was organized on October 18, 2022. Chief Guest BK Ram Singhal (a professional civil engineer and owner of an engineering consulting firm in New York) delivered the talk, introducing students to a global campaign, named "7 Billion Acts of Goodness" and defined it is an inter-faith initiative intended for common people at grass-root level. With the purpose of connecting students with the sources of wisdom and expanding the probability of spiritual upliftment and hence adding value in their holistic development, the Cell, in collaboration with ISKCON, New Delhi set up a stall of ancient Vedic books including Bhagavad Gita in the college premises. The stall setup was there from 2:00 pm to 8:00 pm in the porch area of the college premises for three days; 12th, 13th and 16th January 2023. On 20th of January, 2023 the Cell, in collaboration with ISKCON, New Delhi held a seminar on the topic, "Destiny: Do we make it or does it make us?". The seminar witnessed Padmalochan Das Ji, a senior devotee from ISKCON as the key note speaker. He captivated the audience with his vast pool of knowledge and effortless way of presentation. The Cell, in collaboration with ISKCON, New Delhi organized a visit to ISKCON temple premises (East of Kailash) from 11:00 am to 2:00 pm on January 27, 2023 for connecting students with the sources of wisdom and expanding the probability of spiritual upliftment and hence adding value in their holistic development. The visit included darshan of deities, followed by visit to the world's largest Bhagavad Gita comprising of 670 pages and weighting 800 kg and its precise explanation by ISKCON devotees. Later, students witnessed a mesmerizing light and sound show of an hour based on the teachings of Bhagavad Gita followed by dancing and singing of spiritual rhymes. The senior devotee from

ISKCON then delivered a fifteen-minute lecture on the importance of human body and mindful thoughts. The Cell, in collaboration with Drishyam (Film Making & Photography Cell) and ISKCON, East of Kailash, New Delhi organized An Add-On course based on the theme "Viveksheel Yuva: Vishwaguru Bharat" for bringing awareness related to Ancient Vedic Wisdom amongst students, adding value in their holistic development and expanding the probability of students becoming valuable assets of the country. The add-on course included four sessions namely, "How to overcome bad habits like drugs addiction and smoking", delivered by HG Vijay Upender Das Ji, "The positive power of good association and habits" delivered by HG Mohan Shyam Das ji, "The role of value education in cultivating happiness" delivered by HG Das Raghunath Ji, "Karma: The laws of infallible justice" delivered by HG Baliprasad Das Ji dated April 12, 15, 17, 18 respectively. At the end of each session, delicious prasadam was distributed to all participants and other stakeholders

.

DISCIPLINE COMMITTEE

Convenor: **Dr (Lt) Hari Pratap**

The Discipline Committee of the college is an important component related to the smooth functioning of all the activities of the college. Under the convenorship of Dr Hari Pratap, the Discipline Committee kept a watchful eye on all students' activities on the campus, meeting regularly to discuss matters related to breach of discipline and taking prompt action accordingly. Apart from this, the Discipline Committee has maintained overall discipline during all the events and programmes of the college that were held during this academic year.

EARTHA

Nodal Officer: **Dr Dimple Gupta**
Student Representative: **Pratigya Sharma, Punral Gupta**

Eartha society is a 'non-profit organization' which aims at spreading awareness about various social issues by medium of discussions. Students are educated by various cultural events and activities. In this regard, the Cultural Committee of the college collaborated with Eartha society on 22nd October, 2022 and organised the 'Deepotsav -Deep se Deep' Jale event. Three

competitions were organised on this occasion. Diya decoration, rangoli making and poster making competitions were the highlights of the event. Eartha society members on 5th November, 2022 organised a Pads Distribution Drive & Awareness Campaign in the Lajpat Nagar Slum to educate the residents about the importance of feminine hygiene and mensuration. Free sanitary pads were also distributed as part of the information drive. 18 students from the college participated in the visit. The participation of male students, along with female participants was commendable, making this a successful event.

E-WALL MAGAZINE

Convenor: **Dr Kamini Rawat**

The E-Wall Magazine Committee is a departmental committee. Members of this Committee upgraded the Wall-Magazine in physical Mode and E-Wall Magazine in online mode on a monthly basis. Student volunteers of each department provided various articles, pictures, latest news related to that department and these were uploaded in Departmental E-Wall Magazine and Wall-Magazine.

FEEDBACK COMMITTEE

Convenor: **Ms. Udita Agrawal**
Co-convenor: **Mr Aditya Pratap Singh**

P.G.D.A.V. College (Evening) is taking feedback from the students for both the semesters (Even and Odd) since the session 2015- 2016. After following the pen-paper system for taking feedback only for one semester, the committee shifted the process to online. First online feedback was taken for the semester Jan - May 2016 and since then the process is continuing. For analysis we consider the feedback of only those students who have at least 50% attendance in that semester. The college had started taking feedbacks from parents and employers last year and this year college has started taking feedbacks from alumni also. The analysis work of these feedbacks is at the final stage. All the feedbacks from July - November 2021 have been analysed and submitted to IQAC. As per the instruction of IQAC, analysed feedbacks have been shared with concerned

teachers too. All the feedbacks from January 2022 to December 2022 have been collected from the students and the work of analysing feedbacks received after January 2022 is under process and will be completed very soon.

FRACTALS – THE MATHEMATICS SOCIETY

Convenor: **Mr. Aditya Pratap Singh**
President**: Aman**

Fractals, the Mathematics Society of P.G.D.A.V. College (Evening), organized various academic activities in the session 2022-23. On Friday 27th January 2023, the Department of Mathematics and the Commerce Association, jointly organized a seminar on the topic "Management Aptitude Test (MAT) Gateway to a Successful Career in Management (MBA/PGDM)" in which Sh. Sidharth Saxena, Deputy Director, All India Management Association (AIMA) was the main speaker. Fractals, in collaboration with AIMA and Commerce Association, conducted an Aptitude Test for MBA/PGDM aspirants. This test was organized on the basis of MAT (Management Aptitude Test), an entrance exam conducted by AIMA for students seeking admission in reputed B Schools of India. Fractals organised its annual mathematical fest FUNDAMENTA-2k23 on 5th of April 2023. Various inter-college competitions like Mathematical Quiz, Vedic Gyan, Mathematical Presentations, Poster Making, Mathematical relay etc. were organised in FUNDAMENTA. Students from various colleges of University of Delhi participated in this most awaited event of Department of Mathematics.

GANDHI STUDY CIRCLE

Convenor: **Ms Sangeeta Sharma**

During the session 2022 -2023, Gandhi Study Circle has actively participated in the various programmes organised by Gandhi Sadan, DU and Gandhi Smriti which were graced by the Vice Chancellor, DU, Governor, Prof K.P. Singh, Prof Balram Pani and many more. The programmes were well attended by our respected Principal Prof R.K.Gupta, Professor B.N. Choudhary, Ms Sangeeta Sharma (Convenor GSC, PGDAVE), Dr Sana Parveen (Co Convener) along with student GSC members of our college. On

6th September, 2022 Samprabhu collaborated with Gandhi Study Circle and Gandhi Bhawan, University of Delhi and organized a seminar titled 'Gandhi aur Shiksha' in the college auditorium. The keynote speaker of the day was Prof. K.P. Singh, Director of Gandhi Bhawan , University of Delhi. Prof. B.N. Chaudhary welcomed the honoured guest and introduced the programme. Principal Prof. Ravinder Kumar Gupta extended a warm welcome to our chief guest and gave a motivational speech on education which filled the students with enthusiasm. He also explained the logo of our college and its significance. Gandhi's whole philosophy and work on education was based on ethics and morality plus according to him, education is not merely a means to achieve status. A special lecture was delivered by our eminent educationist, Mr. K.P. Singh in which he mentioned about the importance of education in general and also the Gandhi's perception on education and India. He also interacted with the students. Finally, Prof. Subhendu Ranjan Raj expressed his gratitude towards our guest of honour and further thanked our Principal for providing such platform and to other teachers for their constant support and encouraging students for attending such an enriching session. Gandhi Study Circle celebrated Gandhi Jayanti on 2th October, 2022 on the topic "Remembering Bapu and Shastri". The online event was initiated with the welcome speech, followed by the sacred Gayatri Mantra and Mangala Charana sloka. After that P.G.D.A.V.(Eve) song was played. Thereafter the Principal extended a warm welcome to everyone. Professor Dr.B.N Chaudhary shared his words of wisdom on Mahatma Gandhi and Lal Bahadur Shastri respectively. Then Mr Parmeet Singhsang a beautiful bhajan "Tu He Ram Tu hi Rahim". After that a short documentary was played on the life of Mahatma Gandhi. Anshu, a student of B.Com 3rd year also sang the bhajan "Vaishnav Janto Tene Kahiye". Then, there was also a documentary on the life of Shastri ji. Finally, the vote of thanks was proposed by Munna Sharma a tudent of Political Science Honours.On 30th January, Gandhi Study Circle organised an online event on "Remembering Bapu (Martyr's Day)." The tribute programme was well attended by the faculty members, non-teaching members and students alike.

INDUSTRY INSTITUTION INTERACTION CELL

Convener : **Dr Jay Shankar Sharma**

The Industry Institution Interaction Cell (III cell) was started in the year 2018 under the guidance of the Principal Prof. R.K Gupta to cultivate a symbiotic relationship between the college and the industries as well as the college and other research institutes. The objectives of the cell is to provide ample opportunities for industry exposure to student and faculty through industry visits, summer internship and industry projects, to involve industry professionals in curriculum design, delivery and assessment so as to make student industry ready, to help industry professionals to upgrade their qualification, knowledge and skill through higher education, continuing education and training to help industries to solve their problems through research, training and consultancy. Considering the above-mentioned objectives the cell organized a webinar on 7th October 2022 in collaboration with Commerce Association, Finshala: The Finance Club, B A Program Committee and Vidya Vistar Scheme on Financial Literacy. As a result of the webinar students were able to understand Modern Investment Option, Role of SEBI, and Due Diligence of Investor etc. A trip was also organised to IIIT Delhi's INNOVATION & INCUBATION CENTRE on 10th January 2023. In this trip 25 students participated. It was a very beneficial trip for the students as they interacted with Anant Sharma the Co-founder of TWEEK LABS and MUKUL CHHABRA Founder of SCRAP UNCLE. The visit was concluded with boosted spirits and moral of our students with an inspiration to do something that creates an impact. On 1st February 2023 a trip was organised to IIT Delhi's Incubation Centre. In this trip 42 students participated. After this visit Students were able to understand work culture of Start-up, Internship opportunities at the incubation centre, Specification for a start-up during the incubation period, Legal aid and other services required for incorporation etc. It was a beneficial trip for the students as they interacted with Syed Shahbaz the founder of Surface Moto an Electric Vehicle Start-up which aims to build products that help millions of people to commute sustainable around the globe.

INTERNAL QUALITY ASSURANCE CELL

Convenor: **Dr Anita Bajaj**

The Internal Quality Assurance Cell (IQAC) is a statutory body mandated by the National Assessment and Accreditation Council (NAAC). The Cell comprises members from all the stake-holders–administration, teaching staff, students, alumni and the employers of our former students of the college. The Cell keeps a track of all the activities happening in the college by collecting and analysing data with the help of several committees round the year. In its routine meetings, it discusses several issues and suggests activities, which can help improve the teaching-learning process in the college. Apart from collecting data and preparing reports (AQAR) for its annual submission to the NAAC authorities, it conducts Academic, Administrative and Environment Audits and Gender Audit. Further to these routine annual activities, the Cell also organised a number of activities for the students, faculty members and non-teaching staff this year. On July 25, 2022, the Cell organised, 'Youth Parliament Sitting 2022' in collaboration with Abhivyakti - The Youth Parliament Committee and others in which 55 students participated. A Webinar on "Role of youth in mitigating HIV/AIDS" was organised in collaboration with Red Ribbon Club on 14 September 2022. The programme was followed by a poster making competition on the same theme. In the next month, the Cell collaborated with SAVI (Students' Association for Verbal Interaction), Sankalp and Athena to organise Inter-college Quiz competition on the occasion of Vigilance Awareness Week 2022 on 14. 11. 2022. The event had cash prizes which was sponsored by Central Bank of India and a total of 42 students participated in it. A webinar on 'Millets for Health and Sports' was organised in collaboration with the Department of Physical Education and Sports and others on 28.11. 2022. The programme was attended by 80 people including teaching and non-teaching staff of the college. The valedictory session of the Sanskrit Sambhashan Shivir was held on 15.2.23 to award certificates to all the participants who attended the week-long program. The cell along with The Teachers' Welfare Committee organised a webinar on the topic " Compression of all Investments for Wealth Creation" conducted by Mr Vijay Kaushik on 18.2.23. The webinar was attended by 30 faculty members who found the

webinar very pertinent for making prudent investment decisions. The Cell collaborated with YUVA for a very relevant talk on “Dehdaanhai Mahadan" on 20.2.23, wherein the importance of donating the body after death was discussed in detail. Abhivyakti, Samprabhu and IQAC jointly organised a talk on "India's G-20 Presidency- Leadership in a changing World" on 21.2.23 which was attended by teachers and students . A webinar on "Fundamentals of GST" was organised jointly by Commerce Association, Vidya Vistar Scheme and BA Program committee on27.2.23. The Mother Tongue Cell, IQAC, YUVA, WUS and NSS collaborated together for a Cultural program which was attended enthusiastically by the students on25.2.23. The Cell organised, one week 'Free Computer Awareness Course' in blended mode from 27 March to 1st April 2023 for the First-year students. Around 80 students enrolled for this course. The classes were conducted online and hands-on practice sessions were taken in the computer lab (physical mode). A forty-two hours (7 days) Management Development Programme (MDP) on 'ICT Tools for Effective Institutional Management' from March 27, 2023 to April 10, 2023 was conducted for the non-teaching staff of the college. To felicitate our students who have graduated from our college, an Alumni Meet, 'Sansmriti ' was held on 16.4.23. This meet was attended by around 682 pass out students who were quite excited to come to their Alma Mater again and meet their teachers in college. The Light, Water and Sanitation Committee, WUS, Srishti and IQAC jointly organised a slogan writing competition on 15.4.23. Alongwith Shashwat, The Yoga Club, Culture and Ethics cell and IQAC organised a session on "Sahaj Yoga" on 19.4.23 which was attended by 15 teachers and 30 students who were explained the benefits of this technique for overcoming stress. A series of workshops on Intellectual Property Rights was organised from 26.4.23 in the online mode. The Sports Committee, Medical Committee and IQAC collaborated to organise a talk on 25.4.23 on the topic " NEP-2020: Prospects and Perspectives of Sports and Heath in Higher Education" which was attended by teachers and students. Internal Quality Assurance Cell (IQAC), in collaboration with Research &Development Cell and Vidya Vistar Scheme of the college, organized six workshops on different dimensions of Intellectual Property Rights (IPRs). The workshops were organized virtually

(MS Teams) on different dates from April 26 to May 16, 2023. Dr. Ajay Kumar Garg, Assistant Professor, Department of Commerce was the resource person for all the sessions. Organizing committee received a total 27 registration for the series of workshops. The IQAC has done screening for four Associate Professors viz. Dr. Mridula Arora, Dr. Nagendra Sharma (Department of History),.Dr. Onkar Lal Meena (Department of Hindi) and Dr Anita Bajaj (Department of Commerce).All of them were successfully promoted as Professor in the college.

KALANJALI: CULTURAL COMMITTEE

Convenor – Ms. Udita Agrawal

Kalanjali, the Cultural Committee of the college organized the Annual Deepawali Celebration program- 'DEEP SE DEEP JALE' on Oct 21st, 2022. The event comprised of three parts namely, Diya decoration and Rangoli making competitions, the Cultural Programme and the Lighting of Diyas in the college premises. Large number of students participated in the competitions. The main attraction was the cultural programme which was organized in the evening. Along with other programs, the melodious group presentation of Ramcharit Manas Chaupais by the members of Shadaj, the Music Society and a spectacular dance drama on Ramayana, by the members of Bhartiya Dance Society, left the audience spellbound. The cultural programme was witnessed by more than 400 students along with the teachers and non-teaching staff. With the help of NSS and NCC volunteers, the whole college was illuminated with diyas and candles. This Diwali Celebration is one of its kind in entire University of Delhi. In order to identify the latent talents of the freshers, the committee organized Talent Hunt on 13th January, 2023. The event began with the Investiture Ceremony of the office bearers of Kalanjali followed by various competitions organized by the five societies of the Cultural committee namely- Shadaj, Athena, Rieva, Indradhanush and Tarang, which were held parallelly in a well organised manner. Later in the Orientation Program a melodious singing performance by Ankit and a classical Odissi Dance performance by Barnali were appreciated by everyone. In the evening, Lohri was celebrated in which the students and the teachers offered their prayers and enjoyed at the beats of Dhol. On the occasion of Republic Day, Athena- the Literary society

of the Cultural Committee organized an Intra-College Indian Quiz Competition named "QUIZISTAN" on 30th Jan 2023. The theme of the quiz was "Let's Know Our Country". The aim of organizing such a quiz was to create a good competitive atmosphere in the college as well as to spread knowledge about our nation. The quiz was held in 3 rounds: Pen & Paper Round, PPT Round and the Final Round. The quiz was well participated and well attended. Kalanjali organized a Kavya Goshthi in collaboration with Rashtriya Kavi Sangam on 7th February, 2023. More than 15 young poets, mainly students and researchers from different colleges, departments and universities and students of our college recited their poems in this Goshthi. The poems spread the patriotic vibes amongst the audience. The committee organized the annual cultural festival 'PRAVAH 2023' on March 21 and 22, 2023. This year's theme of the festival was "Viveksheel Yuva–Vishwaguru Bharat, signifying the unflinching power of the youth of India. A great fanfare was seen at the event as it was attended by more than 2500 students from the entire circuit of University of Delhi and other colleges of Delhi-NCR. The event was a coalescence of 26 competitions and performances in which some of the competitions are held in our college only. More than 800 students participated in the competitions. The inaugural ceremony of the festival was graced by Sh. Manoj Tiwari, Hon'ble MP of North East Delhi, as The Chief Guest and Pandit Chetan Joshi ji, a renowned flutist, as the Guest of Honour. The evening of Day-1 concluded with joy and merriment when Sh. Manoj Tiwari, along with his lively and meaningful speech, sang his songs in his mesmerising voice. On the second day of the event, the college celebrated 'Varsh Pratipada' (The Bhartiya Navvarsh-2080). The glorious first day of Bhartiya New Year was marked with lighting the lamp and chanting the pious Mantras which spread piousness in the entire environment. This was followed by a short cultural program by the Sanskrit Parishad and the cultural committee of the college and a mesmerising Rhythmic Yoga Performance by the members of Yoga Club Shashwat on the music of Shiv Stuti. Renowned Kathak dancer Jaya Priydarshini ji was present as Guest of Honour in this program. The second day of the fest concluded with the Grand Finale in which everyone grooved to the beats of the dance numbers, celebrating the success of the spectacular two-day festival. Kalanjali presented a memorable cultural program in the Alumni Meet SANSMRITI on 16th April, 2023. The

singing performances & classical, semi classical and folk dance performances were appreciated by the large gathering of ex-students. The students of the Cultural Committee participated in various inter-college competitions organized by colleges of University of Delhi as well as other Universities and Institutes and have glorified the name of the college by winning more than 35 prizes so far.

KAUTILYA PARISHAD

Convenor: **Dr Deepika Sharma**

Kautilya Parishad. Department of Economics organised a webinar on "Eco Fundas" to discuss the basic concepts of Economics on 19th January, 2023. The guest speaker for the session was Ms. Tarannum Raza, faculty T.I.M.E.

MARKETING AND CONSUMER AWARENESS CLUB

Convenor: **Dr Anita Bajaj**

The Marketing and Consumer Awareness Club, in collaboration with Placement and Internship Cell and Commerce Association, organised a seminar on the topic "First Step Towards Financial Independence" on 31st March, 2023 by the company Money Mileage in the college premises. Subsequently, the company offered an internship opportunity to our students in the field of Digital Marketing, Graphic Designing and Business Development. The students participated enthusiastically to get selected for internship in this company. A total of five students were selected from our college after two intensive rounds of group discussion and personal interview.

MENTOR-MENTEE CELL

Convenor: **Ms Udita Agrawal**
Co-convenor: **Dr Uday Sharma**

The college wishes to provide the students an ideal, stress-free atmosphere, proper guidance and counselling (academic as well as non-academic). For this purpose, the college has been following the mentor-mentee practice for the last several years. We have divided the students of the college in small groups and each group is allotted with a member from the teaching faculty as MENTOR. Under the system, the information of mentor-

mentee is displayed on college website through two notices, one notice for the mentors along with the department wise teacher list was attached with it, in which in front of teacher's name their mentees class and roll numbers were given and another notice for the students along with the class-wise list of students along with their mentor's name with department. The information is also mailed to both teachers and students. The list of official mail ids of all the mentors is also mailed to the students so that they can contact to their mentors. Mentors can find the list of mentees, their phone number and email ids on their portal. The mentee can also see their mentor's name on the student portal. Girl students are advised to share their problems with any female teacher in case they are uncomfortable to share with the male mentor. The MENTOR-MENTEE ratio for the session 2021-22 and 2022-23 is 35 and 38 respectively. The system has provided the students emotional as well as physical support whenever required.

NEPATHYA: THE DRAMATICS SOCIETY

Convenor: **Dr Krishna Shukla**

Nepathya, the Dramatics Society of PGDAV College (Evening) organised 'UMANG 2023', the annual fest of the society on 15 April, 2023 based on the tagline "Chalo, Chale Gaon Ki Oor". UMANG started at 10:30 am with three major events namely: Chaupal - The Street Play Competition, Meri Aawaz - The Monologue Competition and Sab Bikta Hai- The Ad-Mad Competition. The inauguration ceremony was graced with the presence of the Chief Guest Shri Avatar Sahni and Guest of Honour Mrs. Khulna Laimayum along with The Principal Prof. R.K. Gupta and Convener of The Dramatics Society, Dr. Krishna Shukla. Principal Prof. RK Gupta addressed the gathering with his words of wisdom. Later, Shri Avatar Sahni mentioned the role of theatre in his life and how they hold onto it. Mrs. Khulna Laimayum talked about the importance of women empowerment and how the society should provide give equal opportunities to girls in all fields of work. Chief guests, honorable Principal of the college and Dr. Krishna Shukla, distributed awards to the office bearers of the society. The events were successful with total number of registrations being more than 250. Students from various institutions participated, won prizes and showed their utmost enthusiasm for the fest.

NPS COMMITTEE

Convenor: Dr (Lt.) Hari Pratap

The NPS Committee worked throughout the year addressing the grievances and queries of the employees under this scheme. On 18th February, 2023 the NPS Committee organized a webinar on the topic "Compression of All Investments for Wealth Creation" in collaboration with the Teacher's Welfare Committee and the IQAC. The webinar was organized keeping in mind the best investment options for salaried individuals as well as retirement solutions. The speaker was Mr Vijay Kaushik, an orator and subject matter expert. The webinar was well-attended by both the teaching and non-teaching members of the college. The speaker was introduced to the audience by the convenor of the NPS Committee, Dr Hari Pratap. Mr Kaushik actively interacted with the audience throughout the session and promised an offline talk in the college premises at a later date. The session was moderated by the convenor of the Teacher's Welfare Committee, Dr Nitish Bagdi and concluded with the formal vote-of-thanks by Ms Priyanka Chatterjee, member, NPS Committee.

3 P.G.D.A.V COY – NCC

A.N.O – Dr (Lt.) Hari Pratap

Under the guidance of Lt Hari Pratap, the flag of Unity and Discipline was held high by the 3 PGDAV COY. The cadets under the leadership of SUO Abhishek Chauhan participated in various NCC activities and camps. All the cadets spread the message of 'YOGA FOR WELLNESSES on the occasion of the 'International Yoga Day' on 21st June 2022 by performing yoga and spreading awareness about its benefits by creating and sharing videos of performing various asanas. Be it physical training or seeking opportunities digitally, NCC cadets have shown equal enthusiasm at all the platforms, the SDs of 3 PGDAV COY, wrote articles, poems and created videos for the NCC digital forum and registered their presence in a large number digitally during July, a month-long activity, where the last submission was done on 30th of July, 2022.12 Cadets of 3PGDAV COY attended **CM Rally Camp** which took place in between 1 August to 15 August, 2022. Cadets of **3PGDAV COY** organised the **Har Ghar Tiranga** Campaign inside the college premises as well as near the college

campus area from 13 August, 2022 to 15 August, 2022. Under the guidance of Principal, Prof. R.K. Gupta cadets also participated in **Tiranga Collection Movement** after the 75th Independence Day. The National Flags are kept with proper respect today as well. CHM Anil Kumar participated in **All India Thal Sainik Camp** through Judging Distance and Field Signals which was held at NCC Headquarter Delhi from 12 Sept to 25 Sept 2022. 28 Cadets attended the Youth Icon Camp **'ARMY ATTACHMENT CAMP'** with 6^th Battalion of 'The Rajput Regiment' of the Indian Army from 25th October to 5th November, 2022. Various **'Ek Bharat Shreshtha Bharat'** camps were organised. 10 SD Cadets attended these camps and marked their presence by performing activities like presentation and poster making.

- **EBSB CUM YEP DELHI**: 3 AUGUST -15 AUGUST 2022 – CDT Hari Om
- **EBSB DELHI:** 7 OCTOBER-14 OCTOBER – Sgt Rajeev Kumar, Cdt Anuj Kadian, Cdt Vinay Kumar, Cdt Aman Bhandari, Cdt Gaurav, Cdt Laxman Kumar.
- **EBSB J&K:** 11 OCTOBER -20 OCTOBER- JUO AADITYA SB DASS, JUO ARYAN PURI, CQMS YASH CHHIMWAL, CQMS VED DWIVEDI.

Arduous conditions are the most required element to shape the true qualities of a NCC cadet. Our brave cadets did not only undertake the adventurous trekking camp but also adapted extraordinarily to the harsh conditions of various trek ranges. 7 SD cadets had actively participated in 'Trekking Camps' held at various parts of the Country.

- **AMARKANTAK TREKKING CAMP':** 29 MAY -5 June 2022: SGT Ritesh Kumar and CPL Sreshth
- **UP Trekking Camp':** 7 NOVEMBER-14 NOVEMBER 2022: JUO Kartik Bhati, CQMH Ankit Kumar Yadav and SGT Rahul Kumar.
- **SHIVAJI Trekking Camp':** 18 November- 25 November 2022: CQMS Ritik and CDT Chaman Rena

2 Cadets attended **Advance Leadership Camp**. This camp was focussed on developing the leadership skills of the cadets by offering the insightful lectures of 5 days SSB process, team building activities, Nation building sessions and PIQ. Cadets who took participation were SUO Abhishek Chauhan and SGT Ritesh Kumar.

Imparting the military's meticulous lifestyle is one of the aims NCC cadets, **JUO Kartik Bhati** seized this hard-earned opportunity by attending the prestigious **'INDIAN MILITARY ACADEMY ATTACHMENT CAMP'** held between 18 December 2022 to 27 December 2022.

2 Cadets of 3PGDAV COY attended **CM Rally Camp** which took place in between 10 January to 26 January 2023.

The Prime Minister Rally camps were held with gust and vibrancy like every year combined along with SNIC where cultural and adventurous activities were organised and the cadets of 3 PGDAV COY seized them with the best of their performances, it was conducted from 1 December to 29 January 2023. 05 SDs. SGT Dhruv Joshi, CDT Shiv Pandey, CDT Chandra Prakash, CDT Yash Sharma, CDT Deepesh Yadav attended the PM Rally Camp.

LCPL ABHAYDEEP SINGH was recommended through **NCC special entry-53 (Allahabad) for OTA.**

CDT VISHAL SINGH CHOUDHARY was recommended from 1AFSB, Dehradun. He is selected for **the NDA 149th course** (IAF flying branch).

TREE PLANTATION DRIVE: On the occasion of the 74th Raising Day of the territorial army. The plantation drive was organised by 12th infantry battalion on 7th of October 2022 near Bhati mines. The chief guest of the drive was Lieutenant General P M Singh.

3 PGDAV COY participated with the most strength amongst all companies of **3 DELHI BATTALION,** cadets planted more than 900 saplings.

3 PGDAV COY (SD) secured 2nd position in **SQUAD DRILL COMPTETION IN GREEN BARETS-2023** held in Rajdhani college on 14th March.

3 PGDAV COY (SD) secured 1st position in **SQUAD DRILL COMPTETION IN PARAKRAM- 2023** held in Dayal Singh College on 18th March.

On 18th April 2023 Commanding Officer of 3DBN Lt. Colonel Gagandeep Singh visited the 3PGDAV COY to see how the cadets are getting trained. He also had a session with NCC cadets to interact with them and to motivate them for the future. He visited the NCC office to see their achievements. To celebrate Earth Day Awareness week, the Principal Prof. R.K. Gupta along with Lt. Colonel Gagandeep Singh, ANO Lt Hari Pratap and Dr Mayank Pandey planted trees in the college garden.

From attending NCC parade every Friday and Saturday to undertaking adventurous camps like Special National Integration Camp, the cadets of 3 PGDAV COY presented their greatest adventurous spirit and discipline as well as maintained their zeal to keep striving for the better.

NCC as a subject (VAC) has been introduced in PGDAV College (Evening) under the National Education Policy from the academic session 2022-23.

NATIONAL SERVICE SCHEME

Programme Officer: **Dr Balwant Singh**

NSS Unit of P.G.D.A.V. College (Evening) has performed a number of events in the year of 2022-23. This tenure started with the visit of volunteers to the National War Memorial in the month of July to pay respect to the martyrs of Kargil war. In August, as the whole nation was celebrating 'Azadi ka Amrit Mahotsav' so did the NSS volunteers by distributing the national flag in college and in the slum areas near our college under the aegis of HAR GHAR TIRANGA (6th Aug). The NSS unit also conducted essay writing competitions along with the week-long Tiranga distribution. The NSS students attended traffic awareness programmes organized by Hero Moto Cop in Punjabi Bagh west. Following this Har Ghar Tiranga week, NSS celebrated the iconic week of Independence in which we had Tiranga rallies in Nehru Nagar, Swachata Drive and Plantation Drive in the primary schools of Sarai

Kale Khan and participated in the Tiranga Rally by the University of Delhi. NSS concluded this iconic week with a cleanliness drive in Humayun Tomb and a documentary screening (12th Aug.) NSS students attended Yuva Samvad by the Ministry of Youth and Sports Affairs. On Sports Day (28th Aug), to promote sports and remember the contribution of Major Dhyan Chand, NSS organized sports day with slum kids in various competitions like 100 m race , 3 leg race and students were awarded certificates. In September, Swachhta Pledge was taken in front of the NSS Wall. On 10th September a seminar on Anti Addiction/Nasha Mukti Bharat Abhiyan was organised. Dr. Anupam Verma and Ms. Sabika Ahmed were the chief guests of this programme. On 12th September, NSS students visited Shaheed Bhagat Singh's detention chamber in the Vice Chancellor Office of University of Delhi. On 25th September, a rally to slums of Nehru Nagar was organised to spread awareness of 'Clean India'. NSS conducted a survey on living conditions of Mayur Vihar Phase-I slum dwellers. NSS unit also celebrated 'Deep se Deep Jale' Diwali festival. NSS participated in a cleanliness drive by Anurag Thakur. The Mental Awareness seminar was organized under the project Udyam of NSS. On 31st October, "The Unity Pledge" was taken to promote unity in diversity in the country. In November, NSS units celebrated Unity Day with slum-kids through dance, songs, poems from different states of India. In this same function badges were given to the office bearers of NSS 2022-23. NSS conducted an online debate competition on 10th November in the vigilance week in collaboration with Indian Oil. NSS unit celebrated "Children's Day" by collecting biscuits, toffees from volunteers and distributed them among the slum kids around the college. In December, kids taught under project Paathshala had given a performance in the Atal Foundation at Society of International Laws' auditorium. In January, NSS unit conducted a recruitment drive and a visit to the National Gandhi Museum. To celebrate Republic Day, a cultural function was organized as well as a demonstration to the freshers how the National Service Scheme works. In February, under project 'Khushi", NSS collected more than 600 clothes from NSS volunteers for the underprivileged people which were distributed among the slum kids and their parents. In March, the NSS unit visited Pradhan Mantri Sangrahalay. A special mention

of "Project Paathshala" is necessary: under this project, each and every Sunday, slum kids were taught free of cost by the volunteers of NSS unit of P.G.D.A.V. College (Evening)

PLACEMENT AND INTERNSHIP CELL

Convenor: **Prof. Mridula Arora**
Student Coordinators: **Anuj Pandey, Vaibhav Singh**

This year we improved our ranking of 'Internshala' which is a leading recruitment and training platform. It is a meeting ground of job seekers with startups, corporates , SMEs, NGOs and education institutes. Students are given an individual handle to pursue their interests. In 2022 our All India rank is 29 amongst 500 plus colleges. And our North zone rank is 12 among 98 colleges. Placement and Internship Cell, in collaboration with Shrishti (the Environment Society), organised an internship with Indian Pollution Control Association (IPCA) from 5 Sep to 5 Nov 2022. In this internship 6 students received a stipend of ₹3000 for two months. Placement and Internship Cell, in collaboration with Marketing and Consumer Awareness Club and Commerce Association, invited Money Mileage for internship offers. This was held on 31 March, 2023 and 5 students were selected for this. Piramal, a corporate house, visited our college for placements on 5 April,2023. In this drive 27 of our students were given offer letters.

DEPARTMENT OF PHYSICAL EDUCATION & SPORTS SCIENCES

TIC: Prof Parmod Kumar Sethi

The Department of Physical Education & Sports of the college is working two-fold, teaching Physical Education as a Discipline Specific Course in B.A (Prog) in the all the semesters, and also to provide and arrange ample sports training facilities, sports scholarship, inspiration and scope for all kind of sports activities for the college students. This year, students participated in different University of Delhi inter-college, All India inter-university, national, state, invitational and open sports competitions. This year

the college Sports Committee and Department of Physical Education and Sports Sciences offered sports scholarship as a cash prize for any student, who would hold position in Delhi University inter-college tournaments, participate or secure position in inter-university competition, State, Junior and Senior National Sports Competitions. The cash prize was Rs 8000/-, Rs 5,000/-, Rs 3,000/- and track suit, t-shirt, trophy, sports kit given to the outstanding players. During the year 2022-23, 18 students took admission through sports quota in different sports disciplines in the college. Two students, Jaiveer Dhiman of B.Sc (H) 2nd Year and Arjun of B.A (Prog) 2nd Year represented Delhi State and participated in the 25th Youth Open National Volley Ball Championship at Paana, M.P. Nasir Hussain of B.A (Prog) 2nd Year also represented University of Delhi and participated in the All India Inter University Volley Ball Championship at Bareilly, Uttar Pradesh. This year our college Volley Ball (Men) team performed very well and participated in Delhi University, Youth and Seniors Delhi State. The team also secured 2nd position in LSR open invitational inter college Volley Ball Championship from the college. The college cricket team participated in the Delhi University inter-college cricket tournament. The team performed very well and defeated Sri Aurobindo College, ARSD College in the matches. The college football, cross country, athletic, judo, taekwondo, kabbadi players participated in selection trials for Delhi University teams in all India inter university competitions. The Annual Sports Meet was organized in the college playground on 29th March, 2023. The chief guest of annual sports meet was Ms Annu Tomar, international shooting player. 250 boys and girls and teaching and non- teaching staff members participated in different athletic events. The winning students and teaching and non- teaching staff were facilitated with medals and mementoes. The Department of Physical Education and Sports Sciences organized a lecture on "Sports-A Perspective of Journey from 1947 to 2020 NEP", a webinar on "Millets for Health and Sports" and Seminar on "NEP 2020: Prospects and Perspectives of Sports and Health in Higher Education" .

RAJBHASH PRAKOSHTH (OFFICIAL LANGUAGE CELL)

Nodal Officer: **Dr Dimple Gupta**

As per instructions of University of Delhi, "Rajbhasha Prakoshth" (Official Language Cell) was established in the month of May-2022 in P.G.D.A.V. College Evening, the purpose of which is that, in compliance with the official language policy of the Government of India, the use of the Hindi as first language in bilingual form at all related points is compulsory and English as the second language. From this point of view, bilingual language is mostly being used in all the related subjects in college. In this series a survey of the college has been done under the "Rajbhasha Prakoshth" (Official Language Cell). As per the instructions of the Cell, continuous work is going on in the College. Identity cards and envelopes are being printed in bilingual form (Hindi as first language and English as second language). Along with this, reports and information are also being printed in bilingual form. In future also, wherever there is a need of bilingualism in college, those too will be completed as soon as possible as per the instructions of the Committee.

RESEARCH AND DEVELOPMENT CELL

Convenor: **Dr Ruchira Pathak**

A one-week online Faculty Development Programme on "Data Analytics using R Software" was organised by Research and Development Cell of P.G.D.A.V COLLEGE (EVE.), University of Delhi, in collaboration with Maharaja Agrasen Institute of Management Studies, Indraprastha University, New Delhi from 17th – 23rd January, 2023. The FDP received 99 registrations across India covering 40+ institutions ranging from Jamia Milia Islamia, JNU, various colleges of Delhi University and Guru Gobind Singh Indraprastha University. Total 10 sessions each of 90 minutes were conducted by Dr. Gunjan Khurana, Associate Professor, I.P. College for Women, University of Delhi and Dr. Uday Sharma, Assistant Professor, P.G.D.A.V. College (Eve.) on "Introduction to R", "Data Visualization in R", "Exploring Objects of R". "Exploring popular packages" through Zoom Platform were also live streamed on YouTube. In the last session, a test was taken based on the

FDP syllabus. A one-week online Faculty Development Programme on "Pedagogical Training on ICT Tools for Effective Teaching-Learning" was organised by Research and Development Cell and Department of Commerce, PGDAV College, (Eve.) from 6th September, 2022 – 12th September, 2022 in association with Maharaja Agrasen Institute of Technology, Rohini. 89 participants from both India as well as outside India covering 40+ institutions ranging from Cavendish University, Uganda, Jamia Milia Islamia, JNU to various colleges of Delhi University attended the sessions through Zoom Platform. Hands-on training was provided to the participants by resource persons on Google Drive, Google Sheets, Google Classroom, Certificate creation, MS Power Point using practical examples and illustrations. Useful Information on various academic-social media websites like Google Scholar, SSRN, Research Gate and others was also provided to the attendees. The event was live streamed on YouTube also. A two day online workshop was organized by Research and Development Cell of PGDAV College (Eve.) in collaboration with Mahatma Hansraj Faculty Development Centre, Hansraj College, University of Delhi on the topic "National Educational Policy (NEP) 2020: A Paradigm Shift in Education Section" in the beginning of the academic session 2022-23 through Zoom platform on the following pertinent themes:

1. Invigorate Research & Innovation Ecosystem through NEP 2020
2. NEP 2020: A Catalyst to New & Glorious Knowledge System
3. Decolonising the Language Policy in NEP 2020
4. A shift towards multidisciplinary & holistic education

RED RIBBON CLUB

Convenor: **Dr Meenakshi Yadav**

Red Ribbon Club has been organizing and continues to organize various programs, events, and awareness campaigns to spread awareness about HIV aids in an interactive way. This year's events started with blood donation drive on 13 April, 2022. The camp was organized by the RRC in collaboration with Rotaract Club of college and IQAC. The camp was organized effectively and all proper check-ups were done before the

donations. To motivate more and more students to come forward, Principal Prof. R.K. Gupta, RRC Convenor Dr. Meenakshi Yadav and Rotaract Convenor Dr. Krishna Murari were also present. An oath-taking ceremony on Blood Donor Day, was organized on 19th June 2022 by the core members and the convener Dr. Meenakshi Yadav on GoogleMeet. The main aim of this event was to thank voluntary blood donors worldwide and create public awareness to highlight the need for voluntary unpaid blood donation. A webinar was organized on breast feeding awareness on 6 th August 2022. The speaker for the event was Dr. Sakshi Bhardwaj who shared a lot of information related to breastfeeding and busted a lot of myths related to the same. Serious concerns like lack of government policy, and privacy for women were put up in discussion and a few logical solutions were discussed for the same. An extempore competition was organized in collaboration with the Drishyam Society of PGDAV Evening College in offline mode on 24th August 2022. The aim of this event was to educate people about the causes, symptoms, and prevention of AIDS in an engaging way. The participants delivered informative speeches, and the audience was able to enhance their knowledge on this topic. The winners of the competition were awarded exciting prizes and all the participants received a certificate of participation. Furthermore, the club organized Tree Decoration on 21 Jan 2023 in the college premises, the main aim of which was held to spread awareness about HIV Aids prevention and treatment and to encourage people to get tested for HIV. Informative cards and posters were prepared by volunteers and were hung on a tree which provided a wealth of information about HIV prevention, testing, and treatment, which helped dispel myths and misconceptions about the disease. In continuation, an AIDS awareness workshop was organized in offline mode on 24th January, 2023 which was attended by students across different courses from the college. The main speaker of the event was Mrs. Sujita Gahlaut (Assistant Director Youth Affairs) DSACS. This event featured a range of activities designed to educate and inform the attendees about HIV Aids which included presentations on the latest research, myths, and facts related to this disease. In addition, Q&A session was organized which provided the students with more knowledge and remove the stigma associated with this topic. On 21 and 22 March 2023, Club put up a stall at the Annual College Fest-PRAVAH to create awareness about HIV-AIDS. The event was held for two days, and

the main objective of it was to educate people about the disease and its prevention. The stall was set up with posters and banners that provided information about AIDS and how it is spread. The club members were actively engaging with the students who visited the stall, and they were providing detailed information about the disease. There were also booklets and pamphlets available that provided additional information about the disease. Additionally, a mobile, integrated testing and wellness van, was provided by the Delhi State AIDS Control Society in case any student wanted to get himself/herself tested for AIDS. The District Counsellors also guided the volunteers to make the students understand the meaning, spread, and prevention of HIV- AIDS. There were documentaries and videos that provided information about AIDS and its prevention. Additionally, the volunteers captured the thumbprints of the visitors on a hand-drawn tree to show their support for AIDS victims.

ROTARACT CLUB:

Convenor: Prof. Krishna Murari

Rotaract Club organised a cleanliness drive at the park behind the Agarwal sweets in Vinobapuri. Six members from the club participated in this. The park was looking much cleaner after the drive. Rotaract Club of joined the "Project Crossroads" hosted by Rotaract Club of Delhi Philanthropist in Lodhi Garden. The aim of this project was to do letterhead exchanges, promote small businesses and business ideas, discuss important topics like twin sister agreement, future events and collaborations and to do a fellowship meet to build a beautiful relationship and a good bond. Rotaract Club of PGDAV Eve. witnessed the installation ceremony of PhF. RTR. Sidhant Arya and his team on 24th of July, 2022. In the ceremony, RTR. Sidhant Arya accepted his responsibility as the DRR of district 3012 and facilitated his team. The club also got rewarded for the best project of Day 2 of Project H.O.P.E. Rac PGDAVE collaborated with Rotaract Club of Delhi Pegasus under their project "PrEco-Topia" which supports a sustainable environment. Rotaractor Ujjawal Gupta participated in a cigarette butts' collection drive conducted on 4th of September by the newly started district Project Yudham in CP. The Rotaract Club of PGDAV College (Evening) conducted a drive under the new flagship project Bezuban. Rotaractors at their nearby places fed dogs

and other animals. Rotaract Club of PGDAV College (Evening) participated in Letter Head exchange in collaboration with Rotaract Club of JIMS Vasantkunj which happened in Connaught Place, New Delhi. An online meet was organised on 16th December 2022. Information about RYLA was discussed in the meeting as well as details regarding the club events were discussed. A new initiative under PROJECT NIRBHAY was started where informative reels on Legal Aids in India against the most common types of crime against women like eve teasing, domestic violence etc. are posted. On 1st January, 2023 president Rtr. Luv Gupta organised a bhandara seva in the temple of his locality. This bhandara seva was organised on the occasion of new year. Food was distributed to 50+ people and it was really fruitful and impactful. Rotaract club of PGDAV (Eve) under Project Naya Saal collaborated with Rotaract club of DSPSR With the Motto of. "New Year Celebration - Gifting to the Needy". 5 members of the club gifted toys and donated food for the needy ones in their localities. Rotaract Club of PGDAV Eve. Under its flagship project, Raahi organised a webinar on the topic LGBTQIA+ community in collaboration with the Naz foundation on the 21st, of January 2023 at 11:00 AM. The webinar was attended by 27 students and was also attended by ZRR Rtr. Pratyush Singh. Mr Atindra Parashar and Mrs Kiran Tirkey were the speakers. The webinar aimed to make students aware of the topic of LGBTQIA+. The speakers explained about different genders to the students with help of a PPT and shared their personal experiences with us. Rotaract club of PGDAV Eve under its flagship project, Project Misscara conducted a pad distribution drive for the children of Blooming Lives NGO. They distributed a total of 10 packets of pads. On 29th January, Rotaract club of PGDAV Eve. collaborated with RaC Delhi Pegasus for the event of "Peace Tree" under their Project Upskills. The event took place at Nehru Park. The yoga instructors taught various asanas and breathing exercises.

SAMPRABHU: THE POLITICAL SCIENCE SOCIETY

Convenor: **Prof. Basuki Nath Chaudhary**

The Political Science Society, 'Samprabhu', is firmly committed to the multifaceted development of all our students by organizing various academic and cultural activities. At the outset, Samprabhu in collaboration with Gandhi

Study Circle (PGDAV Eve. College) and Gandhi Bhawan (University of Delhi) organized a seminar titled "Gandhi and Education" on 6th September 2022 at 4 pm in the college auditorium. Prof. K P Singh, Director of Gandhi Bhawan (University of Delhi) has delivered a lecture on the importance of education, in general, and also the Gandhi's perception on education and India. Then, an orientation programme was organized, on 20th January 2023 in the old seminar hall at 5 pm, for the first year students to give them the basic information about the department and its various activities. On 21 st February 2023, in collaboration with Abhivyakti – the Youth Parliament Society and the Internal Quality and Assurance Cell (IQAC) organized a seminar on the pertinent topic "India's G20 Presidency: Leadership in a Changing World" at 12 pm in the college auditorium. The chief guest of the event was Mr. Amit Kumar Sharma, Deputy Commissioner, MCD Central Zone,New Delhi accompanied by Ms. Sushmita Bakshi, Brand Ambassdor, MCD, wherein they defined India's Goals for G20 with special emphasis on the environmental concerns and how India can lead the world in that. The main speaker, Prof. Ummu Salva Bava, Centre for European Studies, School of International Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi, particularly emphasized that leadership offers both opportunities and challenges. Since G20 is a platform to interact with the developed world, she contended that Ukrainian War is having an impact on India and the World. A 'Farewell Function'- Safar 2023 - was organized for the outgoing final year students on 26th April 2023 at 3:00 p.m in the college auditorium.

SANKALP: THE COLLEGE CADET CORPS

Teacher coordinator: **Mr. Manoj Kumar**
Student Representative: **Rishabh Sharma, Urvashi Yadav**

This year, the activities of Sankalp - the College Cadet Corps - were not just restricted to traditional physical training equivalent to the National Cadet Corps (NCC) but actively participate in social - economic learning processes viz. visit to industrial plant and had a mass plantation drive. On 21 st June, 2022, Sankalp has collaborated with the NCC, NSS and Gandhi Study Circle (PGDAV Eve. College) to celebrate 'International Yoga Day' at 8 a.m. in the college ground. Then, Sankalp and SAVI jointly organized annual function 'Pahal 2022' in physical mode on 4 th August, 2022 at 12 p.m. onwards in the college

auditorium. On 16 th September 2022, Sankalp joined in an industrial visit to Indian Pollution Control Association (IPCA) Plastic Recycling Plant, Plot No 66, Eco Tech 12, Greater Noida (West) (U.P.) jointly organized by the Environment Committee, Waste Management Committee, SAVI, Entrepreneurships Skill Development Cell, ENACTUS, Industry Institution Interaction Cell (IIIC) and National Innovation and Startup Policy (NISP). Later, Sankalp collaborated with Srishti and Jaladhikar Foundation to conduct mass plantation drive on 6th November, 2022 in Greater Noida (West) from 9:30 a.m. onwards. On the occasion of Vigilance Awareness Week 2022, Sankalp collaborated with SAVI, IQAC, and ATHENA andin association with Central Bank of India, organized two-tier inter-college quiz competition in the college premises. Lastly, all the physical training sessions were conducted with the NCC.

SANSKRIT PARISAD

Convenor: **Dr Yogesh Sharma**

Student Representative: **Mahesh Tiwari**

On 21st of August, 2022, by the joint efforts of Bharat Sanskrit Parishad, Rashtrokti Webportal, Ashok Singhal Foundation and Sanskrit Parishad, the National Sanskrit Seminar and Sanskrit Scholar Award Ceremony 2022 was held, with the distinguished presence of the Chief Guest Honorable Shri Dinesh Chandra, guiding the Vishwa Hindu Parishad, Prof. Brijkishor Kuthiyala (Chairman, Haryana Higher Education Council), Prof. Ramesh Pandey (Former Vice Chancellor), Shri Lal Bahadur Shastri (Central Sanskrit University), Prof. R. K. Gupta (Principal), Prof. Devi Prasad Tripathi (Head of Sanskrit Department and Vice Chancellor, Uttarakhand Sanrkrit University) and Dr. Dinesh Shastri (Director, Haryana Sanskrit Academy). From 8th to 9th of October, 2022, under the joint effort of Samskrita Bharati and Sanskrit Oriental Studies Institute, Jawaharlal Nehru University, Samskrita Bharati and Indian Knowledge System Division, the Government of India, under the direction of Dr. Yogesh Sharma, Akanksha and Yashka gave cultural presentations of Sanskrit dance. On 23rd of January, 2023, as the keynote speaker, respected Vivek Kaushik (Organization Minister, Delhi, Samskrita Bharati) addressed all the students in a special lecture on the topic

"Why should we study Sanskrit". On 1st of February, 2023, by the effort of Samskrita Bharati, the Sanskrit Speech Camp was inaugurated, with Shri Lalbahadur Shastri (Research Department, Central Sanskrit University) and Prof. Shivshankar Mishra present as the Chief Guest of the ceremony. On 15th of February, 2023, on the auspicious occasion of 200th birth anniversary of Maharishi Dayanand Saraswati, by the efforts of Samskrita Bharati, the Sanskrit Speech Camp was concluded with the presence of Dr. Devkinandan Sharma (Samskrita Bharati, Delhi) as the Chief Guest of the ceremony. Students of the Sanatan Ved Gurukul and Jairam Ashram also took part in the camp and presented numerous beautiful presentations in Sanskrit. The Event was organised by the joint effort of the Youth, NSS, NCC, IQAC and Cultural and Moral Cell.On 22nd of March, 2023, like every year, the Indian New Year (Vikrami Samvat 2080) was celebrated in the Annual Cultural Fest - Pravah by the effort of Sanskrit Parishad. On 18th of August, 2022, Akanksha Panwar secured the Third Place in the Sanskrit Singing Competition in the Sanskrit Week, organized by the joint effort of Hansraj College and Samskrita Bharati. On 12th of April 2023, the Shlok Recitation and Quiz Competition in the Annual Sanskrit Competition was organized, where the First, Second and Third Prizes were distributed. On 29th of April 2023, the Prize Distribution and blessing ceremony was organized in the presence of Prof. R. K. Gupta (Principal).

SAVI – STUDENTS' ASSOCIATION FOR VERBAL INTERACTION

Convenor: **Dr Mayank Pandey**

SAVI and SANKALP jointly organized the annual function in physical mode on August 04, 2022 (Thursday) in the college. The programme officially started by Gayatri Mantra and D.A.V. Gaan. Principal. Prof. R. K. Gupta, Dr. S. C. Sharma (Founder Convener, SAVI and SANKALP) and Prof. Harish Arora (former Convener, SANKALP) addressed the audience. Later, student representatives of SAVI and SANKALP presented their activities and achievements. Dr. Mayank Pandey, Convener, SAVI and Mr. Manoj Kumar, Convener, SANKALP were also present during the event. E-certificates and trophies were awarded to the out-going office bearers. A visit to Bhagat Singh

Cell was organized on September 14, 2022 for SAVI students along with Srishti – the environment society of the college, NCC and NSS under the guidance of Dr. Mayank Pandey, Convener, SAVI and Srishti, Mr. Balwant Singh, Programme Officer, NSS and Lt Hari Pratap, ANO, NCC. Students also visited the museum of the university. An industrial visit to Indian Pollution Control Association (IPCA) Plastic Recycling Plant, Plot No 66, Eco Tech 12, Greater Noida (West) (U.P.) was jointly organized on September 16, 2022, by the Environment Committee, Waste Management Committee, Students' Association for Verbal Interaction (SAVI), Entrepreneurship & Skill Development Cell, ENACTUS, Industry Institution Interaction Cell (IIIC) and National Innovation and Start-up Policy (NISP). SAVI, in collaboration with IQAC, SANKALP and ATHENA and in association with Central Bank of India, organized two-tier inter-college quiz competition on the occasion of Vigilance Awareness Week 2022. Prof. R.K. Gupta, Principal, P.G.D.A.V. College (Evening) and Mr. Bharat Jain, Vigilance Officer, Central Bank of India addressed the students. Top three winners were given prize money by the central bank of India while the e-certificates for the volunteers, participants and winners were issued by P.G.D.A.V. College (Evening).

SKILL INNOVATION AND ENTREPRENEURSHIP CELL/ INSTITUTION'S INNOVATION COUNCIL/NISP

President: **Ms Sonia Dhingra**
Convenor: **Dr Sonika Nagpal**

The Institution's Innovation Council of PGDAV College (E) constituted for the implementation of National Innovation and Start-up Policy of the Innovation Cell of Ministry of Education in the college, organized the following events under the guidance of Ms. Sonia Dhingra, President, IIC and Dr. Sonika Nagpal, Convenor, IIC. A webinar was Organised by Institution's innovation Council on 3rd September, 2022 on Zoom platform. The webinar was done in collaboration with Enactus society of the College under the aegis of 'Azadi ka Amrit Mahotsav'. The speaker was Dr. Harshada Mulay, HR and General Management Faculty from ITM business School Kharghar, Navi Mumbai. The objective of webinar was to familiarise students with ideation and brain-

storming process. Students also became aware of the endless start-up possibilities in the digital world. A seven day workshop on 'Skill Development and Data Analytics' was organized in the college from September 12-19, 2022 by the Institution's Innovation Council (IIC), Women Development Cell (WDC) and World University Service (WUS), in collaboration with Learning Links Foundation (LLF), a non-profit organisation dedicated to enriching lives through learning. The objective of this programme was to encourage students to build their interest, knowledge and expertise in a high-demanding Technology/STEM career path of data and analytics. It also aimed at enhancing the job readiness skills of the beneficiaries and to provide them an opportunity to enroll in globally recognized certification programs through online skill development platforms such as Coursera, Udemy etc. The workshop was conducted online on Zoom platform. It was a 20 hrs. course including hands-on training on Advanced MS Excel spanning 15 hrs. and sessions on Communication Skill Building spanning 5 hrs. An industrial visit to Indian Pollution Control Association (IPCA) Plastic Recycling Plant, Plot No 66, Eco Tech 12, Greater Noida (West) (U.P.) was jointly organized on September 16, 2022, by the Environment Committee, Waste Management Committee, Students' Association for Verbal Interaction (SAVI), Skill, Innovation and Entrepreneurship Cell, Industry Institution Interaction Cell (IIIC) and National Innovation and Startup Policy (NISP). The objective of this visit was to give practical exposure to the students about various steps involved in the plastic recycling and its commercial and economic viability. A webinar on Entrepreneurship and Innovation as a career option was organised by IIC (Skill Innovation and Entrepreneurship cell) and Enactus of the college on 19th Oct, 2022 under the aegis of 'Azadi ka Amrit Mahotsav'. The speaker was Dr. Harshada Mulay, HR and General Management faculty from ITM business School, Navi Mumbai with experience of more than 20 years. To celebrate National Education Day, a speech competition was organised by Skill, Innovation and Entrepreneurship Cell (SIEC) (IIC) and ENACTUS jointly on 26th November 2022. The topic was National Education Policy 2022-A boost to Entrepreneurship. A field trip was organised on January 28,2023 by Skill Innovation and Entrepreneurship Cell(SIEC)/IIC and Enactus in collaboration with Srishti-The Environment society to JanaJal Water on Wheels (WoW). It is

an enterprise which provide safe and potable water to the nearby residents and communities at a highly subsidized rate. JanaJal WoW also developed expertise on rainwater harvesting and installed a complete setup for the same at its registered office in Noida. 49 participants visited JanaJal WoW enterprises (SD 96 A Sector 45, Noida – 201301) on to observe and understand the setting of water enterprise and rainwater harvesting system. A field trip was organised on February 8, 2023 by Skill Innovation and Entrepreneurship Cell(SIEC)/IIC and Enactus in collaboration with Srishti - The Environment society. The steps/phases involved in the plant in treating the sewage water were demonstrated to the students. Students also visited the water park behind the Sewage Treatment Plant where some of the treated water is discharged. National Science Day is celebrated on 28th February every year to mark the discovery of Raman effect, by Indian physicist C. V. Raman on 28 February 1928. Sir C.V. Raman was awarded Nobel Prize in Physics in year 1930 for his discovery. To celebrate National Science Day, a webinar on Importance of Innovation for Sustained Growth was organised by Skill Innovation and Entrepreneurship cell (SIEC) / Institution & Innovation Council(IIC) and Enactus with Srishti - The Environment Society on 24 February 2023. To celebrate National Youth Day and National Start-up day, a webinar was organised on 14th January, 2023. Ms. Vandana Singh, Founder of YUGO-A start-up relating to eco-friendly and sustainable products, was the key speaker.

SRISHTI – ENVIRONMENT SOCIETY

Convenor: Dr Mayank Pandey

Under the Vidya Vistar Scheme, Srishti – the Environment Society, in collaboration with the IQAC and Azadi ka Amrit Mahotsav cell, organized a webinar on Rainwater Harvesting on July 01, 2022 (Friday). Dr. Avnish Kr. Verma, Safe Water Network India was the speaker during the event who gave detailed account, necessity and benefits of rainwater harvesting. Ms. Sanchita Pandita, representative of Mahatma Gandhi National Council of Rural Education, Ministry of Education, Govt. of India visited the college on July 08, 2022 and observed different initiatives taken by the college for environmental conservation and awareness. On August 10, 2022, saplings

were planted within the college premise to celebrate the centenary year of the University of Delhi. A plantation drive was conducted by Srishti in collaboration with NSS and NCC. On Independence Day Eve (August 14, 2022), Srishti participated in a mass plantation drive on the banks of river Yamuna in collaboration with Yamuna Mission. Mr. Ashok Upadhyay of Yamuna Mission along with large number of people was present during the plantation drive. A group of students were taken to the real time ambient air quality monitoring station situated in the college premises on August 24, 2022. Students understood about the working principle of various instruments and sensors installed to monitor the concentration of prominent air pollutants. Two 'Aerobin' composters provided by Indian Pollution Control Association (IPCA) under the CSR fund by Swarn Lata Mothers on Trust were installed within the college premise. The composters were inaugurated on September 07, 2022 jointly by Prof. R.K. Gupta, Principal, Shri Shailendra Kumar Singh, ADM South – East Delhi, Dr. Radha Goyal, Deputy Director, IPCA. These composters will be used for converting the food waste into manure. Team IPCA played a skit to propagate awareness among the students. A workshop was also conducted for the house keeping staff to aware them about the solid waste management. The event was jointly organized by the environment committee and waste management committee. The annual function of Srishti and investiture ceremony was organized on the same day where the passed-out office bearers were awarded with trophies while the present office bearers were given badges. An industrial visit to Indian Pollution Control Association (IPCA) Plastic Recycling Plant, Plot No 66, Eco Tech 12, Greater Noida (West) (U.P.) was jointly organized on September 16, 2022, by the Environment Committee, Waste Management Committee, Students' Association for Verbal Interaction (SAVI), Entrepreneurship & Skill Development Cell, ENACTUS, Industry Institution Interaction Cell (IIIC) and National Innovation and Startup Policy (NISP). A field excursion to Okhla Bird Sanctuary for Vihang – the bird watching club was organized on October 15, 2022. Almost 50 student volunteers of Srishti and SANKALP attended Ganga Utsav – an annual event organized by National Mission for Clean Ganga (NMCG), Ministry of Jal Shakti, Govt. of India on November 04,

2022. Student volunteers of Srishti and SANKALP of the college and members of Jaladhikar Foundation came together to conduct mass plantation drive on November 06, 2022 near ponds created by Jaladhikar in Greater Noida west. The Principal Prof. R. K. Gupta, Shri Kailash Goduka, Jaladhikar Foundation and Shri Gopal Krishna Agrawal were present along with other volunteers who actively participated in plantation drive. Srishti and Jaladhikar foundation jointly organized a workshop on January 14, 2023 to create awareness about the commercialization of water. Almost 30 students were present in the event. The workshop was organized at Ayushyam (Ayurved and Prakritik Chikitsa Sansthan), 45A, Institutional Area, Vishwas Nagar, Karkarduma, New Delhi – 110032. Shri K.N. Govindacharya was the chief guest of the event who spoke about the issues and challenges faced by the commons due to pollution, commercialization of water and global warming - climate change. The environment committee, SIEC and NISP jointly collaborated with Safe Water Network India and USAID to organize a 42 hours certificate course on water entrepreneurship from January 16 – February 09, 2023. More than 60 students registered for the course and successfully completed the same. The certificate course was free of cost and Safe Water Network India fully sponsored all the expenditures for course. Practical sessions and two field excursions were also conducted during the certificate course. The Environment Society, in collaboration with Institution's Innovation Council (IIC), Skill Innovation and Entrepreneurship Cell (SIEC) and ENACTUS, organized a webinar on the topic 'Importance of Innovation for Sustained Growth' on February 24, 2023. Mr. Arvind Deshmukh, certified corporate trainer was the speaker in the webinar where he spoke about the importance of innovative practices and approaches in academic, professional and personal life. The environment committee, SIEC and NISP jointly collaborated with Safe Water Network India and USAID to organize a 42-hours certificate course on water entrepreneurship from April 03 – April 18, 2023. More than 60 students registered for the course and successfully completed the same. The certificate course was free of cost and Safe Water Network India fully sponsored all the expenditures for course. Practical sessions and two field excursions were also conducted during the certificate

course. Light, Water & Sanitation Committee, WUS and IQAC, in collaboration with Srishti organized a bilingual (Hindi/English) intra-college 'Slogan Writing Competition' on April 15. The theme of the competition was 'Save Electricity, Save Water and Sanitation' ("बिजलीबचाओ, जलबचाओएवंस्वच्छता"). A large number of students participated in the competition. College students, Mr. Adesh Yadav and Ms. Seema Dhaka, won the first and second prize, respectively. The NCC wing of the college and Srishti, jointly conducted a plantation drive in the college premise on April 18, 2023. Principal Prof. R. K. Gupta, CO LT COL Gagandeep Singh, ANO Lt Hari Pratap and Dr. Mayank Pandey, Convener – Srishti were present along with the NCC cadets and college students during the plantation drive.

TEACHERS' WELFARE COMMITTEE

Convenor: **Dr Nitish Bagdi**

Under the aegis of the Teachers' Welfare Committee, real plants were placed in the college staffroom and a notice board was installed in the staffroom. On 21st June, 2022 Teachers' Welfare Committee collaborated with Yoga Club in organizing annual fest "Shaswat". A scenery was installed in staffroom adjacent to faculty washroom. Teachers' Welfare Committee, celebrated "Teachers' Day" on 5th September, 2022 with 'Chandan Tilak Ceremony' of all teachers by college students. Teachers' Welfare Committee in collaboration with NPS committee and IQAC, organized a webinar on the topic "Compression of All Investments for Wealth Creation" on 18 th February, 2023. Teachers' Welfare committee placed artificial plants at the entrance of staff room. Teachers' Welfare committee collaborated with Yoga Club in organizing an event (Shahaj Yoga) on 19th April 2023

TWITTER ACCOUNT

Convenors: **Dr Sonika Nagpal**
Dr Shruti Vip

Under the guidance of Principal Prof. R.K. Gupta and the convenorship of Dr. Shruti Vip and Dr. Sonika Nagpal, the Twitter account of the college was

opened on 24th March, 2021, with the main objective of strengthening the presence of the college on social media. Since the opening of the Twitter account, the college has been posting and sharing information regarding the important activities of various cells, committees and departments along with the achievements of its students and faculty members with its stakeholders. In addition to this, the relevant information posted by the University Grants Commission, University of Delhi and Ministry of Education is also shared through retweets.

Twitter handle- @PGDAVEVE_DU

VIRASAT: THE HISTORY SOCIETY

Convenor: **Prof. Mridula Arora**
Student coordinator: **Anuj Pandey**

A tour to Qutub complex was organised on 29th December, 2022 for third semester students of the paper 'Heritage and Tourism'. Students were taken to Qutub complex, Humayun's tomb and National Museum. Seventeen students participated in this exercise of heritage walk. A movie was screened for the students of Issues in World History: the 20th century on 2nd February 2023. The movie screened was 'From Russia With Love', a very old movie which primarily showcased how James Bond movies were used as a kind of tool by USA during the Cold War era. A Quiz was organised on 11 April,2023 for the students on Popular Movements which included anti-apartheid movement in South Africa, civil rights movements in USA, students' movements in Paris in 1968, Chipko movement , struggles for Bhopal and Amazon, women's movements especially Vishakha guidelines. Initially three teams of 10 students each were there and finally one team of 10 students won.Avneesh Shukla was adjudged the best amongst them.

WASTE MANAGEMENT COMMITTEE

Convenor: **Dr Mayank Pandey**

Two 'Aerobin' composters provided by Indian Pollution Control Association (IPCA) under the CSR fund by Swarn Lata Motherson Trust were installed within the college premise. The composters were inaugurated on September 07, 2022 jointly by Prof. R.K. Gupta, Principal, Shri Shailendra

Kumar Singh, ADM South – East Delhi, Dr. Radha Goyal, Deputy Director, IPCA. These composters will be used for converting the food waste into manure. Team IPCA played a skit to propagate awareness among the students. A workshop was also conducted for the house keeping staff to make them aware about solid waste management. The event was jointly organized by the environment committee and waste management committee. An industrial visit to Indian Pollution Control Association (IPCA) Plastic Recycling Plant, Plot No 66, Eco Tech 12, Greater Noida (West) (U.P.) was jointly organized on September 16, 2022, by the Environment Committee, Waste Management Committee, Students' Association for Verbal Interaction (SAVI), Entrepreneurship & Skill Development Cell, ENACTUS, Industry Institution Interaction Cell (IIIC) and National Innovation and Startup Policy (NISP). Principal Prof. R.K. Gupta, Dr. Mayank Pandey (Convener, Environment Committee, Waste Management Committee and SAVI), Ms. Sonia Dhingra (Convener, Entrepreneurship & Skill Development Cell and ENACTUS), Dr. Sonika Nagpal (Convener, NISP) and Mr. Manoj Kumar (Member, Entrepreneurship & Skill Development Cell) and Ms. Tanishka Gupta (faculty member, Dept. of Commerce) were present during the visit along with fifty – six students from the above-mentioned cells/societies. The college collaborated with Indian Pollution Control Association (IPCA) to start organic farming in the college campus where the manure produced by the aerobin and pit composting will be used for the organic farming. The biodegradable waste (kitchen waste, left-over food, gardening waste etc.) is converted to manure using in-house compost pit. At present, 350-400 kg (approx.) compost has been formed, which will be used as manure for gardening purpose. Also, the WMC and ENACTUS jointly came together to make packets of manure (5 kg each) formed in the compost pits and sell the packets to the teaching and non-teaching staff, students and outsiders at highly subsidized rate (Rs 30 per kg). Being a bulk consumer, the college files annual e-waste returns with Delhi Pollution Control Committee. The college filed e-waste returns for the year 2021-22 also in May 2022. Jaagruti – Paper Waste Recycling Services collected 440 kg paper waste from the college campus for its recycling and provided equivalent number of fresh A4 sheet reams and recycling certificate to the college.

WUS CELL

Nodal officer: **Dr. Beena Meena**

WUS (World University Service) is an international non-governmental organization whose main objective is to promote the participation of the educational world and students at the international and national level in areas such as education, human rights, development, social justice.In keeping with this vision, WUS Cell of P.G.D.A.V. College (Evening) organized various public awareness campaigns and programmes on contemporary issues. A webinar was organized jointly by Red Ribbon Club, WUS, WDC, IQAC, AZADI KA AMRIT MAHOTSAV and VIDYA VISTAR SCHEME on the occasion of 'World Breastfeeding Week'. The theme of the webinar was "Step Up for Breastfeeding Education and Support". This webinar was organized on August 6, 2022. The invited speaker for this webinar was Dr. Sakshi K. Bhardwaj, Lactation Dept. (Manipal Hospital Dwarka). Dr. Sakshi ji explained in great detail about the benefits of breastfeeding for both the mother and the child. WUS Cell, WDC and IIC jointly organized a seven day workshop in college under the aegis of "Learning Links Foundation". This workshop lasted from 12 September to 19 September 2022. The theme of the workshop was - "Skill Development and Data Analytics". The objective of this workshop was to inform the students about the field of Data Analytics and make them aware of its importance and need. The speakers in this workshop were Raveena Singh (LLF), Mr. Sanjay Yadav and Mrs. Gayatri. On the occasion of 'International Millet Year 2023WUS Cell, Department of Physical Education and Sports Science, under the joint auspices of IQAC, WDC and MEDICAL COMMITTEE, organized a webinar was on 28th November 2022. The title of this webinar was – 'Millets for Health and Sports'. Dr. Suneha Goswami, Senior Scientist Bio-Chemistry Division (ICAR-IARI) was present as the keynote speaker in the webinar. He gave interesting and factual information on the importance of millet and the role of millet in human health. Mother Tongue Cell and WUS organized a cultural program on the occasion of 'International Mother Language Day'.The program was organized on February 25, 2023 with the theme - "Unity in Linguistic Diversity is our Identity". The invited speaker of this programme Dr. Lokesh Gupta (Convenor - Bhartiya Bhasha Manch) was present. In this cultural programme, the students of the college gave presentations in their respective mother tongues, along with the guest speaker Dr. Lokesh

Gupta, Principal Prof. Ravindra Kumar Gupta ji and teachers also kept their views in their respective mother tongues.A 'Slogan Writing Competition' was jointly organized by Light, Water and Sanitation Committee, WUS Cell, IQAC, and Shrishti on 15th April, 2023. The theme of the competition was "Save Electricity, Save Water and Cleanliness". The first winner of the competition was Adesh Yadav and the second winner was Seema Dhaka.

YOGA CLUB

Convenor: **Dr Shruti Vip**

Yoga practice sessions based on Common Yoga Protocol of Ayush Ministry were conducted by yoga club in June 2022 in online and offline mode and the new members of the club were apprised with basics of yoga. International Yoga Day was celebrated with very active participation of teaching, non-teaching staff and students on June 21st, 2022 in the college lawn from 5 pm onwards. PGDAV Evening College was the Nodal Centre for the ECA Admissions 2022 for the category 'Yoga'. Dr Shruti Vip was nominated by the college Principal, Prof R.K. Gupta to be the Nodal Officer. The college got an opportunity to host the trials for two days from 19th -20th October from 9 am-5 pm in the college seminar hall which was well coordinated by the members of Yoga Club. Thirty students appeared for the two-day Yoga trials that were conducted in two shifts on both the days and mesmerised the judges with their impressive performance. Yoga Club, 'Shashwat' took an initiative to instill fitness among students by organising practice sessions in the yoga room on Mon, Wed, Fri from 2-2.45 pm from Jan 2023 onwards under the able guidance of a certified yoga trainer, Pushp, a student of B. Com Hons. VI Semester. A workshop on “LIFE THROUGH YOGA” on November 21st, at 1:00 p.m., in college seminar hall, was attended by more than 50 enthusiastic participants. The workshop involved a discussion on how to deal with pollution and winters through exercise, asana, and pranayama by Miss Shikha Shukla (certified yoga trainer and evaluator by QCI, Ministry of AYUSH, Government of India. Shashwat organised two informative series on asanas from September, 2022-February, 2023 using Instagram and outdoor sessions as well. Shashwat, Yoga Club organised a

workshop conducted by Ms Naha Sayal on 'Meditation and Yosgasana' on February 28, 2023 in the college Seminar Hall. The event was attended by 35participants. The students of Yoga Club attended the Session 'Har Ghar Dhyan' by Gurudev Sri Sri Ravi Shankar in North Campus in the Multi-purpose hall on 3 rd March,2023.Yoga Club organised 'Yogotsava' , an intercollege yoga competition as part of the Annual Cultural Fest, Pravah on 21 st March 2023 in the college auditorium which was attended by several participative teams from several educational institutes and an expert yoga professor, Dr Ramesh shared his valuable inputs while judging the event. The students of Yoga Clubgave a mesmerising performance titled 'Rhythmic Yoga', commemorating Indian New Year Chaitra Shukla Pratiprada Vikrami Samvat 2080 which was celebrated as part of the annual college cultural fest, Pravah on 22 nd March 2023. Yoga Club students enthralled the audience during the college Allumni meet held on 15 th April by performing on Shiv Panchakshar Stotra. Shashwat, organised a workshop on "Personality Development and Stress Management through Sahaja Yoga Meditation" on April 19th, at 1:00 p.m., in collaboration with IQAC, the Cultural and Ethics Cell, and the Teacher's Welfare Committee in the college seminar hall. The event was attended by 46 students, 20 faculty members and 3 non-teaching staff members. The key point of discussion was "how to deal with stress, anxiety, and depression through Sahaja Yoga Meditation." The session was very well conducted by the resource person, Mr. Anish Kohli, and the Sahaja Yoga team.

YOUTH PARLIAMENT SOCIETY

Convenor: **Dr Karishma Saraswat**

P.G.D.A.V. College (Evening) formed Youth Parliament Society in May, 2022 with the aim of spreading spirit of democracy amongst the students. The main objective of this society is to provide a platform to the students who are interested in learning new things, and developing their interpersonal and debating skills. The activities of the society are conducted in a gender-neutral manner, students especially girls are encouraged to contribute in organizing and managing events and to participate in competitive intra-college and inter College events as well. The College

registered for the Youth Parliament Sitting under the National Youth Parliament Scheme of the Ministry of Parliamentary Affairs.

The 1st Youth Parliament Sitting was conducted on July 25, 2022 on the topic "Introduction and Consideration of the Bill NEP-2020". The society is actively involved in organising various events in college. Extempore Competition was held on November 26, 2022 on the occasion of Constitution Day in collaboration with SIEC, IIC and Enactus. A speech competition was organised on Nov 29, 2022 by the society in collaboration with the Hindi Sahitya Sammelan. A seminar on the topic " India's G20 Presidency: Leadership in a changing world" was organised in collaboration with Samprabhu Society on February 21, 2023. An Educational visit was organised on March 31st, 2023 to the Parliament House, to give an insight about the historical significance and current functioning of Loksabha and Rajyasabha to our students. About 35 students along with 6 faculty members went for the visit.Three of our students participated in the 2nd Delhi Youth Parliament '23 organised by Delhi Legislative Assembly in January'2023. Some of our students namely Divya Pratap Singh, Sharanyam Singh, Aryan Madhav Saavi, Harsh Purohit, Umra Siddiqua participated and won prizes in different Youth Parliament competitions and MUNs across colleges in Delhi and NCR.

– Compiled by –

Dr. Asha Rani
Professor
Dept. of Hindi

Ms Priyanka Chatterjee
Associate Professor
Dept. of English

FORM - IV
(See-Rule 8)

1.	Place of Publication	P.G.D.A.V. College (Eve.)
2.	Periodicity of Publication	Annual
3.	Printers Name	Ajit Screen Graphics Indian B-244, Back Side Phase-I, Naraina Industrial Area New Delhi-110028 Phone : 9891073535 8448363641
4.	Editor's Name	Dr. Yogesh Sharma Indian P.G.D.A.V. College (Eve.) New Delhi
4.	Name of the addresses of Individuals who own the Newspaper and partners of shareholders holding more than one percent of the total capital	P.G.D.A.V. College (Eve.) New Delhi

I, Dr. R.K. Gupta, do hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and believe.

31.12.2023

Dr. R.K. Gupta
(Signature of Publisher)

में

महाविद्यालय

‘हम संस्कृत क्यों पढ़ें’ पर व्याख्यान

नई दिल्ली, 24 जनवरी (नवोदय टाइम्स) : दिल्ली विश्वविद्यालय से सम्बद्ध पीजीडीएवी (सान्ध्य) कॉलेज में संस्कृत परिषद् एवं संस्कृत भारती के संयुक्त तत्वावधान में हम संस्कृत क्यों पढ़ें विषय पर विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। छात्र महेश द्वारा किए गए वैदिक मंगलाचरण के साथ दीप प्रज्वलित करके कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। छात्रा आकांक्षा ने सरस्वती वन्दना की।

मुख्य वक्ता संस्कृतभारती,दिल्ली प्रांत संगठन मंत्री आचार्य विवेक कौशिक रहे। डॉ. रक्षिता ने आचार्य विवेक कौशिक का परिचय देते हुए बताया कि आचार्य विवेक कौशिक जी लेफ्टिनेंट पद से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति

■ मुख्य वक्ता संस्कृतभारती दिल्ली प्रांत संगठन मंत्री आचार्य विवेक कौशिक रहे

लेकर पूर्णरूप से संस्कृत के प्रचार एवं प्रसार में समर्पित हैं। वह वर्तमान समय में ऑर्गेनिक रसायन में अमेरिका के कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय से पीएचडी कर रहे हैं और भगवद्गीता की ऑनलाइन कक्षाएं लेते हैं, जिसमें 22 देशों से लोग प्रतिदिन जुड़ते हैं।

व्याख्यान में विषय हुए विवेक कौशिक ने बताया कि हम सभी के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए संस्कृत पढ़ना अत्यंत आवश्यक है। संस्कृत भाषा में प्रयोग होने वाले शब्दों का उच्चारण कपालभाति एवं भ्रामरी प्राणायाम के सदृश कार्य करता है। संस्कृत भाषा को बोलने से मस्तिष्क के सभी भाग सक्रिय हो जाते हैं। भारतीय ग्रन्थों में निहित ज्ञानराशि को जानने एवं उनको प्रसारित करने के लिए भी संस्कृत पढ़ना आवश्यक है।

संस्कृत परिषद् के संयोजक डॉ. योगेश शर्मा ने कार्यक्रम का संचालन किया,डॉ. अंकुर त्यागी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। छात्र अनिरुद्ध ने शान्ति मन्त्र किया। कार्यक्रम में विभागों के प्राध्यापक डॉ. जयशंकर, डॉ. एंजेला, डॉ. मति उर्रहमान खान, डॉ. बलवन्त, डॉ. कामिनी रावत, डॉ. अभिमन्यु एवं छात्र वक्तव्य को सुनकर लाभान्वित हुए।

शास्त्रीय भाषा होने के साथ ही बोलचाल की भी भाषा है संस्कृत

नई दिल्ली, 22 अगस्त (नवोदय टाइम्स) : भारत संस्कृत परिषद्,राष्ट्रोक्ति वेब पोर्टल,अशोक सिंहल फाउन्डेशन और संस्कृत परिषद्, पीजीडीएवी कॉलेज (सांध्य) के संयुक्त तत्वावधान में नई शिक्षा नीति और संस्कृत विषय पर राष्ट्रीय संस्कृत संगोष्ठी एवं संस्कृत बहुत सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.देवी प्रसाद त्रिपाठी ने अपने भाषण में कहा कि नई शिक्षा नीति में संस्कृत का अच्छा स्थान है परन्तु इसमें भी हमें कुछ सुधारों के साथ प्रारम्भ करना होगा। हमें अपने बचे हुए गुरुकुलों और परम्परागत विश्वविद्यालयों को बचाना होगा। संस्कृत शास्त्रीय भाषा होने के साथ- साथ बोलचाल की भी भाषा है।

नवोदय टाइम्स Tue, 23 August 20 https://epaper.na

संस्कृत सम्भाषण शिविर का समापन समारोह

नई दिल्ली, 16 फरवरी (ब्यूरो): विगत 15 दिनों से चल रहे संस्कृत सम्भाषण शिविर का समापन समारोह दिल्ली विश्वविद्यालय के पीजीडीएवी (सांध्य) कॉलेज में आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में संस्कृत परिषद् एवं संस्कृतभारती के सहयोग से मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्यातिथि संस्कृतभारती, दिल्ली प्रान्तमन्त्री डॉ. देवकीनंदन शर्मा और आईक्यूएसी की संयोजिका डॉ. अनीता बजाज, संस्कृत परिषद् व कार्यक्रम संयोजक डॉ. योगेश शर्मा, सांस्कृतिक एवं नैतिक प्रकोष्ठ की संयोजिका रेणुकाधर बजाज व सहसंयोजिका डॉ. उदिता अग्रवाल, एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी बलवन्त सिंह, आदित्य प्रताप व उदय शर्मा आदि गणमान्य उपस्थित रहे।

पंजाब केसरी

YOUTH INDIA YOUTH PAPER

दिल्ली 23-03-2023

वार्षिक सांस्कृतिक उत्सव प्रवाह संपन्न

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): विकसित युवा–विश्व गुरु भारत की थीम पर दिल्ली विश्वविद्यालय (डीयू) से संबद्ध पीजीडीएवी कॉलेज (सांध्य) में वार्षिक सांस्कृतिक उत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम कॉलेज की सांस्कृतिक समिति 'कलांजलि" द्वारा इस वर्ष प्रवाह के नाम से मनाया जा रहा है। कार्यक्रम का उद्घाटन लोकसभा सांसद मनोज तिवारी के द्वारा किया गया जो कि मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद रहे। मनोज तिवारी ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि आप सभी इस देश के भावी भविष्य हैं। उन्होंने कार्यक्रम की थीम को आज के समय में प्रासंगिक बताया। उन्होंने प्राचार्य की प्रशंसा करते हुए कहा कि जैसे कुम्हार घड़े को अच्छा आकार देने के लिए उसे बार-बार गढ़ता है उसी प्रकार कॉलेज के प्राचार्य भी छात्रों के भविष्य को संवारने का कार्य कर रहे हैं। विशिष्ट अतिथि सुप्रसिद्ध बांसुरी वादक पंडित चेतन जोशी ने कहा कि हमने अपने पूर्वजों से विरासत में बहुत कुछ पाया है। कॉलेज के प्राचार्य प्रोफेसर रवीन्द्र कुमार गुप्ता ने कहा कि कॉलेज में इस बार वार्षिक सांस्कृतिक कार्यक्रम की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस बार रामचरित मानस की चौपाइयों पर भी प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है।

NBT नवभारत टाइम्स

03-11-2022

शर्स के वेलकम के लिए कॉलेज गेट पर तैयार थे सीनियर्स

भारतीय नववर्ष पर मनाया गया वार्षिक सांस्कृतिक उत्सव

नई दिल्ली, 23 मार्च (नवोदय टाइम्स) : दिल्ली विश्वविद्यालय से सम्बद्ध पीजीडीएवी कॉलेज (सांध्य) में 2 दिनों से चल रहे वार्षिक सांस्कृतिक उत्सव भारतीय नववर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन बीरवार को सम्पन्न हुआ। विवेकशील युवा - विश्व गुरु भारत की थीम पर कॉलेज की सांस्कृतिक समिति कलांजलि द्वारा इस वर्ष प्रवाह के नाम से मनाया गया।

दूसरे दिन भी विभिन्न 13 प्रतियोगिताओं में 440 छात्रों ने अपनी मनमोहक प्रस्तुतियां दीं। दोनों दिनों को मिलाकर कुल 800 छात्रों ने भाग लिया और 2000 छात्र उपस्थित रहे। सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि दूसरे दिन सारे कार्यक्रम भारतीय नववर्ष के रंग में रंग गए थे। नव वर्ष के लिए विशेष कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया जिसमें दीप प्रज्वलन और मंगलाचरण के साथ कार्यक्रम का उद्घाटन हुआ। संस्कृत में नववर्ष अभिनंदन गीत, योगा क्लब की विभिन्न योग से संबंधित मनमोहक प्रस्तुतियां, विभिन्न लोक गीतों पर नृत्य और रामचरित मानस की चौपाइयों की गायन प्रतियोगिता आकर्षण का केन्द्र रही। कॉलेज प्रिंसिपल प्रो.रवीन्द्र गुप्ता ने बताया कि हम प्रतिवर्ष नववर्ष पर छात्रों के लिए विभिन्न व्याख्यानों का आयोजन करते हैं।

WorldNews24x7 International News Portal

mrspa23@gmail.com

PGDAV College (Evening) Annual Cultural Festival 'Pravah' Celebrated on Indian New Year

10 New Delhi, Monday 27 March 2023 Focus News

PGDAV Eve College celebrated its annual cultural festival "Pravaah 2023" with great enthusiasm and fanfare

New Delhi, Focus News: PGDAV Eve College celebrating its annual cultural festival "Pravaah 2023" on the theme of Conscientious Youth and Vishv Guru Bharat. This grand celebration is on 21st March 2023 & 22nd March 2023 which organised by The Cultural Committee "Kalanjali" of the college under a new name "Pravaah" this year. The inauguration ceremony of this cultural festival has been done by well known & popular Artist, Singer and Member of Parliament (LokSabha) Manoj Tiwari who was the chief guest at the inaugural ceremony. Manoj Tiwari addressed the students as the future our nation, because of whom the dreams of Honorable Prime Minister will become true and India will be one the foremost countries in the world. He said the theme of the festival is very relevant in today's world. He praised Principal Professor R.K. Gupta of the college and he is working relentlessly for the betterment of the future of the students. He asked the students to refrain from doing anything because of which they may hate themselves. He said there's no alternative to education and studies. He also sang his popular folk songs for the audience which left them happy and mesmerized. The second chief guest, Very well known, Pandit Chetan Joshi said our ancestors have given us a rich legacy and now it's our turn upkeep the same and make it better. Only an Artist can carve a beautiful statue out of piece of rock and/ creates a beautiful song out of different notes. We must promote various forms of Arts and Artistic activities. The principal of the college, Professor R.K. Gupta said that this time the annual cultural festival not only has folk singing, folk songs, folk art but it also has a competitive event based on The Chaupaiyan (Quatrains) of The Epic "RamCharitManas". He also said when we will work together with full consciousness, positivity, energy and patriotic spirit, we will be able to take our country to become a Vishv Guru.

Udita Agarwal, the Convener of the Cultural Committee said that due to Corona, the program had been conducted online but this time it is being conducted offline. It made students more enthusiastic this time. Maximum 26 competitions were organized on the day. She further stated that the most important feature of this annual festival was that the names of the programs organized in it were similar to the programs organized such as: 'Jhankar' for playing instruments of different States, 'Sur Sangam' for singing, 'Maati Ki Thap' for Folk Dance, 'Yoga Utsav' for Yoga, 'Vimarsh' for Debate, 'Chehre Pe Chehra' for Face Painting, 'Drishyankan' for Film Making, 'Baatein Kahaniyan' for story writing, etc. A total of 4?? students from various universities participated in 13 competitions held on the first day. Students and teachers participated

FOCUS NEWS फोकस न्यूज

P.G.D.A.V. COLLEGE (EVE.)

(University of Delhi)

पी. जी. डी. ए. वी. कॉलेज (सांध्य)

(दिल्ली विश्वविद्यालय)

Nehru Nagar, New Delhi - 110065

Dear Shri Krishan Chander Rishi Agarwal,

(Prof. R.K. Gupta)

Principal

1945 में आज़ाद हुए दक्षिण कोरिया की अधिकारिक भाषा जापानी थी और वहां के लोग दुनिया में जिस सर्वाधिक घृणा करते हैं वो जापानी ही है। वहां के विश्वविद्यालय में पढ़ाने के लिए 98 प्रतिशत शिक्षक बाहर के थे जो सब अंग्रेजी जानते थे। एक सम्मेलन में वहां के कुलपति का भाषण हुआ वे अच्छी अंग्रेजी जानते लेकिन उन्होंने हज़ारों लोगों के बीच जिसमें अधिकांश अमेरिका और ब्रिटेन सहित हम विदेशी थे, एक घंटे तक कोरियाई भाषा में भाषण दिया। मैंने कहा सर आपने बहुत अच्छा भाषण दिया लेकिन वो कोरियाई भाषा में था, हम नहीं समझ सके। उन्होंने कहा-इट इज़ योर प्रॉब्लम, यानि कोरियाई भाषा सीखिए। वहां के हमारे विद्यार्थी जब भारत आते थे तो कहते थे कि भारतीय हमसे अंग्रेजी में बात करते हैं, जबकि हम उनसे हिन्दी में बात करना चाहते हैं।

दैनिक जनवाणी

महिलाएं हर क्षेत्र में कर रही मिसाल कायमः एसएन साबत

Rashtrokti

विश्वगुरु भारत : उद्यमिता से सिद्धि " विषय पर राष्ट्रीय गोष्ठी और सम्मान अर्पण समारोह

25 जून 2022 को दिल्ली विश्वविद्यालय के पीजीडीएवी (सांध्य) महाविद्यालय के ...

नए भारत की शिक्षा की धुरी बनेगी संस्कृत भाषा : दिनेश चंद्र

वीर अर्जुन संवाददाता

नई दिल्ली। विश्व की समस्त भाषाओं पर संस्कृत का प्रभाव है। संस्कृत में सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर प्रलय तक का ज्ञान विज्ञान समाया हुआ है। संस्कृत भारतीय संस्कृति और परंपरा की जीवंत अभिव्यक्ति का मुखर स्वर है। समय-समय पर भारत में जो भी आक्रांत आए उन्होंने संस्कृत को नष्ट करने का कोई यत्न नहीं छोड़ा,लेकिन देववाणी अपने स्वाभिमान के साथ भारत की भारती के रूप में सुरक्षित रही। वेदों से लेकर श्रीमद्भगवद्गीता तक अनेकानेक ग्रंथों का अनुवाद पाश्चात्य विद्वानों ने सैकड़ों वर्ष पूर्व यूं ही नहीं किया।अंग्रेजों ने जिस संस्कृत को सुनियोजित षड्यंत्र के अंतर्गत मृतभाषा कहा ,उन्हीं के बौद्धिक योद्धा मैक्समूलर ने संस्कृत की महत्ता के विषय में अपनी पत्नी को जो पत्र लिखा उसमें दुष्प्रचार और षड्यन्त्र का पूर्ण प्रमाण है।आज भारत और भारतीय भाषाओं के प्रति ऐसे संगठित और सुनियोजित दुष्प्रचार को रोकने की आवश्यकता है। ये विचार विश्व हिन्दू परिषद के आयाम भारत संस्कृत परिषद्,राष्ट्रोक्ति वेब पोर्टल,अशोक सिंहल फाउंडेशन और संस्कृत परिषद्, पीजीडीएवी महाविद्यालय (सान्ध्य) के संयुक्त तत्वावधान में "नई शिक्षा नीति और संस्कृत" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संस्कृत संगोष्ठी एवं संस्कृत विद्वत सम्मान समारोह का उद्घाटन करते हुए विश्व हिन्दू परिषद के मार्गदर्शक श्री दिनेश चंद्र ने व्यक्त किये।

अतिथियों का स्वागत और गोष्ठी का विषय प्रवर्तन करते हुए पी.जी. डी.ए.वी.महाविद्यालय (सान्ध्य) के प्राचार्य प्रो.रवीन्द्र गुप्ता ने कहा कि संस्कृत बहुत ही वैज्ञानिक और मानव मूल्य से युक्त भाषा है । नई शिक्षा नीति में मातृभाषा पर विशेष जोर के साथ संस्कृत सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं को केंद्र में रखा गया है।हमें इस देश को इस प्रकार प्रभावशाली और महत्त्वपूर्ण बनाना है कि विदेशी जन यदि भारत आएं तो यहां आने से पहले उन्हें अनिवार्य रूप से हिंदी व संस्कृत सीखनी पड़े। अतिविशिष्ट अतिथि श्री लाल बहादुर राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के पूर्व कुलपति प्रो.रमेश कुमार पाण्डेय ने कहा कि दुनिया के सभी विषय मूल रूप से संस्कृत भाषा में समाहित हैं।

देवभूमि संवाद

नए भारत की शिक्षा की धुरी बनेगी संस्कृत भाषा: दिनेश चंद्र

दैनिक बिनेश टाइम्स मेरठ गाजियाबाद हापुड मुरादाबाद

नए भारत की शिक्षा की धुरी बनेगी संस्कृत भाषा.-दिनेश चंद्र,विहिप मार्गदर्शक

अमर उजाला

देश का नाम रोशन करने वाली महिलाएं और बेटियां सम्मानित

परिषदीय वि... कर किया

इन्हें किया सम्मानित

दैनिक जनवाणी

महिलाएं हर क्षेत्र में कर रही मिसाल कायमः एसएन साबत

...णी दिल्ली

www.jagran.com

...ार्थियों के सर्वांगीण ...कास का माध्यम है ...ा संसद : प्रो. गुप्ता

30 July 2022 FOCUS NEWS

पी. जी. डी. ए. वी. कॉलिज (सांध्य) में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर युवा संसद का आयोजन

खुशी समय

4 स्थानीय ▸ 15 जुलाई, 2022 ▸ शुक्रवार
पंजाब केसरी DELHI

गुरु पूर्णिमा पर गोष्ठी का आयोजन

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): डीयू के पीजीडीएवी सांध्य महाविद्यालय में भारतीय शिक्षण मंडल की दयानंद इकाई की ओर से गुरु पूर्णिमा पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए कॉलेज के प्राचार्य प्रो. रवींद्र कुमार गुप्ता ने कहा कि गुरु शब्द का समानार्थी शब्द नहीं है और गुरुपद की महिमा भी अनंत है। प्रोफेसर प्रो. वीएनु चौधरी ने कहा कि हमारे यहां गुरु शिष्य की परंपरा पुरानी है। डॉ. राजेश्वरी और डॉ. आदित्य प्रताप ने ध्येय वाक्य वाचन प्रस्तुत किया। इस अवसर पर प्रो. कृष्ण मुरारी, प्रो. ईशा वर्मा, प्रो. नीलोत्पल मृणाल सहित अन्य मौजूद रहे।

महिलाएं दे रहीं बेहतर योगदान

नवोदय न्यूज़ विज़न

प्रादेशिक

नवोदय टाइम्स
मूल्य ₹4/-

पीजीडीएवी महाविद्यालय (सांध्य) में प्रथम दिन कक्षाएं हुईं शुरू

दिल्ली विश्वविद्यालय के पी जी डी ए वी महाविद्यालय (सांध्य) के प्राचार्य प्रोफेसर रविन्द्र कुमार गुप्ता ने बताया कि आज पहले दिन ही कॉलेज में प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों की कक्षाएं आरंभ कर दी गई है। उनका कॉलेज में चन्दन तिलक से स्वागत भी किया गया।

FOCUS NEWS

A Great Initiative by PGDAV College (Eve.) to Impart Value Based Education as per NEP 2020

New Delhi, Focus News: Pannalal Girdharlal Dayanand Anglo Vedic College (Evening), University of Delhi signed a Memorandum of Understanding with Prajapita Brahma Kumaris Ishwariya Vishwa Vidyalaya "Partnering for Spiritual Empowerment and Value Development of the non-teaching/teaching staff and students of the College". Brahma Kumaris, a socio-spiritual international NGO holding a consultative status in UNICEF and Economic and Social Council (ECOSOC) of the UN, offers a wide range of developmental programmes to bring about spiritual empowerment for ethical and moral rejuvenation of the society at large, leading to positive and conscious behavioural changes in all age groups and genders, through its 8500 + centres in 137 countries. The MoU, was signed by BK Prabha Didi, Director, Defence Colony Centre, New Delhi of Brahma Kumaris and Prof. (Dr) Ravindra Gupta, Principal, PGDAV College Evening. It is notable that this is the first such MoU between a constituent college of the University of Delhi and the Brahma Kumaris for undertaking programmes/ seminars for the betterment of society at large. This initiative is also a major step towards introducing and promoting Value Based Education, which has been made an integral part of the New Education Policy, 2020.

हिन्दुस्तान

हिन्दुस्तान | www.livehindustan.com अपना बागपत/खेकड़ा

खेकड़ा के तेजस इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन एंड ट्रेनिंग महाविद्यालय में आयोजित की गई संगोष्ठी

महिलाएं आज हर क्षेत्र में योगदान दे रहीं

बास्केटबॉल टूर्नामेंट में टीमों ने दिखाया दम

राष्ट्र कौशल टाइम्स

सबकी खबर..सब पर नजर

उपयोगिता और आवश्यकता के आधार पर बढ़ती हैं भाषाएं :प्रो. द्विवेदी

पाञ्चजन्य

“विश्वगुरु भारत : उद्यमिता से सिद्धि ” विषय पर राष्ट्रीय गोष्ठी और सम्मान अर्पण समारोह

28-01-2023

दैनिक जागरण

पीजीडीएवी जीरो वेस्ट इंस्टीट्यूशन घोषित

प्राचार्य प्रो. आरके गुप्ता (बीच में) को प्रमाणपत्र देते निगम अधिकारी • सौजन्य : कालेज

जासं, दक्षिणी दिल्ली : दिल्ली नगर निगम (मध्य क्षेत्र) की ओर से डीयू के पीजीडीएवी कालेज (सांध्य) को जीरो वेस्ट इंस्टीट्यूशन घोषित किया गया है। प्राचार्य प्रो. गुप्ता ने जीरो वेस्ट मैनेजमेंट के बारे में बताया कि कालेज में लंबे समय से कंपोस्ट पिट बनाया गया है, जिसका उपयोग बायो-डिग्रेडेबल वस्तुओं द्वारा उपजाऊ यौगिक बनाने को किया जाता है। कंपोस्ट पिट वह कंटेनर ... भारतीय प्रदूषण नियंत्रण एसोसिएशन (आइपीसीए) के सहयोग से एरोबिक कंपोस्टिंग भी लगाया गया है, जिसका उपयोग खाद्य एवं बायो-डिग्रेडेबल वेस्ट के निस्तारण के लिए किया जाता है। कालेज में पेपर, प्लास्टिक और इलेक्ट्रानिक वेस्ट के निस्तारण के लिए भी प्रबंध किए जा रहे हैं। कार्यक्रम के दौरान निगम के असिस्टेंट कमिश्नर आदित्य कुमार ने प्राचार्य प्रो. रवींद्र कुमार गुप्ता को जीरो वेस्ट ...

28/01/2023

FOCUS NEWS
फोकस न्यूज

MCD declares P.G.D.A.V. College (Evening) a Zero Waste Institution

New Delhi, Focus News: Municipal Corporation of Delhi (Central Zone) has designated P.G.D.A.V. College (Evening) a Zero Waste Institution for its commendable efforts for wet and dry waste segregation, on-site composting and proper implementation of single use plastic (SUP) ban within the college campus. Sh. Aditya Kumar, Assistant Commissioner, MCD (Central Zone) awarded Zero Waste Institution certificate to Prof. R. K. Gupta, principal, P.G.D.A.V. College (Evening) in the presence of other MCD officials. Earlier, the MCD officials visited to the college to physically observe and verify the solid waste management initiatives being taken by the college for past many years and appreciated the collective efforts of college administration and students for the same. Prof. Gupta said that the college has constituted a waste management committee which looks after the effective and efficient management of solid waste (paper waste, plastic waste, food & biodegradable waste and e-waste) generated in the college premise. "Proper implementation of the source segregation is the key to successful solid waste management. Segregated waste is treated/disposed accordingly in the scientific manner, as prescribed by the concerned authorities", Prof. Gupta claimed. Although, the college has been practicing pit-composting for long time, Aerobic composters have also been installed in the college campus in collaborated with Indian Pollution Control Association (IPCA) for better management of food and biodegradable waste. Similarly, college is effectively managing the paper, plastic and electronic waste to make the college clean, green and zero waste campus.

'भारतीय भाषाएं और भारतीय ज्ञान परंपरा' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

उपयोगिता और आवश्यकता के आधार पर बढ़ती हैं भाषाएं : प्रो. द्विवेदी

उपयोगिता और आवश्यकता के आधार पर बढ़ती हैं भाषाएं - प्रो. द्विवेदी

7/12

भारतीय नववर्ष पर मनाया गया वार्षिक सांस्कृतिक उत्स

नई दिल्ली, 23 मार्च (नवोदय टाइम्स) : दिल्ली विश्वविद्यालय से सम्बद्ध पीजीडीएवी कॉलेज (सांध्य) में 2 दिनों से चल रहे वार्षिक सांस्कृतिक उत्सव भारतीय नववर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन बीरवार को सम्पन्न हुआ। विवेकशील युवा - विश्व गुरु भारत की थीम पर कॉलेज की सांस्कृतिक समिति कलांजलि द्वारा इस वर्ष प्रवाह के नाम से मनाया गया ...

दूसरे दिन भी विभिन्न 13 प्रतियोगिताओं में 440 छात्रों ने अपनी मनमोहक प्रस्तुतियां दीं। दोनों दिनों को मिलाकर कुल 800 छात्रों ने भाग लिया और 2000 छात्र उपस्थित रहे। सबसे बड़ी विशेषता यह कि दूसरे दिन सारे कार्य भारतीय नववर्ष के रंग में रंग थे। नव वर्ष के लिए वि कार्यक्रम का आयोजन भी कि गया जिसमें दीप प्रज्वलन मंगलाचरण के साथ कार्यक्रम का उद्घाटन हुआ। संग में नववर्ष अभिनंदन गीत, योगा क्लब की विभिन्न योग संबंधित मनमोहक प्रस्तुतियां, विभिन्न लोक गीतों पर और रामचरित मानस की चौपाइयों की गायन प्रतियो आकर्षण का केन्द्र रही। कॉलेज प्रिंसिपल प्रो. रवीन्द्र गु ने बताया कि हम प्रतिवर्ष नववर्ष पर छात्रों के लिए विभि व्याख्यानों का आयोजन करते हैं।

CS Scanned with CamScanner

दोनों ही देश हमारी बात मान ले, यह असमव बात थी, तो क्या यह विश्वगुरु होना नहीं है। वैश्विक महामारी कोरोना के समय दुनिया के किस देश ने भारत से हाइड्रोक्लोरोक्वीन नहीं मांगी, ब्राजील ने तो अपने प्रचार में इसे संजीवनी के रूप में प्रचारित किया। आज मेडिकल टूरिज्म भारत में लगातार बढ़ रहा है,अमेरिका और कनाडा जैसे विकसित देशों के लोग भी यहाँ इलाज करवाने आते हैं।

हिंदुस्तान जो पहले ऑफिस ऑफ द वर्ड कहलाता था अब हमारे बच्चों ने उसे फार्मेसी ऑफ द वर्ल्ड बना दिया है, हमारा गेहूं निर्यात देखिए। पाकिस्तान जैसा देश जब ये कह रहा है कि भारत की विदेश नीति बहुत अच्छी है जी-7 के सम्मेलन में भारत को विशेष रूप से आमंत्रित किया जा रहा है क्योंकि हमारी बात और हमारी राय उन्हें गुरुता वाली और संयमित लगती है।

वसुधैव कुटुंबकम और सर्वे भवन्तु सुखिनः अतीत में ही नहीं भविष्य में भी प्रासंगिक और उपयोगी है, बस हमें उद्यम, परिश्रम, तप तथा साधना के साथ कर्म करना पड़ेगा, निरंतर हम यह उद्यमिता अवश्य करेंगे। गुरुकुल पद्धति और वैदिक जीवनचर्या के साथ भी आज के संदर्भ में भी हम दुनिया के सिरमौर बनेंगे। एक सुंदर इमारत खंडहर में बदल गई,यदि उसमें रहने वाले लोग उसे ठीक करने की सोच ले तो वह इमारत सुंदर और बुलंद बन सकती है,शिखर छू सकती है,उसकी पुरानी आभा और चमक लौट सकती है।

समारोह की अतिविशिष्ट अतिथि पंजाब केसरी दैनिक की निदेशक और वरिष्ठ नागरिक केसरी क्लब की चेयरपर्सन श्रीमती किरण चोपड़ा ने कहा कि हम आज जो कर रहे हैं जिस दिशा की ओर चल रहे हैं वह गुरु होने का ही मार्ग है। हमारा देश ज्ञान का गुरु रहा है, इसमें तरह-तरह के ज्ञानी हुए हैं। शून्य हमने दिया, आयुर्वेद, योग, दशमलव दिया ,गुरु तो वही होगा जिसका सब अनुसरण करें और जिसकी बातें सब मानें। कोरोना में दुनिया ने अब मास्क पहने, हमारे जैन गुरुओं ने तो इनको पहले से ही प्रयोग किया है।

देवभूमि संवाद

Yog Kendra, Yoga Club Celebrated 9th International Yoga Day in collaboration with IQAC, SAVI and Teacher Welfare Committee on ... 2023 from 5.00 PM onwards in the College Seminar Hall. The event ... attended by more than 100 participants which included teaching, non-teaching staff as well as students of the college.

*On this occasion, Assistant Registrar of **Bhartiya Bhasha Samiti, J.P. Singh said** that we work for the promotion and development of languages. Languages are carriers of culture and their protection is necessary. As a guest speaker, Prof. Rachna Vimal of Satyawati College's Department of Hindi stated that every countryman should learn an Indian language other than his mother tongue.*

Home Magazine ई-पेपर संपर्क करें 03 Mar 2023 8:32 AM

भारतीय जर्नलिस्ट परिषद

Breaking News

ताजा समाचार (समाचार)

Shailesh Pandey 'भारतीय भाषाएं और भारतीय ज्ञान परंपरा' विषयपर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

Mar 02, 2023

सांस्कृतिक उत्सव म

नई दिल्ली । पीजीडीएवी (सांध्य) में 2 दिनों से चल वार्षिक सांस्कृतिक उत्सव आयोजन भारतीय नववर्ष शुक्ल प्रतिपदा के दिन सम्प हुआ। विवेकशील युवा वि भारत की थीम पर कॉलेज सांस्कृतिक समिति कलांज इस वर्ष प्रवाह के नाम से म गया।दूसरे दिन भी विभिन्न प्रतियोगिताओं में 440 छात्र अपनी मनमोहक प्रस्तुतियां दोनों दिनों को मिलाकर कु छात्रों ने भाग लिया और 20 छात्र उपस्थित रहे।

Deshgaon देश के दिल की खबर

उपयोगिता, आवश्यकता और रोजगार देने की क्षमता के आधार पर बढ़ती हैं भाषाएं - प्रो. द्विवेदी

भारतीय भाषा समिति (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार) एवं अखिल भारतीय ज्ञान परम्परा केंद्र, पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज (सांध्य) के संयुक्त तत्वावधान में 'भारतीय भाषाएं और भारतीय ज्ञान परम्परा' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन।

महानगर नई दिल्ली 30 जनवरी 2023, रु 5.00 (12+4 पेज) दिल्ली, कोलकाता, लखनऊ और चंडीगढ़ से प्रकाशित

जनसत्ता

jansatta.com epaper.jansatta.com facebook.com/jansatta twitter.com/jansatta

खबर कोना

शून्य अपशिष्ट संस्थान बना पीजीडीएवी सांध्य कालेज

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली, 29 जनवरी।

दिल्ली नगर निगम (मध्य क्षेत्र) की ओर दिल्ली विश्वविद्यालय के पीजीडीएवी कालेज (सांध्य) को शून्य अपशिष्ट संस्थान घोषित किया गया। दिल्ली नगर निगम ने पीजीडीएवी कालेज (सांध्य) के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि कालेज में गीले और सूखे अपशिष्ट को अलग करने, खाद बनाने और एकल उपयोग प्लास्टिक (एसयूपी) पर प्रतिबंध आदि जैसे अनेक कार्य कालेज परिसर में किए जा रहे हैं । दिल्ली नगर निगम (मध्य क्षेत्र) के सहायक आयुक्त आदित्य कुमार ने पीजीडीएवी कालेज सांध्य के प्राचार्य रवींद्र कुमार गुप्ता को कालेज के लिए शून्य अपशिष्ट संस्थान का प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया।

आज देश की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू बनने जा रही हैं वह एक महिला हैं, किस समाज से हैं, वो ऐसी महिला हैं जिनके समय पाठशाला नहीं थी उन्होंने पढ़ा ही नहीं अध्यापन को चुना, पंचायत चुनाव लड़ी विधानसभा पहुंची, गवर्नर बनी और अब राष्ट्रपति बनेंगी यह विश्वगुरु बनने की भारत की कसौटी है। हम सब ताकत रखते हैं समाज को बदलने की देश को बनाने की हम सब में युग परिवर्तन की ताकत है। ऐसे में क्यों नहीं हमारा देश विश्वगुरु होगा ,निश्चित रूप से यह पहले जहां सोने की चिड़िया था अब सोने का शेर बनेगा।

स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि हमें आत्मनिर्भर होना है,सबको रोजगार मिलेगा, देश के एक -एक व्यक्ति के मन में सैनिक बनने की इच्छा जागेगी ,जिस तरह इजराइल में हर परिवार का व्यक्ति सेना से जुड़ता है ,हमें भी ऐसे युवकों और लोगों की जरूरत है जो देश के लिए सोचें और देश के साथ आगे बढ़ें। साहित्यकार और पत्रकार समाज में चेतना जगाता है ,समाज की अच्छाइयों और बुराइयों को उद्घाटित करता है।

मन में संकल्प होना चाहिए, 18 वर्ष पूर्व जब सब कहते थे कि बुजुर्गों के लिए वृद्धाश्रम होने चाहिए, तब मैंने कहा नहीं, उन्हें घर, परिवार और अपनों का साथ मिले, ऐसे प्रयास होने चाहिए। हमने बोलकर, लिखकर सबको समझाया कि जहां आज बुजुर्ग हैं, कल आप होंगे और जहां आप आज हो, कल वहीं आपके बुजुर्ग थे। आज पत्रकारिता धनाढ्य लोगों के पास पहुंच गई है लेकिन हमारी पत्रकारिता में यानी पंजाब केसरी में सदैव राष्ट्रहित और राष्ट्र सेवा को सर्वोपरि माना है और आज भी हम पत्रकारिता को मिशन मानकर चलते हैं।

Samiti, and Prof. Harish Arora, coordinator of the seminar, was present.

Prof. Dwivedi stated that the time has come where we should encourage and respect our languages. Hindi and other Indian languages are gaining strength and recognition on a global platform. By speaking Hindi, the country's Prime Minister, Narendra Modi, is ruling the hearts of the world.

During the seminar, Prof. Ravindra Kumar Gupta, the college's principal, stated that Indian words are common in both Bhartiya Bhashayen and Bhartiya Gyan Parampara. If we want to know and understand India, we must first understand the Bhartiya Gyan Parampara. According to Prof. Umapati Dixit, Bhartiya Bhashayen and Bhartiya Gyan Parampara are as pure, flowing, intact, and uninterrupted as the Ganges. Language, like the Ganges, flows in its own way, assimilating culture and civilization.

On this occasion, Assistant Registrar of **Bhartiya Bhasha Samiti, J.P. Singh said** that we work for the promotion and development of languages. Languages are carriers of culture and their protection is necessary. As a guest speaker, Prof. Rachna Vimal of Satyawati College's Department of Hindi stated that every countryman should learn an Indian language other than his mother tongue.

The two-day National Seminar featured five sessions that were successfully organized. Prof. Harish Arora, the seminar's coordinator, stated that India has always been superior in the field of knowledge. The Vedas were written in India at a time when most people did not know how to read or write. This is why India is known as Vishwaguru.

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): भाषाएं अपनी उपयोगिता, आवश्यकता और रोजगार देने की क्षमता के आधार पर आगे बढ़ती हैं, अगर आज हमारी भाषाएं पिछड़ रही हैं तो इसकी जिम्मेदारी हम किसी और पर नहीं डाल सकते। यह बात भारतीय जनसंचार संस्थान के महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी ने कही। वह शिक्षा मंत्रालय की भारतीय भाषा समिति व पीजीडीएवी कॉलेज (सांध्य) अंतर्गत भारतीय ज्ञान परम्परा केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी "भारतीय भाषाएं और भारतीय ज्ञान परम्परा" के उद्घाटन सत्र में छात्रों व शिक्षकों संबोधित करते हुए बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि भाषाएं और माताएं अपने बच्चों से सम्मानित होती हैं। भारतीय भाषाओं के विकास के लिए सबको यह मार्ग तय करने पड़ेंगे, जिससे भाषाओं की उन्नति हो। संगोष्ठी में अतिथियों का स्वागत करते हुए पीजीडीएवी कॉलेज (सांध्य) के प्राचार्य प्रो. रवींद्र कुमार गुप्ता ने विषय को स्पष्ट करते हुए कहा कि भारतीय भाषाएं एवं भारतीय ज्ञान परंपरा दोनों में समानता यह है कि दोनों में भारतीय तत्व समान है। सत्र में वक्तव्य देते हुए आगरा के केंद्रीय हिंदी संस्थान के प्रो. उमापति दीक्षित ने कहा कि भारतीय भाषाएं और भारतीय ज्ञान परंपरा गंगा की तरह पवित्र, प्रवाहमान,अक्षुण्ण और अबाध है। अतिथि वक्ता के रूप में सत्यवती कालेज के हिंदी विभाग की प्रो. रचना विमल ने प्रत्येक देशवासी को अपनी मातृभाषा

विश्व में अग्रणी देश बनेगा भारत

नई दिल्ली (एसएनबी)। आप सभी इस देश के भावी भविष्य हैं आप ही के कारण हमारे प्रधानमंत्री जी का सपना साकार होगा और भारत विश्व में अग्रणी देश बनेगा। यह बात विवेकशील युवा विश्व गुरु भारत की थीम पर पीजीडीएवी सांध्य कॉलेज के वार्षिक सांस्कृतिक उत्सव में लोकसभा सांसद व प्रसिद्ध कलाकार मनोज तिवारी ने मुख्य अतिथि के रूप में कही। इस अवसर पर कॉलेज के प्राचार्य प्रोफेसर रवीन्द्र कुमार गुप्ता, विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रसिद्ध बांसुरी वादक पंडित चेतन जोशी व सांस्कृतिक समिति की संयोजिका उदिता अग्रवाल उपस्थित रहीं।

प्राचार्य प्रो. गुप्ता ने कहा कि जब हम सभी विवेक, सकारात्मकता व ऊर्जा से भरपूर होकर देश भक्ति से कार्य करेंगे तो विश्व गुरु बनने की दिशा में आगे बढ़ेंगे। विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रसिद्ध बांसुरी वादक पंडित चेतन जोशी ने कहा कि हमने अपने पूर्वजों से विरासत में

■ **सांसद ने पीजीडीएवी सांध्य कालेज में सभी को किया मंत्रमुग्ध**

सुरक्षित रखने की आवश्यकता है।

सांस्कृतिक समिति की संयोजिका उदिता अग्रवाल ने बताया कि इस वार्षिक उत्सव की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि इसमें जो भी कार्यक्रम किए गए उनके नाम उसमें हुए कार्यक्रमों से मिलते जुलते रहे। जैसे विभिन्न राज्यों के वादन के लिए झंकार, गान के लिए सुर संगम, फोक डांस के लिए माटी की थाप, योग के लिए योग उत्सव, डिबेट के लिए विमर्श, फेस पेंटिंग लिए चेहरे पर चेहरा, फिल्म मेकिंग के लिए दृश्यांकन, स्टोरी राईटिंग के लिए बर्फी सी कहानियां आदि प्रमुख रहे।

पंजाब केसरी DELHI · 30 जनवरी 2023 · सोमवार · स्थानीय 7

संक्षिप्त समाचार...

पीजीडीएवी कॉलेज बना जीरो वेस्ट इंस्टीट्यूशन

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): दिल्ली विश्वविद्यालय के पीजीडीएवी कॉलेज (सांध्य) को दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) द्वारा जीरो वेस्ट इंस्टीट्यूशन घोषित किया गया है। नगर निगम ने कॉलेज के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि कॉलेज में गीले और सूखे अपशिष्ट को अलग करने, साइट पर ही खाद बनाने और सिंगल यूज प्लास्टिक (एसयूपी) पर प्रतिबंध आदि जैसे अनेक कार्य कॉलेज परिसर में किए जा रहे हैं। एमसीडी के मध्य क्षेत्र के असिस्टेंट कमिश्नर आदित्य कुमार ने कॉलेज के प्राचार्य प्रो. रवींद्र कुमार गुप्ता को कॉलेज के लिए जीरो वेस्ट इंस्टीट्यूशन के प्रमाणपत्र से सम्मानित किया। इस अवसर पर कॉलेज व एमसीडी के अधिकारी भी शामिल रहे। इससे पहले दिल्ली नगर निगम के अधिकारियों ने कॉलेज पहुंचकर निरीक्षण किया तथा कॉलेज के द्वारा स्वतःपहल करते हुए ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के लिए कई वर्षों से अनवरत किए जा रहे प्रयासों की समीक्षा की। कॉलेज प्रशासन एवं विद्यार्थियों द्वारा किए गए सामूहिक प्रयासों की प्रशंसा भी की। कॉलेज के प्राचार्य प्रो. रवींद्र कुमार गुप्ता ने बताया कि कॉलेज में एक वेस्ट मैनेजमेंट कमिटी बनायी गई है, जिनके निर्देशन में सॉलिड वेस्ट, पेपर, प्लास्टिक, बायो-डिग्रेडेबल तथा ई-वेस्ट के निस्तारण के प्रभावी एवं कुशल प्रबंध किए गए हैं।

अपना शहर · राष्ट्रीय सहारा · 24-03-2023

प्रदर्शन किया।

सांस्कृतिक उत्सव मनाया

नई दिल्ली । पीजीडीएवी कॉलेज (सांध्य) में 2 दिनों से चल रहे वार्षिक सांस्कृतिक उत्सव का आयोजन भारतीय नववर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन सम्पन्न हुआ। विवेकशील युवा विश्व गुरु भारत की थीम पर कॉलेज की सांस्कृतिक समिति कलांजलि द्वारा इस वर्ष प्रवाह के नाम से मनाया गया।दूसरे दिन भी विभिन्न 13 प्रतियोगिताओं में 440 छात्रों ने अपनी मनमोहक प्रस्तुतियां दी। दोनों दिनों को मिलाकर कुल 800 छात्रों ने भाग लिया और 2000 छात्र उपस्थित रहे।

New Delhi, 03 March: "Languages develop based on their utility, necessity, and ability. If our languages are limited today, we cannot put the responsibility on anyone else. Languages and mothers are lauded by their children. For the development of languages, we have to decide such ways, through which languages can progress."

These views were expressed by Prof. (Dr.) Sanjay Dwivedi, Director General, Indian Institute of Mass Communication during the two-day national seminar organized on the topic "BhartiyaBhasha aur Bhartiya Gyan Parampara" under the joint aegis of Bhartiya Bhasha Samiti (Ministry of Education, Government of India) and Arundhati Bhartiya Gyan Parampara Kendra, PGDAV College (Evening). On this occasion the principal of the college, Prof. Ravindra Kumar Gupta, Prof. Umapati Dixit from Kendriya Hindi Sansthan, Agra, JP Singh, Assistant Registrar of Bhartiya Bhasha Samiti, and Prof. Harish Arora, coordinator of the seminar, was present.

Prof. Dwivedi stated that the time has come where we should encourage and respect our languages. Hindi and other Indian languages are gaining strength and recognition on a global platform. By speaking Hindi, the country's Prime Minister, Narendra Modi, is ruling the

Languages grow on the basis of its utility and need: Prof. Dwivedi

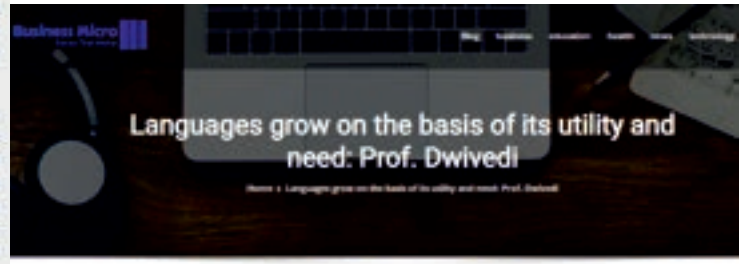

Languages grow on the basis of its utility and need: Prof. Dwivedi

उपयोगिता और आवश्यकता के आधार पर बढ़ती हैं भाषाएं :प्रो. द्विवेदी

written by Surendra Tripathi | March 3, 2023

During the seminar, Prof. Ravindra Kumar Gupta, the college's principal, stated that Indian words are common in both Bhartiya Bhashayen and Bhartiya Gyan Parampara. If we want to know and understand India, we must first understand the Bhartiya Gyan Parampara. According to Prof. Umapati Dixit, Bhartiya Bhashayen and Bhartiya Gyan Parampara are as pure, flowing, intact, and uninterrupted as the Ganges. Language, like the Ganges, flows in its own way, assimilating culture and civilization.

> *On this occasion, Assistant Registrar of Bhartiya Bhasha Samiti, J.P. Singh said that we work for the promotion and development of languages. Languages are carriers of culture and their protection is necessary. As a guest speaker, Prof. Rachna Vimal of Satyawati College's Department of Hindi stated that every countryman should learn an Indian language other than his mother tongue.*

The two-day National Seminar featured five sessions that were successfully organized. Prof. Harish Arora, the seminar's coordinator, stated that India has always been superior in the field of knowledge. The Vedas were written in India at a time when most people did not know how to read or write. This is why India is known as Vishwaguru.

लिए, उसको हमको बार -बार पढ़ना चाहिए। श्री अरविंद ने पिछले 300 वर्ष पूर्व के भारत में जो तपस्वी, सिद्ध, आध्यात्मिक विभूतियां, चिंतक और दार्शनिक हुए वैदिक चेतना और भारतीय चेतना का उन्होंने बड़ा महत्वाकांक्षी और भविष्य का चित्र अंकित किया। उनका स्पष्ट विचार था कि उस महद् चेतना (super mind) का अवतरण होगा इस धरती पर, हमें अपनी चेतना का विकास करके उस तक पहुंचना है, तब मनुष्य दिव्य चेतना से युक्त बन जायेगा।

निश्चित रूप से हमारा अतीत अद्वितीय रूप से गौरवशाली रहा है, इस पर कोई विवाद नहीं है। हम जानते हैं कि इस सृष्टि में उत्थान और पतन का एक चक्र लगातार चलता रहता है, कोई भी चीज अनंत काल के लिए एक ही स्थिति में टिकी नहीं रहती। हम भौतिक और अभौतिक, लौकिक-अलौकिक, पार्थिव और आध्यात्मिक सब प्रकार की शक्तियों से पूर्ण थे, ज्ञान विज्ञान की प्रथम वैदिक लहर भारत से ही निकली। खगोल, गणित,प्राचीन शास्त्र, धातु विज्ञान, आयुर्वेद, योग और बहुत सारे ऐसे क्षेत्र हैं जहां हम अग्रणी रहे, लेकिन ये भी सच है कि भारत जब आक्रांत नहीं था तब भी अंतर्मुखी हो गया था।

भविष्य की नींव वर्तमान पर ही रखी जाती है, सपनों पर नहीं। भारत के सामने अभी ज्ञान ग्रहण और ज्ञान निर्माण की चुनौती है, हमें एक ताकतवर,सक्षम और समृद्ध राष्ट्र बनाना है तो ज्ञान, विज्ञान, अर्थशास्त्र, भौतिकी , भाषिकी, तकनीकी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर जोर देना होगा और ऐसे प्रयास हो रहे हैं। आज हमारी सारी भाषाएं बहुत संकट में हैं, 60 या 70 करोड़ लोगों वाली हिंदी भी अजर अमर नहीं रहेगी, हमारे पास केवल दो पीढ़ियों का समय है। भारत की मुक्ता, भारत की श्रेष्ठता और उसका आत्मविश्वास तो संस्कृत आदि भारतीय भाषाओं में निहित है। जब हमारे बच्चों के बच्चे न रामचरितमानस पढ़ पायेंगे, न महाभारत, न गीता, न सूर, कबीर, प्रेमचंद या आज जो लिखा जा रहा है वो तो फिर कैसा भारत बनेगा।

भारत की असली प्रगति की पहली शर्त यही है कि जब हर भारतीय को उसकी अपनी भाषा में काम करने का मौका मिले। प्राथमिक कक्षा से लेकर उच्चतर स्तर तक भारतीय भाषाओं को केंद्र में रखा जाए। बहुत सारी चीजें हो भी रही हैं, नई शिक्षा नीति में सारी भाषाएं केंद्र में रखी गई हैं। इंजीनियरिंग में 8 भारतीय भाषाओं में प्रथम वर्ष के लिए 250 किताबें तैयार की गई हैं। एनआईटी, आईआईटी और मेडिकल के साथ ही कानून, मेडिकल और इंजीनियरिंग की पढ़ाई हिंदी में होना शुभ संकेत है। अपनी भाषाओं को पढ़कर , उनको बढ़ाकर, ज्ञान की सिद्धि से ही हमारी अपनी भाषाओं में समृद्धि बढ़ेगी।

पीजीडीएवी सांध्य महाविद्यालय के प्राचार्य श्री रवींद्र कुमार गुप्ता ने "विश्वगुरु भारत : उद्‌यमिता से सिद्धि " विषय पर पक्ष रखते हुए कहा कि आज से 7-8 वर्ष पूर्व पीछे झांकने पर हम देखते हैं तब भी सेमिनार होते थे, संगोष्ठियां होती थी इसी तरह लेकिन उस समय इस प्रकार के विषय नहीं होते थे।

समर सलिल
www.samarsaleel.com

उपयोगिता और आवश्यकता के आधार पर बढ़ती हैं भाषाएं· प्रो संजय द्विवेदी

March 2, 2023

* 'भारतीय भाषाएं और भारतीय ज्ञान परंपरा' विषयपर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

उपयोगिता और आवश्यकता के आधार पर बढ़ती हैं भाषाएं :प्रो. द्विवेदी

भारतीय भाषाएं और भारतीय ज्ञान परंपरा विषयपर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

न्यूज़ वुस्की

उपयोगिता और आवश्यकता के आधार पर बढ़ती हैं भाषाएं: प्रो. द्विवेदी

नई दिल्ली: भाषाएं अपनी उपयोगिता, आवश्यकता और रोजगार देने की क्षमता के आधार पर आगे बढ़ती हैं। अगर आज हमारी भाषाएं सीमित हैं, तो इसकी जिम्मेदारी हम किसी और पर नहीं डाल सकते। भाषाएं और माताएं अपने पुत्र और

"On this occasion, Assistant Registrar of Bhartiya Bhasha Samiti, J.P. Singh said that we work for the promotion and development of languages. Languages are carriers of culture and their protection is necessary. As a guest speaker, Prof. Rachna Vimal of Satyavati College's Department of Hindi stated that every countryman should learn an Indian language other than his mother tongue."

The two-day National Seminar featured five sessions that were successfully organized. Prof. Harish Arora, the seminar's coordinator, stated that India has always been superior in the field of knowledge. The Vedas were written in India at a time when most people did not know how to read or write. This is why India is known as Vishwaguru.

WorldNews24x7
International News Portal
mrspa23@gmail.com

पीजीडीएवी कॉलेज में बताया गया देहदान का महत्व

नई दिल्ली, 7 मार्च (नवोदय टाइम्स) : दिल्ली विश्वविद्यालय से संबद्ध पीजीडीएवी महाविद्यालय (सांध्य) में देहदान महादान विषय को लेकर एक व्याख्यान आयोजित किया गया। यह व्याख्यान महाविद्यालय की यूथ यूनाईटड फॉर विजन (युवा), आईक्यूएसी, मेडिकल कमेटी व दधीचि संस्था के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया।

व्याख्यान की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. रवीन्द्र कुमार गुप्ता ने की। इस दौरान प्रो. गुप्ता ने कहा कि उन्होंने स्वयं के निकटतम परिजनों के अंग एवं देहदान के उपरान्त होने वाली सन्तुष्टि एवं प्रसन्नता का अनुभव किया है। सभी को अंग एवं देहदान के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। कुछ वर्ष पूर्व अपने पिता के नेत्रदान एवं असमय काल कवलित हुए छोटे भाई का देहदान जैसा श्रेष्ठ कार्य किया है। यद्यपि उन्होंने कहा कि यह कहना आसान होता है और करना बहुत कठिन है परन्तु फिर भी हमें ये कार्य अवश्य करना चाहिए जिससे हमारे अंगों से कोई असहाय जन एक स्वस्थ जीवन जी सके और हमारा प्रियजन उस अंग के रूप में जीवित रह सके।

मुख्यातिथि पूर्व मेयर व दधीचि संस्था के अध्यक्ष हर्ष मल्होत्रा रहे। उन्होंने कहा कि देहदान करना एक पुण्य कार्य है और मेडिकल साइन्स के लिए भी बहुत उपयोगी है। यदि देहदान नहीं होगा तो शोध कैसे होगा। मुख्य वक्ता लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज की पूर्व निदेशक डॉ. सोहिन्दर कौर ने पी.पी.टी के माध्यम से अंगदान और देहदान को लेकर बहुत प्रेरणादायक और प्रभावी प्रस्तुति दी।

नवोदय टाइम्स Wed, 08 March 2023
https://epaper.navodayatimes.in/

MCD declares P.G.D.A.V. College (Evening) a Zero Waste Institution

हिन्दुस्तान
09-02-2023

डीयू में चलेंगे करियर संवारने वाले केंद्र

पहल

इन कॉलेजों के साथ हुए एमओयू

this occasion, Assistant
egistrar of Bhartiya Bhasha
umiti, J.P. Singh said that we
ork for the promotion and
velopment of languages.
nguages are carriers of
lture and their protection is
cessary. As a guest speaker,
of. Rachna Vimal of Satyavati
llege's Department of Hindi
ated that every countryman
ould learn an Indian
nguage other than his mother
ngue."

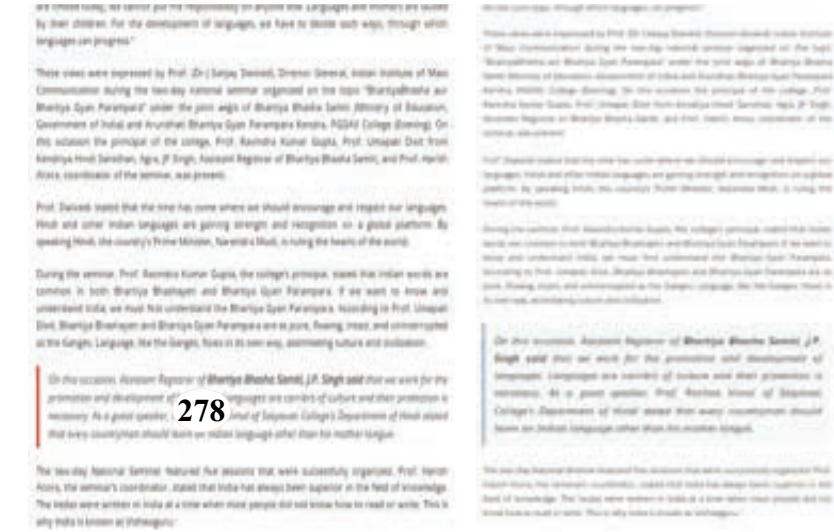

"On this occasion, Assistant Registrar of Bhartiya Bhasha Samiti, J.P. Singh said that we work for the promotion and

MEDIA EXPRESS

Languages grow on the basis of its utility and need: Prof. Dwivedi

Languages grow on the basis of its utility and need: Prof. Dwivedi

…students gave their mesmerizing performances in 13 … A total of 800 students participated in the fest and … students were present on both the days. Depending … of students in diverse competitions that took place … this festival, they were given names in Hindi Like … "Aalap" for solo song, "Kavyam" for poetry, … "Taal" for solo dance etc. The most important … all the programs were decorated with the colors of the Indian New Year. A special program was also organized for the new year which was inaugurated with lamp lighting and invocation. Major attractions in it were New Year Abhinandan song in Sanskrit, presentations related to various yogic practices by Yoga Club, dance on various folk songs and singing competition on the quatrain verse of Ramcharit Manas.

The college Principal Prof. Ravindra Kumar Gupta said that every year the college organized various lectures for the students, but this time we welcomed the New Year in a better way by organizing annual cultural programs on the occasion. Wishing happy new year to everyone he highlighted the importance of New Year and said that Indian New Year is based on scientific foundation. He also recalled the audience that On the same day in the history of human kind the coronation of Lord Rama and the establishment of Arya Samaj had taken place. Famous Kathak dancer Jaya Priyadarshini was also present as the chief guest on this occasion. She motivated students by emphasizing the importance of Indian culture. The Convener of the cultural committee, Dr. Udita Aggarwal relying on the scientific foundation of the new year said that every year the Sanskrit Council of the college along with other committees celebrated the new year but this time it had been given the grandest form by adding it to the annual festival. She gave the credit to the Principal for all this. Thanking everyone, Dr. Yogesh Sharma wished everyone a Happy New Year in Sanskrit. At the end of the festival, the chief guest and the Principal awarded all the students and at the end a DJ party was organized in which all the students …

These views were expressed by Prof. (Dr.) Sanjay Dwivedi, Director General, Indian Institute of … Communication during the two-day national seminar organized on the topic "BhartiyaBhasha a… Parampara" under the joint aegis of Bhartiya Bhasha Samiti (Ministry of Education, Government … Arundhati Bhartiya Gyan Parampara Kendra, PGDAV College (Evening). On this occasion the pr… college, Prof. Ravindra Kumar Gupta, Prof. Umapati Dixit from Kendriya Hindi Sansthan, Agra, J… Registrar of Bhartiya Bhasha Samiti and Prof. Harish Arora, coordinator of the seminar, was pres…

Prof. Dwivedi stated that the time has come where we should encourage and respect our langua… other Indian languages are gaining strength and recognition on a global platform. By speaking H… Prime Minister, Narendra Modi, is ruling the hearts of the world.

During the seminar, Prof. Ravindra Kumar Gupta, the college's principal, stated that Indian word… both Bhartiya Bhashayen and Bhartiya Gyan Parampara. If we want to know and understand Ind… understand the Bhartiya Gyan Parampara. According to Prof. Umapati Dixit, Bhartiya Bhashaye… Gyan Parampara are as pure, flowing, intact, and uninterrupted as the Ganges. Language, like th… its own way, assimilating culture and civilization.

On this occasion, Assistant Registrar of Bhartiya Bhasha Samiti, J.P. Singh said that we work for … development of languages. Languages are carriers of culture and their protection is necessary… Prof. Rachna Vimal of Satyavati College's Department of Hindi stated that every countryman … Indian language other than his mother tongue.

The two-day National Seminar featured five sessions that were successfully organized. Prof. H… seminar's coordinator, stated that India has always been superior in the field of knowledge. Th… written in India at a time when most people did not know how to read or write. This is why Ind…

Languages are carriers of culture and their protection is necessary. As a guest speaker, Prof. Rachna Vimal of Satyavati College's Department of Hindi stated that every countryman should learn an Indian language other than his mother tongue."

…दुनिया के सम्मानित होती हैं। भारतीय भाषाओं के विकास के लिए हमें ऐसे कार्य तय करने पड़ेंगे, … उन्नति हो।

ये विचार भारतीय जन संचार संस्थान के महानिदेशक प्रो. (डॉ.) संजय द्विवेदी ने भारतीय … मंत्रालय, भारत सरकार) एवं अरुंधति भारतीय ज्ञान परम्परा केंद्र, पीजीडीएवी कॉलेज (सांध्य) के … 'भारतीय भाषाएं और भारतीय ज्ञान परम्परा' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के … इस अवसर कॉलेज के प्राचार्य प्रो. रवींद्र कुमार गुप्ता, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से प्रो. उमापति … भाषा समिति के सहायक कुलसचिव जेपी सिंह एवं संगोष्ठी के समन्वयक प्रो. हरीश अरोड़ा उपस्थित …

प्रो. द्विवेदी ने कहा कि आज स्वभाषाओं के सम्मान का समय है। हिन्दी और भारतीय भाषाएं … मंच पर स्थापित हो रही हैं। देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हिन्दी बोलकर दुनिया के हृदय पर रा… भारतीय भाषाएं हमारी अपनी मातृभाषाएं हैं।

संगोष्ठी के दौरान कॉलेज के प्राचार्य प्रो. रवींद्र कुमार गुप्ता ने कहा कि भारतीय भाषाएं एवं भारतीय … में भारतीय शब्द समान है। अगर हमें भारत को जानना-समझना है, तो भारतीय ज्ञान परम्परा को ज… सकते। प्रो. उमापति दीक्षित ने कहा कि भारतीय भाषाएं और भारतीय ज्ञान परम्परा गंगा की तरह … अक्षुण्ण और अबाध हैं। भाषा भी गंगा की तरह अपने प्रवाह में संस्कृति, सभ्यता और स्वर्णिम … करके चलती है।

Business News This Week

Languages grow on the basis of its utility and need: Prof. Dwivedi

The keynote address was given by the respected principa
Professor Ravinder Kumar Gupta. He very well drew from
experience of donating the bodies of near and dear ones a
sense of satisfaction and happiness that entails this penu
The respected Principal Sir lost his father few years back
donating his eyes while he donated the whole body of his
following an untimely death. Thereby, keeping in mind th
society, even in the moments of crisis. Henceforth, settin
example, of how me must be greater than what we suffer
and every one present in the audience with his sheer girth
also acknowledged the difficulty of actually going forwar
body donation and how we need to be strong and realize t
us in giving a new life to someone and in this way, we wil
our loved ones alive in one way or another. The chief gue
Malhotra (Ex Mayor and president of Dadhichi Deh Dan S
explicated on how body donation along with being a piou
important for medical science. Therefore, anatomical do
prerequisite for the development of research and medica
Next, DR. Sohinder Kaur (EX. Director. Professor & HOD A
New Delhi) motivated everyone for body donation via an
presentation. The students of the college then performed
stage play on the same topic. The event was organized an
DR.Jyashankar Sharma (Mentor of YUVA), DR.Ankur Tyagi (Co-Mentor of YUVA), DR. Anita Bjaj (Convener of IQAC), PROF.Pramod Sethi, (Convener of Medical Committee), Shri Deepak Goyal (Convener, Dadhichi Deh Dam Samiti, Dakshini Vibhag, Delhi). The event was no doubt a success in all possible sense.

Share this:

Twitter Facebook

mrspa23@gmail.com

Report of the 9th International Yoga Day celebrated on 21st June 2023 at P.G.D.A.V College (Eve.)

Report of the 9th International Yoga Day celebrated on 21st June 2023 at P.G.D.A.V College (Eve.)

New Delhi, Focus News: P.G.D.A.V College (Eve.) Celebrated 9th International Day of Yoga 2023, in the college seminar hall in the morning from 7:00 AM onwards under the aegis of N.S.S, N.C.C and Sankalp in association with Ministry of AYUSH. The event was attended by more than 100 participants who performed as per Ayush Ministry Yoga Protocol under the guidance of the chief guest Ms. Vidushi Gupta. Yog Kendra, Yoga Club Celebrated 9th international Yoga Day in collaboration with IQAC, SAVI and Teacher Welfare Committee on June 21, 2023 from 5:00 PM onwards in the College Seminar Hall. The event was attended by more than 100 participants which included teaching, non-teaching staff as well as students of the college. The Session began with the welcome speech given by Dr. Shruti Vip (Convenor of Yog Kendra (Yoga Club) of P.G.D.A.V College (Eve), in which she thanked Principal Sir, Prof. R.K Gupta for his constant motivation and guidance. She welcomed the Chief Guest and Faculty members on the behalf of entire P.G.D.A.V. College (Eve). Then she introduced Yogacharya Yogesh Ji and invited Dr. Deepak Porwal on stage to honour him with a trophy. Honourable college Principal, Prof R.K. Gupta delivered a special address in which he highlighted the historic significance of June 21st being celebrated world over as International Day of Yoga. He outlined the significance of yoga in nation building and youth empowerment which will lead to the accomplishment of the ideal of 'Vasudaiva Kutumbkam'. He described how yoga has been intrinsic to Indian civilisation and has been part of our cultural heritage since time immemorial. The students of Yog Kendra performed rhythmic yoga and mesmerised the audience. After this the stage was handed over to Shri Yogacharya Yogesh Ji. He enlightened the audience with his vast knowledge on asanas, meditation and mindfulness. He described the importance of regular yogic practice and how through yoga the idea of a peaceful world can become a reality. He taught many standing Yogasanas (Tadasana, Vrikshasana, Padhastasana, Ardh chakrasana etc.), Stretching exercise, Pranayama, Sectional Breathing, Meditation and so on. He also invited his team mates to demonstrate some advance asanas like Seersh Asana, Dhaurasana etc. After this, there was a question answer session in which students asked Shri Yogacharya Yogesh Ji questions related to benefits of yoga, depression and anxiety etc.

In the end vote of thanks was delivered by Dr. Nitish Bagdi, the convenor of Teachers' Welfare Committee. At the end of the Session group photos were taken & refreshment were distributed among the teachers and students who had attended the program.

कलाचर्या

उपयोगिता और आवश्यकता के आधार पर बढ़ती हैं भाषाएं: प्रो. द्विं

'भारतीय भाषाएं और भारतीय ज्ञान परंपरा' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का हुआ आगाज

MINISTERIAL STAFF

(Left to Right)

1st Row: *Sh. Vinod Kumar, Sh. Dinesh Kumar, Sh. Hradayram, Sh. Jagmohan, Sh. Sonu, Mrs. Nirmala, Sh. Dinesh, Sh. Jitu, Sh. Dayaram, Sh. Rajeev, Sh. Rakesh Kapoor, Sh. Sita Ram.*

2nd Row: *(In Chair) Prof. Meena Sharma, Sh. Pawan Kumar Malhani, Prof. (Dr.) R. K. Gupta (Principal), Sh. Narendra Kumar Verma, Sh. Ravi Wadhwa,*

3rd Row: *Sh. Dilwar Singh, Sh. Kunal Kumar, Sh. Vikrant Singh Thakur, Sh. Narender Kumar, Sh. Ram Prakash Singh, Sh. Santosh Kumar, Sh. Ram Singh K.C., Sh. Arun Yadav, Sh. Vijay Pal Yadav, Sh. Pradeep Prajapati, Sh. Ankit Verma, Sh. Ram Saran, Sh. Gulshan Kumar, Sh. Amit Dureja, Sh. Ramesh Chandra Sharma, Sh. Vipin Kumar, Mrs. Anupama, Sh. Rajan Kumar, Sh. Rahul Rana.*

ORIGINAL PHOTOGRAPH OF
MAHARSHI DAYANAND SARASWATI

P.G.D.A.V. College (Evening)
(University of Delhi)
Nehru Nagar, Ring Road, New Delhi-110065
Ph. : 011-29845214, E-mail : principalpgdaveve@gmail.com